इटली की लोक कथाएं–5

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title : Italy Ki Lok Kathayen-5 (Folktales of Italy-5)
Cover Page picture: A Canalway from Venice, Italy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5
इटली की लोक कथाऐं–5 7
1 राजकुमारियाँ जो पहले राहगीर से ब्याही गयीं 9
2 तेरह डाकू 21
3 तीन अनाथ 31
4 सोती हुई सुन्दरी और उसके बच्चे 40
5 तीन चिकोरी इकट्ठा करने वाले 55
6 सात पोशाकों वाली सुन्दरी 66
7 साँप बादशाह 82
8 सोने के अंडे वाला केंकड़ा 99
9 निक मछली 112
10 बदकिस्मत 118
11 पिपीना साँप 135
12 अक्लमन्द कैथरीन 155
13 इस्मेलियन सौदागर 174
14 चोर फाख्ता 184
15 मटर और बीन्स का व्यापारी 193
16 खुजली वाला सुलतान 203

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–5

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब **3000** साल पुरानी। इसका रोम शहर **753** बी सी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी **1871** में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम**,** पिसा**,** फ्लोरैन्स**,** वेनिस आदि। यहाँ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन**,** पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहाँ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यों में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहाँ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है**,** केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि **118** द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा**?** कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहाँ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वाँ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर **7** अप्रैल **753** बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहाँ **5000** लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहाँ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहाँ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – **842** आदमी केवल **4** वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं **1353** में लिखी गयी थीं दूसरी **1550** में और तीसरी **1634** में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में **1956** में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद **1962** में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1975** में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1980** में किया। ये लोक कथाएँ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहाँ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] "Italian Folktales" by Italo Calvino, 1965. This book was translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में दो सौ लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए क्रम से ही यहाँ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–1"[6] में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं।

इसके दूसरे भाग "इटली की लोक कथाऐं–**2**" में **24–55** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं।[7] इटली की लोक कथाओं के तीसरे भाग – "इटली की लोक कथाऐं–**3**" में **56–81** नम्बर तक की ग्यारह लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं।[8] इस संकलन की अगली कड़ी "इटली की लोक कथाऐं–**4**" में हमने **82–130** नम्बर तक की बाईस कथाऐं दी थीं।[9] इसके पाँचवें भाग – "इटली की लोक कथाऐं–**5**" में हम उस पुस्तक की **124–155** नम्बर तक की सोलह कहानियाँ प्रकाशित कर रहे हैं।[10]

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि यह पाँचवा भाग भी तुम लोगों को पहले चार भागों की तरह ही बहुत पसन्द आयेगा और मजेदार लगेगा।

---

[6] "Italy Ki Lok Kathayen-1" – 20 folktales (No 1-21), by Sushma Gupta in Hindi languge
[7] "Italy Ki Lok Kathayen-2" – 20 folktales (No 24-55), by Sushma Gupta in Hindi language
[8] "Italy Ki Lok Kathayen-3" – 11 folktales (No 56-81), by Sushma Gupta in Hindi language
[9] "Italy Ki Lok Kathayen-4" – 22 folktales (No 82-130), by Sushma Gupta in Hindi language
[10] "Italy Ki Lok Kathayen-5" – 15 folktales (No 124-149) by Sushma Gupta in Hindi language

1 राजकुमारियॉ जो पहले राहगीर से ब्याही गयीं[11]

एक बार एक राजा था जिसके चार बच्चे थे – तीन लड़कियॉ और एक लड़का। यह लड़का उसका वारिस और होने वाला राजा था।

एक बार राजा बहुत बीमार पड़ा तो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "बेटा मैं अब बचूँगा नहीं इसलिये तुम वैसा ही करो जैसा मैं कहता हूँ।

जब तुम्हारी बहिनें शादी लायक हो जायें तो उनको महल के छज्जे पर खड़ा कर देना और नीचे सड़क पर जो भी पहला आदमी आये, चाहे वह गॅवार किसान हो या कोई विद्वान और या फिर कोई कुलीन आदमी उसी से उनकी शादी कर देना।"

इतना कह कर राजा मर गया। जब राजकुमार की सबसे बड़ी बहिन शादी के लायक हुई तो राजकुमार ने उससे छज्जे पर खड़े होने के लिये कहा। वह छज्जे पर जा कर खड़ी हो गयी।

वहॉ से सबसे पहला गुजरने वाला आदमी एक नंगे पॉव वाला आदमी था। उसको देख कर राजकुमार ने उससे कहा — "दोस्त, ज़रा रुको।"

[11] The Princesses Wed to the First Passer-By. Tale No 133. A folktale from Italy from its Basilicata area.

आदमी ने पूछा — "क्या बात है सरकार? मुझे देर हो रही है। मेरे सूअर भूखे हैं मुझे उनको घास के मैदान में खाना खिलाने के लिये ले कर जाना है।"

राजकुमार बोला — "आप ज़रा यहाँ बैठें, मुझे आपसे अकेले में कुछ बात करनी है। मैं अपनी सबसे बड़ी बहिन की शादी आपसे करना चाहता हूँ।"

यह सुन कर तो वह आदमी आश्चर्य में पड़ गया। उसको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह बोला — "सरकार आप मजाक कर रहे हैं। मैं तो एक बहुत ही गरीब सूअर चराने वाला आदमी हूँ। मैं एक राजकुमारी से शादी कैसे कर सकता हूँ।"

राजकुमार बोला — "पर मेरी बहिन से यह शादी आप मेरे पिता की इच्छा के अनुसार ही कर रहे हैं इसलिये चिन्ता की कोई बात नहीं है बस आप हाँ कर दें।"

इस तरह उस राजकुमारी और उस सूअर चराने वाले की शादी हो गयी और उसकी सबसे बड़ी बहिन महल छोड़ कर उस सूअर चराने वाले के साथ चली गयी।

अब दूसरी बहिन की शादी की बारी आयी तो राजकुमार ने उससे भी बाहर छज्जे पर खड़ा होने के लिये कहा और फिर जो भी पहला आदमी सड़क पर दिखायी दिया उसको बुलाया गया।

वह आदमी बोला — "मेहरबानी कर के मुझे देर मत कीजिये मैं ज़रा जल्दी में हूँ। मैंने चिड़ियें पकड़ने के लिये जाल बिछाया हुआ

है। मुझे जा कर देखना है कि मेरे उस जाल में कोई चिड़िया फँसी या नहीं।"

राजकुमार बोला — "उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। थोड़ी देर के लिये आप अन्दर आइये मुझे आपसे कुछ बात करनी है।"

अन्दर ले जा कर उसने अपनी बीच वाली बहिन का हाथ उसको सौंपा तो वह बोला — "सरकार यह कैसे हो सकता है? मैं तो एक गरीब चिड़िया पकड़ने वाला हूँ। मैं एक शाही खानदान की बेटी से शादी कैसे कर सकता हूँ?"

राजकुमार बोला — "मेरे पिता की यही आखिरी इच्छा थी कि मैं सड़क पर जाने वाले पहले आदमी से अपनी बहिन की शादी कर दूँ। अब आप ही मुझे ऐसे पहले आदमी मिले हैं सो मैं अपनी बहिन आपको सौंपना चाहता हूँ। अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो।"

चिड़िया पकड़ने वाले को भला क्या ऐतराज हो सकता था सो उसने अपनी दूसरी बहिन की शादी उस चिड़िया पकड़ने वाले से कर दी। वे लोग भी महल से चले गये।

जब उसकी तीसरी और सबसे छोटी बहिन बाहर छज्जे पर गयी तो सबसे पहला आदमी जो सड़क पर गुजरा वह एक कब्र खोदने वाला था।

हालाँकि यह देख कर राजकुमार को बहुत दुख हुआ कि वह अपनी सबसे प्यारी बहिन की शादी एक कब्र खोदने वाले से कर रहा था पर फिर भी अपने पिता की इच्छा के अनुसार उसने उसकी

शादी उस कब्र खोदने वाले से ही कर दी और वह भी महल छोड़ कर अपने पति के साथ चली गयी।

जब उसकी सारी बहिनें ससुराल चली गयीं तो वह महल में अकेला रह गया। एक दिन उसने सोचा क्या हो अगर मैं भी अपनी बहिनों की तरह से ही किसी ऐसी स्त्री से शादी कर लूं जो मुझे सड़क पर सबसे पहले दिखायी दे जाये। देखता हूं कि मेरी किस्मत में कौन आती है।

सो समय आने पर वह खुद भी महल के छज्जे पर जा कर खड़ा हो गया। सबसे पहला आदमी जो उधर से गुजरा वह थी एक बूढ़ी धोबिन। उसने उस बूढ़ी धोबिन को बुलाया – "ओ दोस्त, ज़रा रुको।"

"अरे मैं तुम्हारी दोस्त कैसे हो गयी राजकुमार? फिर भी बोलो तुमको मुझसे क्या चाहिये?"

"मेहरबानी कर के आप ज़रा अन्दर आइये। मुझे आपसे कुछ बात करनी है। यह बहुत जल्दी का काम है।"

"इतनी जल्दी का भी क्या काम है? मुझे नदी पर जा कर कपड़े धोने है।"

तब राजकुमार ज़रा सख्ती से बोला – "मैं तुमको हुक्म देता हूॅ कि तुम अन्दर आओ।"

उस बुढ़िया ने लड़ने की सी निगाह उसके ऊपर डाल कर कहा — "देखो तो ज़रा इस लड़के को। इस बुढ़िया से लड़ कर तो देखो ज़रा तब मैं तुम्हें बताती हूँ।"

कहते हुए उसने राजकुमार को गाली दी और उसके पास चली गयी। राजकुमार ने उससे कहा कि वह उससे शादी करना चाहता है।

वह बोली — "तुम पागल हो गये हो क्या? अरे अगर तुम्हें शादी ही करनी है तो जाओ और जा कर फूल वाली[12] से शादी करो तब देखूँ मैं तुमको।" और यह कह कर वह वहाँ से चली गयी।

राजकुमार ने तो ऐसी भाषा पहले कभी सुनी नहीं थी सो उसकी गाली सुन कर तो राजकुमार के पैर काँप गये। गिरने से बचने के लिये उसने छज्जे की रेलिंग पकड़ ली।

लेकिन उस लड़की का नाम सुन कर उसकी उस लड़की से शादी करने की इच्छा हो आयी। वह नाम उसके दिमाग में घुस गया था।

उसने सोचा इसके लिये तो अगर मुझे घर छोड़ कर दुनियाँ भी घूमनी पड़ी तो मैं घूमूँगा जब तक कि मैं उस "फूल वाली" का पता न लगा लूँ।

ऐसा सोच कर वह दुनियाँ घूमने निकल पड़ा। उसने आधी दुनियाँ घूम ली पर किसी को उस फूल वाली का पता ही नहीं था। उसको घूमते घूमते अब तक तीन साल हो चुके थे।

---

[12] Translated for the word "Florer"

कि एक दिन वह एक मैदान में आ निकला। वहाँ उसको पहले सूअर का एक झुंड मिला, फिर दूसरा और फिर तीसरा झुंड मिला।

वह उन झुंडों में घुस गया और अपना आगे का रास्ता खोजने लगा। जल्दी ही वह एक महल के सामने आ पहुँचा। उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया और बोला — "क्या कोई घर पर है? मुझे रात को सोने के लिये जगह चाहिये।"

एक स्त्री ने महल का दरवाजा खोला और राजकुमार को देखते ही अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं। "भैया।" राजकुमार ने भी उसको पहचान लिया वह उसकी सबसे बड़ी बहिन थी जिसको उसने एक सूअर पालने वाले से ब्याहा था।

तभी वह सूअर पालने वाला भी वहाँ आ गया। राजकुमार तो उसको देख कर पहचान भी न सका। वह तो एक लौर्ड की तरह से दिखायी दे रहा था।

उन दोनों ने राजकुमार को अपना महल दिखाया और बताया कि उसकी दूसरी दोनों बहिनें भी इतनी ही अमीर थीं और उनके घर भी ऐसे ही थे।

फिर राजकुमार ने अपनी बहिन से पूछा — "मैं फूल वाली को ढूँढने निकला हूँ। क्या तुम जानती हो कि यह फूल वाली कौन है और कहाँ रहती हैं?"

उसकी बहिन बोली — “हम तो उस फूल वाली को नहीं जानते पर तुम दूसरी बहिनों के पास चले जाओ हो सकता है कि वे जानती हों।”

उसका जीजा बोला — “और अगर तुम किसी खतरे में पड़ जाओ तो लो सूअर के ये तीन बाल ले जाओ। इनमें से एक बाल जमीन पर फेंक देना तुम तुरन्त ही उस खतरे से बाहर निकल आओगे।”

राजकुमार ने वे बाल लिये और अपने सफर पर आगे चल दिया। काफी दूर चलने के बाद वह एक जंगल में आ पहुँचा। हर पेड़ की हर शाख पर चिड़ियों ने बसेरा कर रखा था।

बहुत सारी चिड़ियें आसमान में भी उड़ रहीं थीं। वे सब इतनी ज़्यादा थीं कि आसमान भी दिखायी नहीं दे रहा था। वे सब एक साथ और इतनी ज़ोर ज़ोर से बोल रही थीं जिससे कान फटे जा रहे थे।

और इन सबके बीच में था उसकी बीच वाली बहिन का महल। उसकी यह बहिन उसकी बड़ी वाली बहिन से भी ज़्यादा अमीर थी। पहले उसका पति एक गरीब चिड़िया पकड़ने वाला था और अब तो वह भी कोई लौर्ड जैसा लग रहा था।

वह अपनी उस बहिन से मिला पर उनमें से भी किसी को उस फूल वाली का पता नहीं था। उन्होंने फिर उसको अपनी तीसरी बहिन के पास भेज दिया।

जाने से पहले राजकुमार के इस जीजा ने इसको चिड़िया के तीन पंख दिये और कहा कि अगर वह किसी खतरे में पड़ जाये तो बस वह उनमें से एक पंख नीचे गिरा दे और वह उस खतरे से तुरन्त बाहर आ जायेगा।

राजकुमार ने वे तीनों पंख उससे ले लिये और फिर अपने सफर पर आगे चल दिया।

चलते चलते वह अब एक ऐसी जगह आ पहुँचा था जहाँ उसको अपने दोनों तरफ कब्रें ही कब्रें दिखायीं दे रही थीं। आगे चल कर वे तो कब्रें इतनी ज़्यादा हो गयीं कि उसको अपने चारों तरफ कब्रें ही कब्रें दिखायी देने लगीं।

और उन कब्रों के बीच में उसको दिखायी दिया एक बड़ा सा महल। इस तरह वह अब अपनी तीसरी बहिन के महल पहुँच गया था जिसको वह सबसे ज़्यादा प्यार करता था।

तुमको याद होगा कि इसकी उस बहिन का पति एक कब्र खोदने वाला था। राजकुमार के इस जीजा ने राजकुमार को एक लाश की एक हड्डी दी और कहा कि अगर वह किसी खतरे में पड़ जाये तो उस हड्डी को नीचे गिरा दे। बस वह उस खतरे से बाहर आ जायेगा।

उधर उसकी बहिन ने कहा कि वह उस शहर को जानती थी जहाँ वह फूल वाली रहती थी। उसने अपने भाई को एक बुढ़िया का पता दिया जिसकी उसने कभी कुछ सहायता की थी। उसने

कहा कि वह उस बुढ़िया के पास चला जाये वह उसकी सहायता जरूर करेगी।

राजकुमार वहाँ से चल कर फूल वाली के शहर आया। यह फूल वाली एक राजा की बेटी थी। राजा के महल के ठीक सामने उस बुढ़िया का घर था। जब राजकुमार वहाँ पहुँचा तो उस बुढ़िया ने भी उसका बड़े प्रेम से स्वागत किया।

सुबह सुबह उस बुढ़िया के घर की खिड़की से वह फूल वाली को देख सका परन्तु उसका चेहरा परदे के पीछे छिपा हुआ था।

उस बुढ़िया ने राजकुमार को चेतावनी दी कि उसको राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिये क्योंकि उसका पिता बहुत ही बेरहम किस्म का है।

वह अपनी बेटी के लिये हाथ माँगने वालों से बहुत नामुमकिन काम करने को कहता है। और जब वे वे काम नहीं कर पाते तो उनका सिर धड़ से अलग करवा देता है।

पर राजकुमार बहुत ही बहादुर नौजवान था सो उसने उस बुढ़िया से कहा कि इस बात की वह बिल्कुल भी चिन्ता न करे। वह निडर हो कर राजा के पास गया और उसकी बेटी से शादी करने की इच्छा प्रगट की।

राजा ने कहा ठीक है वह उसकी बेटी से शादी कर सकता है पर उसको उसकी बेटी से शादी करने से पहले उसकी तीन शर्तें पूरी करने पड़ेंगी।

राजकुमार तो इस सबके लिये तैयार हो कर ही आया था सो वह उसकी सब शर्तें पूरी करने के लिये तैयार हो गया।

राजा ने उसको एक बहुत बड़े से सामान रखने वाले कमरे में बन्द करवा दिया। उस कमरे में सेब और नाशपाती से भरे बहुत सारे डिब्बे रखे हुए थे।

उससे कहा गया कि अगर उसने वे सब सेब और नाशपाती एक दिन में खा कर खत्म नहीं कीं तो उसका सिर उसके धड़ से काट दिया जायेगा।

अब वह इतने सारे सेब और नाशपाती खुद तो नहीं खा सकता था। इस परेशानी के मौके पर उसको अपने सबसे बड़े जीजा के दिये हुए सूअर के बालों की याद आयी सो उसमें से उसने एक बाल जमीन पर फेंक दिया।

तुरन्त ही बहुत सारे सूअरों की आवाज से वह कमरा गूँज गया। चारों तरफ से बहुत सारे सूअर वहाँ आ गये और उन्होंने उन डिब्बों में भरे हुए वे सारे सेब और नाशपाती खा डाले। उनका एक छोटा सा टुकड़ा भी उन्होंने नहीं छोड़ा।

अगले दिन जब राजा ने उसका कमरा दिखवाया तो उसको यह जान कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसके वे सारे सेब और नाशपाती वाकई खत्म हो चुके थे।

वह बोला — "बिल्कुल ठीक। अब तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो। पर अभी एक दूसरा इम्तिहान भी है। जब तुम उसके

साथ पहली रात गुजारोगे तो तुम उसको सबसे सुन्दर और मीठा गाने वाली चिड़ियों के मीठे गाने से सुला दोगे नहीं तो अगले दिन तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

इसके बाद उसकी शादी फूल वाली से हो जायेगी।

सो अगली रात दुलहे ने अपने चिड़िया पकड़ने वाले जीजा के दिये हुए पंखों में से एक पंख जमीन पर गिरा दिया। उसी समय वहाँ आसमान में बहुत सारे रंगों के पंखों चिड़ियें आ गयीं।

उन्होंने इतने मीठे सुर में गाना शुरू कर दिया कि राजकुमारी अपने होठों पर मुस्कुराहट लिये तुरन्त ही सो गयी।

राजा बोला — "वाह यह तो बड़ा अच्छा रहा। तुमने तो मेरी बेटी जीत ली। पर क्योंकि अब तो तुम पति पत्नी हो इसलिये कल सुबह तक तुमको एक बच्चा होना चाहिये जो पापा और मम्मा कह सके। नहीं तो मैं तुम दोनों का सिर काट दूँगा।"

दुलहे ने कहा — "अभी तो कल सवेरे तक में बहुत समय है। आप थोड़ा इन्तजार करें।" और वह अपनी फूल वाली पत्नी के साथ वहाँ से चला गया।

सबह सवेरे उसको अपने सबसे छोटे जीजा की दी हुई हड्डी याद आयी। उसने उसको जमीन पर फेंक दी। तो लो देखो तो, वह हड्डी तो एक बहुत ही सुन्दर छोटे लड़के में बदल गयी। उस लड़के के हाथ में एक सुनहरा सेब था और वह पापा और मम्मा पुकार रहा था।

राजकुमार का ससुर वहाँ आया तो वह बच्चा उसके पास गया और अपना वह सुनहरी सेब उसके मुकुट के ऊपर रखने की जिद करने लगा।

राजा ने प्यार से उस बच्चे को चूमा, अपनी बेटी और दामाद[13] को आशीर्वाद दिया और अपना मुकुट उतार कर अपने दामाद के सिर पर रख दिया।

अब वह राजकुमार दो राज्यों का राजा था। उसकी तीनों बहिनें और उनके पति भी आ गये थे। उन सबने मिल कर कई दिनों तक राजकुमार की शादी की बहुत खुशियाँ मनायीं।

[13] Son-in-law – daughter's husband

2 तेरह डाकू[14]

एक बार की बात है कि इटली के किसी शहर में दो भाई रहते थे – एक अमीर चमार था और दूसरा गरीब किसान।

एक बार वह किसान अपने खेत से वापस लौट रहा था कि उसने तेरह आदमी एक ओक के पेड़ के नीचे देखे। हर एक के पास बहुत ही भयानक चाकू थे जो किसी को भी डराने के लिये काफी थे।

वे चाकू देख कर किसान ने सोचा कि लगता है ये तो डाकू हैं तो वह वहीं छिप गया। वह डर गया था कि वे डाकू कहीं उसे मार न दें।

उसने देखा कि वे सब उस ओक के पेड़ के पास गये। फिर उसने उनके सरदार को कहते सुना "खुल जा ओक"। सुन कर उस ओक के पेड़ ने एक जॅभाई ली और वहॉ एक दरवाजा खुल गया। एक एक कर के सारे डाकू उस दरवाजे के अन्दर चले गये।

वह किसान अपनी छिपने की जगह से सब देखता रहा। कुछ देर बाद वे डाकू एक एक कर के वहॉ से बाहर निकल आये। उनका सरदार सबसे बाद में बाहर आया।

---

[14] The Thirteen Bandits. Tale No 137. A folktale from Italy from its Basicalata area.
[This folktale is like "Ali Baba and Forty Thieves" of Arabian Nights. You may read some more stories like this in my book "Ali Baba Jaisi Kahaniyan". Get this as an e-book from the e-mail address.]

बाहर आ कर उसने अपने सब साथियों को गिना और फिर बोला “बन्द हो जा ओक” और ओक के पेड़ में जो दरवाजा खुला था वह बन्द हो गया। और वे सब डाकू वहाँ से चले गये।

जब वे डाकू चले गये तो किसान ने खुद उस दरवाजे के अन्दर जाने का फैसला किया। वह पेड़ तक गया और बोला “खुल जा ओक” तो उस पेड़ ने पहले की तरह से जँभाई ली और फिर वहाँ एक दरवाजा खुल गया और वह उसके अन्दर चला गया।

अन्दर जा कर उसको सीढ़ियाँ दिखायी दीं तो वह उन सीढ़ियों से नीचे चला गया। नीचे उतरने पर वह एक गुफा में पहुँच गया। वहाँ जा कर तो उसने जो कुछ देखा उससे तो उसका मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

वहाँ खजाने के तेरह ढेर लगे पड़े थे और वे सभी नीचे फर्श से ले कर ऊपर छत तक जा रहे थे। वहाँ कई ढेर सोने के थे, कई ढेर हीरों के थे और कई ढेर नैपोलियन्स[15] के थे।

किसान तो बहुत देर तक उनको घूरता ही रह गया। उसने तो इतना खजाना पहले कभी देखा ही नहीं था सो उसको तो वह सब देखने में ही बहुत अच्छा लग रहा था।

जब वह उनको अच्छी तरह देख चुका तो सबसे पहले उसने उनसे अपनी पोशाक की जेबें भरनी शुरू कीं। फिर उसने अपनी

[15] A former gold coin of France equal to 20 Francs and bearing a portrait of Napoleon I or Napoleon III.

पैन्ट की जेबें भरीं। उसके बाद उसने अपनी पैन्ट ऊपर तक खींच ली और उससे बनी खाली जगह में सोने के टुकड़े भर लिये और फिर उनको ले कर नाचता हुआ घर चला गया।

वह जब इस हालत में घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा — “अरे यह क्या हुआ है तुमको?”

यह सुन कर उसने अपनी सारी जेबें खाली कर दीं और उसने उसको डाकू और उनकी गुफा के बारे में सब कुछ बता दिया।

उसने सोचा था कि वहाँ से लाया पैसा वह उस बोतल से गिन लेगा जिससे शराब नापी जाती है। पर उस समय उसके पास ऐसी कोई चीज़ ही नहीं थी जिससे वह उस पैसे को गिन सकता सो उसने अपनी पत्नी को अपने भाई के घर भेजा कि वह वहाँ से उस पैसे को मापने के लिये कोई चीज़ ले आये।

चमार के भाई को मालूम था कि उसका भाई तो बहुत ही गरीब था तो यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे भाई के पास ऐसा क्या आ गया जिसको वह मापना चाहता है।

और उसने मापने वाला मँगवाया है तो क्यों मँगवाया है क्योंकि उसके घर में तो कुछ ऐसा तो था ही नहीं जिसको उसे मापने की जरूरत पड़े। मैं देखता हूँ।

सो उसने क्या किया कि एक बोतल की तली में एक मछली की एक हड्डी चिपका दी ताकि वह जो चीज़ भी उससे मापे उसमें से

उसका कुछ हिस्सा उससे चिपक जाये और वह यह जान जाये कि उसने उससे क्या मापा था और वह बोतल उसको दे दी।

किसान भाई ने अपना पैसा मापा और वह बोतल अपने चमार भाई को वापस भिजवा दी। किसान भाई ने देखा ही नहीं कि बोतल की तली में उसके भाई ने कुछ चिपकने वाला लगा दिया था जिसमें उसका एक नैपोलियन का सिक्का चिपक गया था। उसने सीधे स्वभाव अपना सामान माप कर बोतल अपने चमार भाई को वापस करवा दी थी।

जैसे ही किसान भाई ने अपने चमार भाई को उसकी बोतल वापस की तो उसके चमार भाई ने तुरन्त ही यह देखने के लिये उस बोतल की तली को देखा कि उसके गरीब किसान भाई ने उसकी बोतल से क्या मापा था और उसकी बोतल की तली की मछली की हड्डी में कुछ चिपका था या नहीं।

उसने देखा कि वहाँ तो एक नैपोलियन सिक्का चिपका हुआ था। यह देख कर तो उसका चेहरा चमक उठा। अच्छा तो यह बात है। वह उसी समय अपने भाई के पास भागा गया और उससे कहा — "मुझे बताओ यह पैसा तुम्हें किसने दिया?"

किसान भाई सीधा था उसने उसे सब कुछ बता दिया।

चमार भाई बोला — "भाई तुम मुझे भी उस जगह ले चलो न। मेरे बच्चे हैं पालने पोसने के लिये इसलिये मुझे पैसे की तुमसे कहीं ज़्यादा जरूरत है।"

किसान भाई राजी हो गया और अपने चमार भाई को दो गधे और चार थैलों के साथ ले कर उसी ओक के पेड़ के पास ले चला। वहाँ जा कर वह बोला "खुल जा ओक" और ओक के पेड़ में पहले की तरह एक दरवाजा खुल गया।

दोनों भाई नीचे उतरे दोनों ने अपने अपने थैले भरे और घर वापस आ गये। घर आ कर उन दोनों ने वह सामान बाँट लिया – सोना, हीरे, नैपोलियन्स, सभी कुछ। अब उनके पास बहुत पैसा था सो वे दोनों आराम से रहने लगे।

एक दिन उन्होंने आपस में बात की तो किसान भाई बोला — "अब तो हम लोग आराम से रह रहे हैं और अगर हमें मरना नहीं है तो हमको अब वहाँ जाने की कोई जरूरत भी नहीं है। हमारे पास काफी पैसा है।"

हालाँकि उस समय तो चमार भाई इस बात पर राजी हो गया कि वह पैसा उनके लिये काफी था फिर भी वह अपने आपको दोबारा वहाँ जाने से रोक नहीं सका सो एक दिन वह अपने भाई को बिना बताये अकेला ही वहाँ चला गया।

असल में वह इस किस्म का आदमी था कि उसके लिये कभी कोई चीज़ काफी नहीं थी।

इत्तफाक से जब वह वहाँ पहुँचा तो वे डाकू उस पेड़ के अन्दर ही थे। वह उनके वहाँ से निकलने का इन्तजार करता रहा।

आखिर वे बाहर निकले। उसने उनको गिना तो सही मगर वह उनको गिनते गिनते उनकी गिनती भूल गया।

जब वे सब वहाँ से बाहर निकल गये तो वह उस ओक के पेड़ के अन्दर गया। अब उसको अपनी गिनती भूलने की गलती का नतीजा भुगतना पड़ा। उस पेड़ में से तेरह की बजाय बारह डाकू ही बाहर निकले थे। इसका मतलब था कि एक डाकू अभी भी उस गुफा के अन्दर ही था।

असल में हुआ क्या था कि उस दिन जब वे डाकू वहाँ आये तो उन्होंने देखा कि उनका कुछ सामान वहाँ से गायब है।

उनको कुछ शक हुआ कि लगता है कि किसी को उनके खजाने का पता मालूम हो गया है सो वे रोज एक डाकू को वहाँ छोड़ दिया करते थे ताकि वह उस गुफा की रखवाली करता रहे और अगर कोई वहाँ आये तो उसको पकड़ भी ले।

उस दिन भी उन्होंने ऐसा ही किया था सो जैसे ही यह चमार भाई गुफा में घुसा वह एक डाकू उसके ऊपर कूद पड़ा और उसने उसको काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। फिर उसने उनको बाहर ले जा कर पेड़ की दो शाखाओं पर टाँग दिया।

जब वह चमार भाई बहुत देर तक घर नहीं लौटा तो उसकी पत्नी किसान भाई के पास गयी और बोली — "भैया, मुझे ऐसा लगता है कि उनके साथ कुछ बुरा हो गया है। आपके भाई उस ओक के पेड़ पर गये थे और अभी तक वापस नहीं लौटे हैं।"

किसान भाई बोला — "भाभी, आप चिन्ता न करें मैं अभी जा कर देखता हूँ।" उसने रात होने का इन्तजार किया और रात होते ही ओक के पेड़ की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर उसने देखा कि ओक के पेड़ की शाखाओं से उसके भाई के शरीर के चार टुकड़े लटक रहे हैं। वह समझ गया कि उसके भाई के साथ क्या हुआ होगा।

उसने उन चारों टुकड़ों को खोला, अपने गधे पर लादा और उनको घर ले आया। चमार की पत्नी और बच्चे तो उसको इस हालत में देख कर रोने चीखने लगे।

किसान भाई अपने चमार भाई की लाश को चार हिस्सों में दफ़नाना नहीं चाहता था सो उसने अपने जानने वाले एक और चमार को बुलवाया और उसकी लाश को उससे सिलवा कर दफ़ना दिया।

अब उस चमार भाई की पत्नी के पास जो कुछ भी बचा था उस पैसे से उसने एक सराय खरीद ली और उसको चलाने लगी।

उधर डाकुओं ने देखा कि वह लाश जो उन्होंने ओक के पेड़ की शाखाओं से टाँगी थी वह गायब हो गयी है तो उन्हें कुछ शक हुआ।

उनको लगा कि अभी कोई और भी था जो उनकी गुफा का पता जानता था। सो अबकी बार वे उस दूसरे आदमी को ढूँढने निकले। उन तेरह डाकुओं में से एक डाकू शहर में गया और पता

किया कि उस शहर में कहीं चार हिस्से की हुई कोई लाश तो नहीं दफ़नायी गयी।

सबके मना करने पर कि वहाँ ऐसी कोई लाश नहीं दफ़नायी गयी उन्होंने सोचा कि फिर जरूर ही किसी ने उसको सिल कर दफ़नाया होगा।

सो वह आदमी फिर सारे चमारों के पास गया और उनको एक फटा जूता दिखा कर उनसे पूछा — "क्या तुम यह जूता सिल दोगे?"

उनमें से एक चमार बोला — "क्या तुम मजाक कर रहे हो? मैंने तो एक चमार के पूरे शरीर को सिला है तो यह जूता मेरे लिये क्या चीज़ है।"

डाकू ने पूछा — "वह चमार कौन था?"

वह चमार बोला — "वह हमारा एक साथी चमार था। उसके शरीर के किसी ने चार हिस्से कर दिये थे मैंने उसी को सिला था। उसकी पत्नी अब एक सराय चलाती है।"

इस तरह से डाकुओं को पता चल गया कि वह सराय चलाने वाली ही उनके खजाने की मालकिन थी।

डाकुओं ने एक बहुत बड़ा बर्तन लिया और ग्यारह डाकू उस बर्तन के अन्दर छिप गये। वह बर्तन उन्होंने एक गाड़ी पर लादा और बाकी दो डाकू उस गाड़ी को खींच कर ले गये। वे उसी सराय में पहुँचे जिसकी मालकिन उस चमार भाई की पत्नी थी।

वहाँ जा कर उन्होंने उस सराय की मालकिन से पूछा — "क्या तुम हमारा यह बर्तन कुछ देर के लिये रख लोगी और हमको खाना भी खिला दोगी?"

सराय की मालकिन बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप आराम से बैठें।" कह कर उसने दोनों गाड़ी खींचने वालों के सामने मैकेरोनी[16] की दो प्लेटें रख दीं।

उस चमार की बेटी वहीं पास में खेल रही थी। उसने खेलते खेलते उस बर्तन में से कुछ आवाज सुनी तो वह उसके और पास पहुँच गयी और ध्यान दे कर सुनने लगी। उसने सुना एक आदमी कह रहा था "अब हम इस स्त्री को देख लेंगे।"

वह लड़की भाग कर अपनी माँ के पास गयी और उसको जा कर बताया कि उस बक्से में कुछ आदमी हैं जो इस तरह की बात कर रहे हैं।

उस स्त्री ने तुरन्त ही चूल्हे पर से उबलते पानी की केटली उतारी और उसके पानी को उस बर्तन में पलट दिया। इतने गर्म पानी के पड़ने से वे सब डाकू जल कर मर गये।

[16] Macaroni is very popular and main Italian food. It comes in several shapes. Here it is in elbow shape. See its picture above.

फिर वह बाहर गयी और उन दोनों को और मैकेरोनी दी। फिर उसने शराब में दवा मिलायी जिसको पी कर वे दोनों सो गये। जब वे सो गये तो उसने उन दोनों के सिर काट लिये।

फिर वह अपनी बेटी से बोली — "जाओ, अब तुम जज के पास जाओ और उसको यहाँ ले आओ।" यह सुन कर वह लड़की जज के पास गयी और जज को बुला लायी।

जज वहाँ आया तो उसने उन डाकुओं को पहचान लिया और उस स्त्री को उन डाकुओं को मारने के लिये बहुत बड़ा इनाम दिया।

3 तीन अनाथ[17]

एक बार एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे। एक बार वह आदमी बहुत बीमार पड़ा और उसी बीमारी में चल बसा। उसके तीनों बेटे लावारिस हो गये।

एक दिन सबसे बड़े भाई ने अपने दोनों छोटे भाइयों से कहा — "भाइयो मैं घर छोड़ कर अपनी किस्मत आजमाने बाहर जा रहा हूँ तुम लोग ठीक से रहना।" और यह कह कर वह घर छोड़ कर चला गया।

चलते चलते वह एक शहर में आया और उस शहर की सड़कों पर चिल्लाने लगा — "जो भी मुझे अपनी सहायता के लिये रख लेगा मैं उसको अपना मालिक बना लूँगा।"

उसकी यह आवाज सुन कर एक भला आदमी अपने मकान के छज्जे पर आया और उससे बोला — "अगर हम और तुम आपस में राजी हो जायें तो मैं तुमको अपनी सहायता के लिये रख सकता हूँ।"

वह लड़का बोला — "ठीक है जो चाहे दे देना।"

"पर तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।"

"मैं आपकी हर बात मानूँगा।"

और उस भले आदमी ने उसको अपने पास रख लिया।

[17] Three Orphans. Tale No 138. A folktale from Italy from its Calabria area.

अगले दिन उस आदमी ने उस लड़के को बुलाया और कहा — "यह चिट्ठी लो और यह घोड़ा लो। इस पर सवार हो कर इस घोड़े की रास[18] को बिना छुए चले जाओ। क्योंकि अगर तुमने इस घोड़े की रास छुई तो यह घोड़ा पलट जायेगा और वापस मेरे पास आ जायेगा।

तुमको तो बस उसे कुदाना है। यह घोड़ा जानता है कि इसको कहाँ जाना है और उस जगह का रास्ता भी जानता है। वहाँ जा कर यह चिट्ठी दे आना और वापस आ जाना।"

लड़का अपने मालिक के कहे अनुसार उस घोड़े पर चढ़ गया और चल दिया। घोड़ा कुलाँचें मारता हुआ चल दिया। चलते चलते वह एक गहरी घाटी में आ पहुँचा।

वह गहरी घाटी देख कर लड़के ने सोचा "अब मैं क्या करूँ। यह तो बहुत गहरी घाटी आ गयी। मैं यहाँ यकीनन घोड़े से उतर जाऊँगा वरना यह घोड़ा यह गहरी घाटी कैसे पार करेगा।"

यह सोच कर उसने उस घोड़े को रोकने के लिये उसकी रास खींच दी। बस फिर क्या था। जैसे ही उसने उस घोड़े की रास खींची उस आदमी के कहे अनुसार वह घोड़ा पलटा और बिजली की सी तेज़ी के साथ उस आदमी के घर लौट आया।

---

[18] Translated for the word "Reins"

लड़के को वापस आया देख कर वह आदमी बोला — "सो तुम वहाँ नहीं गये जहाँ मैंने तुमको भेजा था। लगता है कि मेरे मना करने के बावजूद तुमने घोड़े की रास खींच दी। तुम जा सकते हो। वह पैसों का ढेर पड़ा है उसमें से चाहे जितना पैसा ले लो और चले जाओ।"

उस लड़के ने उसमें से जितने पैसे वह उठा सकता था उतने पैसे उठाये और उनसे अपनी जेबें भर लीं और वहाँ से चल दिया। जैसे ही वह उस घर से बाहर निकला वह सीधा नरक में गिर पड़ा।

अब जो दो भाई घर में रह गये थे उनकी कहानी सुनो।

बड़े भाई के जाने के बाद उन दो छोटे भाइयों ने कुछ दिन तो अपने बड़े भाई का इन्तजार किया पर फिर जब वह नहीं आया तो दूसरे नम्बर के भाई ने भी घर छोड़ने और अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया।

वह भी उसी सड़क पर चल पड़ा जिस पर उसका बड़ा भाई गया था। वह भी उसी शहर में आ गया जिसमें उसका बड़ा भाई आया था। उसने भी उस शहर की सड़कों पर चिल्लाना शुरू कर दिया — "जो भी मुझे अपनी सहायता के लिये रख लेगा मैं उसको अपना मालिक बना लूँगा।"

उसकी यह आवाज सुन कर वही भला आदमी फिर अपने मकान के छज्जे पर आया और उससे बोला — "अगर हम और तुम

आपस में राजी हो जायें तो मैं तुमको अपनी सहायता के लिये रख सकता हूँ।”

वह लड़का बोला — “ठीक है जो चाहे दे देना।”

“पर तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।”

“मैं आपकी हर बात मानूँगा।”

और उस भले आदमी ने उसको अपने पास रख लिया।

अगले दिन उस आदमी ने उस लड़के को बुलाया और उसको भी वही कहा जो उसके बड़े भाई से कहा था।

“यह चिट्ठी लो और यह घोड़ा लो। इस पर सवार हो कर इस घोड़ी की रास को बिना छुए चले जाओ। क्योंकि अगर तुमने इस घोड़े की रास छुई तो यह घोड़ा पलट जायेगा और फिर मेरे पास ही वापस आ जायेगा।

तुमको तो बस उसे कुदाना है। यह घोड़ा जानता है कि इसको कहाँ जाना है और उस जगह का रास्ता भी जानता है। वहाँ जा कर यह चिट्ठी दे आना और वापस आ जाना।”

पर इस लड़के ने भी उसी गहरी घाटी के पास पहुँच कर उस घाटी की गहरायी से डर कर घोड़े की रास खींच ली जिस घाटी से डर कर बड़े भाई ने उस घोड़े की रास खींची थी और घोड़ा पलट कर वापस घर आ गया।

लड़के को वापस आया देख कर वह आदमी बोला — “सो तुम वहाँ नहीं गये जहाँ मैंने तुमको भेजा था। लगता है कि मेरे मना

करने के बावजूद तुमने इस घोड़े की रास खींच दी। तुम अब जा सकते हो। वह पैसों का ढेर पड़ा है उसमें से जितना चाहे उतना पैसा ले लो और चले जाओ।"

उस बीच वाले भाई ने भी उन पैसों में से कुछ पैसा उठाया और अपनी जेबें भर लीं और वहाँ से चल दिया। वह भी जैसे ही उस घर से बाहर निकला वह भी सीधा नरक में गिर पड़ा।

जब दो बड़े भाई काफी दिनों तक घर वापस नहीं आये तो उनके सबसे छोटे भाई ने भी घर छोड़ा और अपनी किस्मत आजमाने बाहर चल दिया। वह भी उसी सड़क पर चल दिया जिस पर उसके दोनों बड़े भाई गये थे।

वह भी उसी शहर में आ पहुँचा जिसमें उसके दोनों बड़े भाई आये थे।

उसने भी चिल्लाना शुरू किया — "जो भी मुझे अपनी सहायता के लिये रख लेगा मैं उसको अपना मालिक बना लूँगा।"

उसकी यह आवाज सुन कर वही भला आदमी फिर अपने मकान के छज्जे पर आया और उससे बोला — "अगर हम और तुम आपस में राजी हो जायें तो मैं तुमको अपनी सहायता के लिये रख सकता हूँ।"

वह लड़का बोला — "ठीक है जो चाहे दे देना।"

"पर तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।"

"मैं आपकी हर बात मानूँगा।"

और उस भले आदमी ने उसको अपने पास रख लिया।

अगले दिन उस आदमी ने उस लड़के को बुलाया और उसको भी वही कहा जो उसके बड़े भाई से कहा था।

"यह चिट्ठी लो और यह घोड़ा लो। इस पर सवार हो कर इस घोड़ी की रास को बिना छुए चले जाओ। क्योंकि अगर तुमने इस घोड़े की रास छुई तो यह घोड़ा पलट जायेगा और फिर मेरे पास ही वापस आ जायेगा।

तुमको तो बस उसे कुदाना है। यह घोड़ा जानता है कि इसको कहाँ जाना है और यह उस जगह का रास्ता भी जानता है। वहाँ जा कर यह चिट्ठी दे आना और वापस आ जाना।"

घोड़ा कुलाँचें भरता हुआ वहाँ से चल दिया और उसी गहरी खाई की तरफ आ पहुँचा।

लड़के ने नीचे गहरी घाटी में देखा तो उसके सारे शरीर में एक ठंडी लहर दौड़ गयी। पर उसने सोचा कि अब मैं क्या करूँ अब तो भगवान ही मेरी सहायता करेगा और अपनी आँखें बन्द कर लीं।

अगले ही पल जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो तब तक तो वह उस खाई के दूसरी तरफ पहुँच चुका था।

घोड़ा भागता ही जा रहा था। अब वह एक नदी के पास आ पहुँचा। वह नदी क्या थी वह तो समुद्र जितनी चौड़ी थी। उसका दूसरा किनारा तो दिखायी ही नहीं दे रहा था।

वह सोचने लगा अब तो मेरे पास इसमें डूबने के अलावा और कोई चारा ही नहीं है। सो फिर उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और फिर भगवान की प्रार्थना की। बस वह नदी तो दो हिस्सों में बॅट गयी और उस घोड़े ने उसे आसानी से पार कर लिया।

घोड़ा फिर भागता गया और अबकी बार वह एक खून जैसे लाल रंग के पानी की नदी के पास आ गया। वह लड़का उस खून की नदी को देख कर बहुत ही घबरा गया और सोचने लगा कि अबकी बार तो वह यकीनन ही इस नदी में डूब जायेगा।

पर उसने फिर पहले की तरह से भगवान की प्रार्थना की और वह उस नदी में कूदने ही वाला था कि घोड़े के आगे वह नदी भी पहले की तरह दो हिस्सों में बॅट गयी और घोड़ा उसमें कूदता हुआ उसे पार कर गया।

चलते चलते वे अबकी बार एक ऐसे घने जंगल के पास आ गये जिसमें से घोड़ा तो घोड़ा कोई चिड़िया भी नहीं गुजर सकती थी।

लड़के ने सोचा "यहॉ तो बस मैं मर ही गया समझो।"

उसने फिर एक बार भगवान की प्रार्थना की और लो, वह घोड़ा तो उस जंगल में घुस गया और दौड़ता चला गया। वहॉ वह घोड़ा एक बूढ़े के पास आ कर रुक गया। वहॉ वह बूढ़ा गेंहू की एक पत्ती से एक पेड़ काट रहा था।

उस लड़के ने उस बूढ़े से पूछा — "अरे यह आप क्या कर रहे हैं? क्या आप सोचते हैं कि आप इस गेंहू की पत्ती से यह पेड़ काट पायेंगे?"

वह बूढ़ा बोला — "तुमने अगर एक शब्द और बोला तो मैं इस पत्ती से तुम्हारी भी गर्दन काट दूँगा।"

वह लड़का यह सुन कर डर गया। उसका घोड़ा उस लड़के को ले कर आगे बढ़ गया। चलते चलते वे अबकी बार एक ऐसी जगह आये जहाँ आग का एक दरवाजा बना हुआ था जिसके दोनों तरफ एक एक शेर बैठा था।

लड़के ने सोचा यहाँ तो मैं यकीनन जल जाऊँगा और ये शेर तो मुझे किसी हालत में नहीं छोड़ेंगे। पर फिर उसने सोचा कि अगर मैं जलूँगा तो यह घोड़ा भी तो जलेगा सो बढ़े चलो।

आश्चर्य, घोड़ा उसको भी पार कर गया। उस दरवाजे को पार कर के वह घोड़ा एक स्त्री के पास आया। वह स्त्री एक पत्थर पर अपने घुटने टेके हुए प्रार्थना कर रही थी।

यहाँ आ कर वह घोड़ा अचानक ही रुक गया। लड़के को लगा कि वह चिठ्ठी शायद इसी स्त्री के लिये थी सो वह घोड़े से नीचे उतरा और उस आदमी की दी हुई चिठ्ठी उसने उस स्त्री को दे दी।

उसने उस चिठ्ठी को खोला और पढ़ा। फिर उसने नीचे से एक मुठ्ठी रेत उठायी और हवा में बिखेर दी। लड़का फिर से अपने घोड़े पर चढ़ा और वापस घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँचने पर मालिक ने जो ईसा मसीह खुद थे उस लड़के से कहा — "वह खाई जो तुमने देखी वह नरक जाने का रास्ता थी। और उस नदी का पानी मेरी माँ के आँसू थे। वह खून जैसे लाल रंग का पानी मेरे पाँच घावों से बहने वाला खून था।

वह जंगल मेरे ताज के काँटे थे और वह आदमी जो तुमने गेहूँ के पत्ते से पेड़ काटता देखा वह मौत खुद थी। वह आग का दरवाजा नरक था और वे दो शेर जो उस दरवाजे के दोनों तरफ बैठे थे वे तुम्हारे दोनों भाई थे।

वह झुकी हुई स्त्री जो प्रार्थना कर रही थी वह मेरी माँ थी।

तुमने मेरा कहना माना इसलिये तुम उस सोने के ढेर में से कितना भी सोना ले जा सकते हो।"

वह लड़का तो बेचारा कुछ भी नहीं चाहता था पर अपने मालिक के कहने पर उसने उस ढेर में से एक सोने का सिक्का उठा लिया और वहाँ से चला आया।

अगले दिन वह बाजार से खरीदारी करने गया तो वह सिक्का उसने वहाँ खर्च कर दिया पर फिर भी वैसा ही एक सिक्का हमेशा ही उसकी जेब में रहा। उसके बाद वह ज़िन्दगी भर आराम से रहा।

4 सोती हुई सुन्दरी और उसके बच्चे[19]

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। इस बात से केवल वे ही नहीं बल्कि उनका सारा दरबार भी दुखी रहता था। ऐसा लगता था जैसे वे सब किसी का अफसोस मना रहे हों।

रानी बेचारी दिन रात प्रार्थना करती पर वह नहीं जानती थी कि वह किस सन्त की प्रार्थना करे ताकि उसको एक बच्चा हो जाये। वह सारे सन्तों की प्रार्थना कर चुकी थी पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया था।

एक दिन उसने यह प्रार्थना की — "ओ वरदान दी गयी माँ[20], मेहरबानी कर के मुझे एक लड़की ही दे दो चाहे वह तकुए[21] की नोक अपनी उँगली में चुभ जाने से पन्द्रह साल की उम्र में ही क्यों न मर जाये।"

बस फिर क्या था उसको बच्चे की आशा हो गयी और समय आने पर उसके एक बहुत सुन्दर बेटी पैदा हुई। उन्होंने उसका बहुत शानदार बैपटिस्म[22] किया और उसका नाम कैरोल[23] रख दिया।

---

[19] Sleeping Beauty and Her Children. Tale No 139. A folktale from Italy from its Calabria area.

[20] Translated for the words "O Blessed Mother"

[21] Translated for the word "Spindle". It is used to spin thread. See its picture above.

[22] Baptism or Christening - the ceremony of baptism, especially as accompanied by the giving of a name to a child.

[23] Carol – the name of the girl.

इस बच्ची के पैदा होने से राजा और रानी बहुत खुश हुए। ऐसा लगता था कि बस धरती पर वही खुश थे और दूसरा कोई नहीं।

समय बीतते कितनी देर लगती है। पन्द्रह साल भी बस ऐसे ही निकल गये। जब कैरोल पन्द्रह साल की होने को आयी तो एक दिन रानी को प्रार्थना करते समय अपनी पुरानी प्रार्थना याद आयी तो उसने वह सब राजा से कहा तो राजा तो बहुत सोच में डूब गया।

लेकिन बाद में फिर वह सँभला और उसने अपने राज्य में से सारे तकुए नष्ट करने का हुक्म दे दिया। उसने कहा कि जिस किसी के घर में भी तकुआ पाया गया उसका सिर उससे बिना कुछ पूछे ही धड़ से अलग कर दिया जायेगा।

इस घोषणा से जो लोग सूत कात कर अपना गुजारा करते थे राजा के पास गये और अपनी परेशानी उसको सुनायी तो राजा बोला कि इस बात की उनको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उनके परिवार का पालन पोषण वह खुद करेगा।

पर राजा को अपनी इस घोषणा से भी सन्तुष्टि नहीं हुई तो उसने अपनी बेटी को उसकी सुरक्षा के लिये उसके अपने कमरे में बन्द कर दिया और अपने महल में सबको कह दिया कि उससे कोई न मिले। पर होनी को कौन रोक सकता है।

अब कैरोल अपने कमरे में अकेली रह गयी सो वह अपने कमरे की खिड़की से बाहर देखती रहती। उसके कमरे की खिड़की की तरफ से सड़क के उस पार एक बुढ़िया रहती थी।

सब जानते हैं कि बूढ़े लोग कैसे होते हैं। वे अपने में इतने खोये रहते हैं कि वे अपने बारे में सोचने के अलावा किसी और के बारे में सोचते ही नहीं।

इस बुढ़िया के पास एक तकुआ था और रुई भी। जब भी उसका मन करता वह उस तकुए से अपना कुछ सूत कात लेती थी। वह अक्सर खिड़की के पास बैठ कर सूत कातती थी क्योंकि खिड़की के पास धूप और रोशनी दोनों आती थीं।

एक बार राजा की बेटी ने उसको सूत कातते देख लिया। उसने इससे पहले कभी किसी के हाथ इस तरीके से हिलते नहीं देखे थे सो उसने जब बुढ़िया के हाथों को उस अजीब तरीके से हिलते देखा तो उसकी उत्सुकता उसकी तरफ बढ़ती गयी।

जब उसकी उत्सुकता हद पार कर गयी तो एक दिन उसने उस बुढ़िया को पुकार कर पूछा — "ओ मैम, यह आप क्या कर रही हैं?"

बुढ़िया बोली — "मैं थोड़ी सी रुई कात रही हूँ बेटी, पर तुम किसी से कहना नहीं।"

"क्या मैं भी ऐसी रुई से थोड़ा सा सूत कात सकती हूँ?"

"हॉ हॉ बेटी क्यों नहीं। पर बस तुम भी छिपा कर ही कातना। ऐसा न हो कि कोई तुमको सूत कातते देख ले।"

कैरोल बोली — "ठीक है मैम, मैं किसी से नहीं कहूँगी और मैं सूत भी छिप कर ही कातूँगी। मैं एक रस्सी के सहारे एक टोकरी नीचे लटकाती हूँ। आप उस टोकरी में एक तकुआ और थोड़ी सी रुई रख कर ऊपर भेज दें। आपको उस टोकरी में अपने लिये एक भेंट भी मिलेगी।"

यह कह कर कैरोल ने रस्सी के सहारे एक टोकरी नीचे गली में लटका दी। उसमें पैसों से भरा हुआ एक बटुआ था। बुढ़िया ने उसमें बटुआ निकाल लिया और एक तकुआ और कुछ रुई रख दी। कैरोल ने उस टोकरी को ऊपर खींच लिया।

कैरोल तो उस टोकरी को देख कर बहुत खुश हो गयी। उसने तुरन्त ही उस तकुए से रुई सूत कातने की कोशिश भी की।

उसने उससे एक बार धागा काता, दूसरी बार काता, पर जब तीसरी बार काता तो वह तकुआ उसके हाथ से फिसल गया और उसके सीधे हाथ के ॲगूठे के नाखून के नीचे चुभ गया। लड़की तुरन्त ही फर्श पर गिर गयी और मर गयी।

जब राजा अपनी बेटी को देखने आया और उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया तो न तो किसी ने दरवाजा खोला और न ही किसी ने अन्दर से कोई जवाब दिया।

राजा ने देखा कि दरवाजा तो अन्दर से बन्द था। असल में राजकुमारी ने अपने कमरे का दरवाजा इसलिये बन्द कर लिया था ताकि उसको सूत कातते हुए कोई देख न ले।

राजा ने दरवाजा तुड़वाया तो देखा कि उसकी प्यारी बेटी तो जमीन पर मरी पड़ी है और उसके पास ही एक तकुआ पड़ा है। यह देख कर राजा ने अपना सिर पीट लिया।

राजा और रानी दोनों ही अपनी एकलौती बेटी को मरा देख कर इतने दुखी हुए कि उनको तसल्ली देने के लिये किसी के पास शब्द ही नहीं थे।

पर वह लड़की मरने के बाद भी उतनी ही सुन्दर लग रही थी जितनी वह पहले थी। वह ऐसी लग रही थी जैसे सो रही हो।

उसका शरीर भी ठंडा नहीं पड़ा था। उसकी तो जैसे बस साँस ही नहीं चल रही थी और उसका दिल भी नहीं धड़क रहा था। जैसे किसी ने उसके ऊपर जादू डाल दिया हो।

राजा और रानी ने कैरोल को उठा कर उसके बिस्तर पर लिटा दिया। हफ्तों तक वे उसके बिस्तर के पास इसी उम्मीद में बैठे रहे कि शायद वह आज ज़िन्दा हो जाये, शायद वह आज ज़िन्दा हो जाये। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

उनको तो असल में यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उनकी बेटी मर चुकी थी इसलिये वे उसको दफ़ना भी नहीं रहे थे।

फिर उन्होंने एक पहाड़ की चोटी पर एक छोटा सा किला बनवाया जिसमें कोई दरवाजा नहीं था। बस केवल एक खिड़की थी, और वह भी जमीन की सतह से बहुत ऊपर।

उस किले के अन्दर उन्होंने एक बिस्तर पर अपनी बेटी को सुला दिया। उसका पलंग काफी चौड़ा था और उस पर छत लगी हुई थी।

उस छत पर सारे में सोने के फूल कढ़े हुए थे। उन्होंने उसको दुलहिन की पोशाक पहना दी थी। उस पोशाक की सात स्कर्ट थीं जिनमें चाँदी के घुँघुरू लगे हुए थे।

अपनी बेटी के गुलाब जैसे ताजा चेहरे को आखिरी बार चूम कर राजा और रानी उस किले के दरवाजे से बाहर आ गये और उनके बाहर निकलते के बाद वह दरवाजा चिनवा कर बन्द करवा दिया गया।

इस घटना के कई दिन बाद एक नौजवान राजकुमार शिकार खेलने के लिये निकला तो इस किले की तरफ आ निकला। उसने उस किले में अन्दर जाने की सोचा तो उसको उसका कोई दरवाजा ही दिखायी नहीं दिया।

उस किले को देख कर उसने सोचा कि यह क्या हो सकता है। क्योंकि यह किला दिखायी तो देता है पर इसमें कोई दरवाजा नहीं है। केवल एक खिड़की? यह है क्या?

उसके कुत्ते भौंक रहे थे और उस किले के चारों तरफ दौड़ रहे थे। वह उनको चुप कराना चाह रहा था पर उनका भौंकना ही नहीं रुक रहा था।

उधर राजकुमार की उत्सुकता यह जानने की बढ़ती ही जा रही थी कि उस किले के अन्दर क्या है जिसका दरवाजा ही नहीं है। और जब दरवाजा ही नहीं है तो वह उसके अन्दर जाये कैसे।

जब वह कुछ नहीं कर सका तो उस समय तो वह वहॉ से वापस लौट गया पर अगले दिन वह एक रस्सी और एक सीढ़ी ले कर लौटा। उसने खिड़की के सहारे सीढ़ी रखी और उस पर चढ़ गया।

फिर वहॉ से खिड़की पर रस्सी फेंकी। उस रस्सी के सहारे वह किसी तरह उस खिड़की से हो कर उस किले के अन्दर चला गया।

वहॉ उसने एक बहुत सुन्दर लड़की को एक बड़े से पलंग पर लेटे देखा। उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह से खिला हुआ और ताजा दिखायी दे रहा था। उसके चारों तरफ फूल रखे हुए थे और वह बड़े आराम से सो रही थी। उसको देख कर तो उसको चक्कर ही आ गया।

उसने अपने आपको उस पलंग को पकड़ कर संभाला। फिर हाथ बढ़ा कर उस लड़की के माथे को छुआ। उस लड़की का माथा अभी भी गर्म था। उसने सोचा तो यह अभी मरी नहीं है।

वह उसको देखे जा रहा था देखे जा रहा था। उसकी ऑखें उसके चेहरे से हट ही नहीं पा रही थीं। वह वहॉ रात होने तक इसी उम्मीद में बैठा रहा कि शायद वह अब जागे अब जागे पर वह नहीं जागी।

अगले दिन वह फिर वापस आया, उसके अगले दिन भी आया है और इसके बाद तो फिर वह उससे एक घंटा भी अलग रहने की नहीं सोच सकता था। उसने उसको कई बार चूमा पर फिर भी वह होश में नहीं आयी।

वह अब उससे प्यार करने लगा था। दिन पर दिन राजकुमार दुबला होता जा रहा था और रानी मॉ की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके बेटे को क्या हो रहा था और उसका बेटा सारा सारा दिन घर से बाहर क्यों रहता था। यह उसकी सौतेली मॉ थी।

उधर उस राजकुमार का प्यार उस लड़की के लिये इतना ज़्यादा बढ़ गया था कि उस लड़की ने कुछ महीनों के बाद जुड़वॉ बच्चों को जन्म दिया – एक लड़का और एक लड़की। वे दोनों बच्चे भी इतने सुन्दर थे कि किसी ने इतने सुन्दर बच्चे कहीं देखे नहीं होंगे।

बच्चे भूखे थे तो उनको दूध कौन पिलाता जबकि उनकी मॉ बिस्तर पर एक मरे हुए के समान पड़ी हुई थी। वे रो रहे थे पर उनकी मॉ को तो उनका रोना ही सुनायी नहीं पड़ रहा था।

बच्चों के मुँह खुले हुए थे और वे कुछ खाना चाहते थे। उनके मुँह इधर उधर कुछ ढूँढ रहे थे कि उनके मुँह में उनकी माँ का अँगूठा आ गया तो वे उसी को चूसने लगे।

उसका अँगूठा चूसते चूसते राजकुमारी के नाखून के नीचे जो तकुए का टुकड़ा घुस गया था वह बाहर निकल गया और वह जाग गयी। उसने अपनी आँखें मलते हुए कहा — "ओह, मैं कितना सो गयी?"

फिर इधर उधर देख कर बोली — "पर मैं हूँ कहाँ? क्या किसी मीनार में? और ये दो बच्चे कौन है?"

उसकी उलझनें बढ़ती जा रही थीं कि इतने में राजकुमार खिड़की से कूद कर अन्दर आ गया। उसको देख कर तो वह और ज़्यादा चौंक गयी। उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो? और तुमको मुझसे क्या चाहिये?"

"ओह तुम ज़िन्दा हो गयीं? मुझसे बात करो प्रिये।"

उनका शुरू का आश्चर्य खत्म हुआ तो वे आपस में बात करने लगे। दोनों ने एक दूसरे के माता पिता और देश के बारे में जाना, खुश हुए और पति पत्नी की तरह से गले लगे। उन्होंने अपने बेटे का नाम सूरज रखा और बेटी का नाम चन्दा रखा।

उसने फिर राजकुमारी से कहा कि अभी वह चलता है लेकिन वायदा किया कि वह उसके लिये बहुत सारी बढ़िया बढ़िया भेंटें ले

कर और शादी की तैयारियाँ कर के जल्दी ही लौटेगा। और यह कह कर राजकुमार अपने घर लौट गया।

पर वह लड़की तो लगता है कि जैसे किसी बुरे समय में पैदा हुई थी। जैसे ही राजकुमार अपने घर पहुँचा वह बीमार पड़ गया। उसकी बीमारी इतनी ज़्यादा बढ़ गयी कि उसकी भूख जाती रही और वह बेहोश सा हो गया। वह बस यही कहता रहा —

ओ सूरज, ओ चन्दा, ओ कैरोल, काश तुम मेरे साथ खाना खा सकते।

यह सुन कर उसकी माँ को लगा कि किसी ने उसके बेटे पर जादू कर दिया है।

उसने अपने कुछ लोगों को उस जंगल में यह पता करने के लिये भेजा कि उसका बेटा रोज कहाँ जाया करता था तो उसको पता चला कि वहाँ केवल एक अकेला किला था जिसमें एक नौजवान लड़की रहती थी और उसका बेटा उसी के प्यार में पागल था। उससे उसके दो बच्चे भी थे।

यह सब जान कर रानी माँ को उस लड़की से नफरत हो गयी कि वह लड़की किस तरह की थी जिसने उसके बेटे पर ऐसा जादू कर दिया था। फिर भी उसने अपने दो आदमी यह कह कर सूरज को लाने के लिये उस किले में भेजे कि राजकुमार उसको देखना चाहता था।

हालाँकि कैरोल अपने बेटे को उनको देना नहीं चाहती थी पर उसके पास और कोई चारा नहीं था सो रोते हुए उसने सूरज को उन सिपाहियों को दे दिया।

सिपाही सूरज को ले कर महल आ गये जहाँ रानी माँ उनका इन्तजार कर रही थी। वह बच्चे को रसोइये के पास ले गयी और उसको राजा के लिये भूनने के लिये कहा।

पर वह रसोइया बहुत अच्छा आदमी था। उसका दिल उस नन्हे से बच्चे को मारने का नहीं किया। उसने सूरज को ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया। उसकी पत्नी ने उसको छिपा कर रख लिया और उसको अपने बच्चे की तरह पालने लगी।

उधर रसोइये ने बच्चे की जगह एक बकरे को भूना और राजा के पास ले गया। खाना देख कर राजा ने पहले की तरह से एक लम्बी साँस ली और बोला —

ओ सूरज, ओ चन्दा, ओ कैरोल, काश तुम मेरे साथ खाना खा सकते।

रानी माँ ने वह बकरे वाली प्लेट उठा ली और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोली — "लो बेटा, तुम अपने को ही खाओ।"

राजकुमार ने जब ये शब्द सुने और रानी माँ के चहरे की तरफ देखा तो उसकी तो यह समझ में ही नहीं आया कि वह कह क्या रही थी पर फिर वह अपना खाना खाने लगा।

अगले दिन उस बेरहम औरत ने उन्हीं सिपाहियों को बच्ची को लाने के लिये किले वापस भेजा तो कैरोल को उस बच्ची को भी उनको देना पड़ा।

रानी माँ ने इस बार भी उस बच्ची को रसोइये को भूनने के लिये दे दिया और रसोइये ने इस बार भी उस बच्ची को अपनी पत्नी को दे कर बचा लिया।

उसकी पत्नी ने उस बच्ची को भी अपने पास रख लिया और वह उसको भी पालने लगी। और रसोइये ने एक और बकरा भून कर राजा के खाने में परोस दिया।

राजकुमार की माँ ने फिर कहा — "लो बेटा तुम अपने को ही खाओ।"

अबकी बार राजकुमार ने फुसफुसा कर रानी माँ से पूछा कि वह जो कुछ कह रही थी उसका क्या मतलब था पर रानी माँ चुप रही।

तीसरे दिन रानी माँ ने उन सिपाहियों को उस लड़की को लाने के लिये भेजा तो वह बेचारी लड़की तो डर के मारे मर सी ही गयी। पर वह क्या करती वह उन सिपाहियों के साथ चल दी।

उसने अभी भी अपनी पुरानी शादी वाली पोशाक ही पहन रखी थी जिसमें सात स्कर्ट थे जिनमें चाँदी के घुँघुरू लगे हुए थे।

रानी माँ उसका सीढ़ियों पर ही इन्तजार कर रही थी। जैसे ही वह लड़की उसके पास आयी उसने उसके बाँये और दाँये दोनों गालों पर थप्पड़ मारने शुरू कर दिये।

लड़की ने भोलेपन से पूछा — “आप मुझे क्यों मार रहीं हैं?”

रानी माँ गुस्से से बोली — “क्यों मार रही हूँ? तूने मेरे बेटे के ऊपर जादू क्यों किया ओ बदसूरत जादूगरनी? और अब वह मर रहा है। पर तुझको पता है कि अब तेरा क्या होने वाला है?”

यह कह कर उसने उबलते पानी के बर्तन की तरफ इशारा किया।

यह सब राजा को कुछ सुनायी नहीं दे रहा था क्योंकि राजा की माँ ने उसके कमरे में उसके मन बहलाव के लिये कुछ गाने बजाने वालों को गाने बजाने के लिये बिठा रखा था। वे गा बजा रहे थे तो उनकी आवाजें सारे महल में गूँज रही थीं और वह कुछ सुन नहीं सकता था।

असल में यह सब डाक्टर की सलाह से हो रहा था ताकि वह खुश रह सके।

उस पानी के बर्तन को देख कर तो वह लड़की इतनी डर गयी कि उसको लगा कि बस अब तो वह मर ही जायेगी।

रानी माँ बोली — “अपनी स्कर्ट उतारो फिर मैं तुमको इस बर्तन में फेंकती हूँ।”

काँपते हुए उस लड़की ने रानी माँ की बात मानी और अपनी पहली स्कर्ट उतारी। उस स्कर्ट को उतारने में उसके उस स्कर्ट में लगे घुँघुरू बज उठे।

राजकुमार को उन घुँघुरुओं के बजने की आवाज साफ साफ सुनायी दी तो उसको लगा कि यह आवाज तो उसने कहीं सुनी है।

उसने अपनी ऑख खोली पर तभी बाजे वालों ने कुछ ज़ोर से ढोल बजाये तो उसको लगा कि शायद उसने ठीक से नहीं सुना।

फिर उस लड़की ने अपनी दूसरी स्कर्ट उतारी। उस स्कर्ट के घुँघुरू और ज़ोर से बजे। यह आवाज भी राजकुमार ने सुनी।

उसने फिर अपना सिर उठाया क्योंकि अबकी बार उसको यकीन हो गया था कि यह आवाज तो उसकी कैरोल की स्कर्ट के घुँघुरुओं की आवाज थी। पर उसी समय बड़े मँजीरों की आवाज ज़ोर से बजने लगी तो वह फिर एक बार शक में पड़ गया।

उसको फिर लगा कि उसने घुँघुरुओं की आवाज सुनी। इस बार वह आवाज और ज़्यादा साफ थी। फिर भी उसको सुनने के लिये उसे अपने कानों पर बहुत ज़ोर डालना पड़ रहा था।

इस तरह वह लड़की अपनी स्कर्ट पर स्कर्ट उतारती रही और उसके हर स्कर्ट के घुँघुरुओं की आवाज राजकुमार के कानों में पड़ती रही – हर बार तेज़ और और तेज़ जब तक कि पूरे महल में उनकी आवाज गूँज नहीं गयी।

राजकुमार एकदम से चिल्लाया — "कैरोल।" और अपने बिस्तर से उठ कर भागा। उसने कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया था सो वह कमजोर था और कॉप रहा था। वह सीढ़ियों से

नीचे उतरा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी तो गर्म उबलते हुए पानी में फेंकी जाने वाली हो रही है।

वह चिल्लाया — "रुको, यह तुम लोग क्या कर रहे हो?"

उसने अपनी तलवार उठायी और उसे रानी की तरफ कर के कहा — "अपने पापों को स्वीकार करो ओ माँ।"

जब उसको यह पता चला कि उसके बच्चों को उसी का खाना बना कर उसकी खाने की मेज पर रखा गया था तब तो वह दुख से बिल्कुल पागल सा हो गया और रसोइये को मारने दौड़ा।

पर जब रसोइये ने उसको बताया कि उसके बच्चे बिल्कुल सुरक्षित थे। तो यह सुन कर उसको इतनी खुशी हुई कि वह हँस पड़ा और खुशी से नाचने लगा।

रानी माँ को उस गर्म पानी के बर्तन में फेंक दिया गया। रसोइये को बच्चों को बचाने के लिये भारी इनाम मिला। राजा कैरोल, सूरज और चन्दा के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज्य का सुख भोगता रहा।

5 तीन चिकोरी इकट्ठा करने वाले[24]

एक बार एक बहुत ही गरीब स्त्री थी जिसके तीन बेटियाँ थीं। जब चिकोरी[25] का मौसम आता था तो वे तीनों लड़कियाँ अपनी माँ के साथ चिकोरी इकट्ठा करने के लिये बाहर जाती थीं।

एक दिन जब वे सब चिकोरी इकट्ठा करने गयीं तो माँ और उसकी दो छोटी बेटियाँ तो आगे निकल गयीं और उसकी बड़ी बेटी थोड़ा पीछे रह गयी। वह एक बहुत बड़े चिकोरी पौधे को देखती रह गयी थी।

उसने उस पौधे को उखाड़ने की बहुत कोशिश की पर वह तो हिल कर ही नहीं दिया। फिर उसने उसको अपनी पूरी ताकत लगा कर उसे खींचा तो वह उखड़ तो आया पर उसकी जड़ के चारों ओर बहुत सारी मिट्टी लगी हुई थी।

और इसी इतनी सारी मिट्टी के बाहर निकल आने की वजह से जमीन में एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया। उसने देखा कि उस गड्ढे की तली में तो एक छिपा हुआ दरवाजा था।

उस लड़की ने वह दरवाजा खोल लिया तो देखा कि वहाँ तो एक कमरा था जहाँ एक राक्षस एक कुसी पर बैठा हुआ था।

---

[24] The Three Chicory Gatherers. Tale No 142. A folktale from Italy from its Calabria area.

[25] Chicory – is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee. It looks like large thick radish. See its picture above.

दरवाजा खुलते ही वह चिल्लाया — "ओह यह आदमी के माँस की खुशबू कहाँ से आयी।"

टैरेसा[26] ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे मत खाओ। हम लोग बहुत गरीब हैं। मैं एक चिकोरी बेचने वाले की बेटी हूँ। और मैं तो यहाँ केवल चिकोरी इकट्ठी करने ही आती हूँ। हमारी गरीबी हमको ऐसा करने पर मजबूर करती है।"

वह राक्षस बोला — "तुम यहीं मेरे पास ठहरो और जब मैं शिकार के लिये जाऊँ तब तुम मेरे घर की देखभाल करो। तुम्हारे लिये मैंने यहाँ खाना रख दिया है। यह एक आदमी का हाथ है जब तुम्हें भूख लगे तो इसे खा लेना।

अगर तुम उसको खा लोगी तो जब मैं वापस आ जाऊँगा तब मैं तुमसे शादी कर लूँगा। पर अगर मैंने देखा कि तुमने उसे नहीं खाया तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूँगा।"

टैरेसा तो यह सुन कर बहुत डर गयी और बोली — "ठीक है जनाब। मैं उसको जरूर खा लूँगी।"

अब राक्षस तो शिकार पर चला गया और वह बेचारी टैरेसा बर्तन में रखे उस हाथ को देखने लगी। वह उसको देख देख कर डर रही थी। "आदमी के इस हाथ को मैं कैसे खा सकती हूँ?"

और वह उसको देखती रही देखती रही। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

[26] Teresa – the name of that eldest daughter

समय गुजरता रहा और अब तो उस राक्षस के आने का समय भी हो गया था। उसने उस हाथ को उठाया और पाखाने में फेंक दिया और उसके ऊपर से एक बालटी पानी डाल कर उसको बहा दिया।

उसने सोचा कि अब तो वह हाथ गया और वह राक्षस यह सोचेगा कि मैंने उसको खा लिया तो मैं बच जाऊँगी। तभी राक्षस वापस आ गया और उसने उससे पूछा — "क्या तुमने वह हाथ खा लिया?"

"हॉ जनाब। मैंने खा लिया। वह इतना बुरा तो नहीं था।"

"मैं अभी देखता हूँ।" कह कर उसने आवाज लगायी — "हाथ, तुम कहॉ हो?"

"मैं पाखाने में हूँ।"

"ओ बेवकूफ, तुम तो कह रही थीं कि तुमने उसे खा लिया पर तुमने तो उसको पाखाने में फेंक दिया?"

कह कर उसने उस लड़की के हाथ पकड़े और एक ऐसे कमरे में ले गया जहॉ बहुत सारे सिर कटे धड़ पड़े थे। वहॉ ले जा कर उसने उस लड़की का भी सिर काट दिया और उसका धड़ वहीं फेंक दिया।

शाम को जब मॉ चिकोरी इकट्ठा कर के घर लौटी और टैरेसा को घर में नहीं देखा तो उसने अपनी दूसरी बेटियों से पूछा — "यह टैरेसा कहॉ है?"

बहिनों ने कहा — "वह एक जगह तक तो हमारे साथ ही थी पर फिर पता नहीं कहॉ गायब हो गयी।"

सो सभी फिर से एक बार चिकोरी इकट्ठा करने की जगह तक उसका नाम पुकारते हुए गये पर उनको अपनी पुकार का कोई जवाब नहीं मिला। वे सभी रोते हुए घर लौटे।

हालॉकि उन सभी ने बेचने के लिये बहुत सारी चिकोरी इकट्ठी कर ली थीं और फिर खाना भी उस पैसे से बहुत सारा खरीद लिया था पर फिर भी उस खाने का हर कौर उनको टैरेसा के बिना जहर लग रहा था। क्योंकि वह खाना उन्होंने टैरेसा को खो कर पाया था।

आखिर जब टैरेसा वापस नहीं आयी तो उसकी बहिन कौनसैटा[27] ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मैं चिकोरी इकट्ठा करने के लिये उसी जगह फिर से जाना चाहती हूॅ जहॉ मुझे लगा था कि टैरेसा को हमने अपने साथ आखीर में देखा था। शायद वहॉ मुझे उसका कोई निशान मिल जाये।"

अगले दिन वह वहीं चल दी जहॉ उसने आखिरी बार टैरेसा को देखा था। उसको भी वहॉ चिकोरी का एक बड़ा सा पौधा दिखायी दे गया।

उसने भी उस पौधे को उखाड़ने की कोशिश की पर वह उससे भी नहीं उखड़ रहा था। आखिर बड़ी मुश्किल से उसने उसे उखाड़

---

[27] Consetta – the name of the second sister

ही लिया। उसको भी उस पौधे को उखाड़ने से बने गड्ढे में एक छिपा हुआ दरवाजा दिखायी दिया।

उसने भी उस दरवाजे को खोला और वह भी सीढ़ियों से हो कर नीचे चली गयी। उसने भी वहाँ नीचे एक कमरे में एक राक्षस एक कुर्सी पर बैठे पाया।

दरवाजा खुलते ही वह चिल्लाया — "ओह यह आदमी के माँस की खुशबू कहाँ से आयी।"

कौनसैटा ने भी उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे मत खाओ। हम लोग बहुत गरीब हैं। मेरी एक बहिन तो पहले ही खो गयी है।"

वह राक्षस बोला — "तुम्हारी बहिन यहाँ है। उसका सिर काट लिया गया है क्योंकि उसने आदमी का हाथ खाने से इनकार कर दिया था।

अब तुम यहाँ रहो और मेरे घर की देखभाल करो। तुम्हारे खाने के लिये यह आदमी की एक बाँह रखी है। अगर तुम इसे खा लोगी तो मैं तुमसे शादी कर लूँगा नहीं तो तुम्हारी बहिन की तरह से तुमको भी मार दूँगा।"

"जी जनाब। आप जैसा कहें।"

वह राक्षस यह कह कर शिकार पर चला गया और कौनसैटा वहीं डरी की डरी बैठी रह गयी। उसको पता ही नहीं था कि वह

उस बॉह का क्या करे जो एक प्लेट मे रखी थी और मूलियों से सजी हुई थी।

उसने कुछ सोचा और फिर उसको एक गड्ढा खोद कर उसमें गाड़ दिया।

जब राक्षस वापस आया तो उसने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमने वह बॉह खा ली?"

"जी जनाब। वह तो बड़ी स्वादिष्ट थी।"

"अभी पता चल जाता है।" कह कर उसने पहले की तरह से फिर आवाज लगायी — "ओ बॉह, तुम कहॉ हो?"

बॉह चिल्लायी — "जमीन के नीचे।"

बस उस राक्षस ने कौनसेटा का सिर भी काट दिया और उसका सिर कटा धड़ उसी कमरे में डाल दिया।

जब कौनसेटा भी वापस नहीं आयी तो दोनों मॉ बेटी तो जैसे टूट ही गयीं। वे रो कर बोलीं — "अब तो दोनों चली गयीं। अब हम क्या करें।"

अब तीसरी और सबसे छोटी बेटी मरीउज़ा[28] अपनी मॉ से बोली — "मॉ, इस तरह से हम अपनी दो बहिनों को नहीं खो सकते। अब मैं उनको ढूॅढने के लिये बाहर जाती हूॅ।"

[28] Mariuzza – name of the third and the youngest sister

उसकी मॉ अब अपनी तीसरी बेटी को खोना नहीं चाहती थी सो उसने उसको जाने से बहुत रोका पर वह नहीं मानी और अपनी दोनों बहिनों को ढूँढने चल दी।

उसको भी वही चिकोरी का बड़ा वाला पौधा मिला। उसने भी उसको उखाड़ा। उसको भी उस पौधे को उखाड़ने से बने हुए गड्ढे में छिपा हुआ दरवाजा मिला और जब उसने उस दरवाजे को खोला तो नीचे वाले कमरे में उसको भी एक राक्षस कुर्सी पर बैठा मिला।

उस राक्षस ने मरीउज़ा से कहा — तुम्हारी दोनों बहिनें यहॉ हैं और वे उस कमरे में बन्द हैं। उनके सिर काटे जा चुके हैं। तुम्हारा भी वही हाल होगा अगर तुम सूप में पड़े इस आदमी के पैर को नहीं खाओगी तो।"

मरीउज़ा बोली — "जी जनाब। मैं वही करूँगी जैसा आपने कहा है।"

राक्षस इतना कह कर शिकार पर चला गया और मरीउज़ा ने सोचना शुरू कर दिया कि वह अब क्या करे। तभी उसको एक तरकीब सूझी।

उसने कॉसे की एक मूसली और ओखली[29] ली और उस पैर को उसमें कूट पीस कर उसका चूरा कर लिया। उस चूरे को उसने एक मोजे में भर कर अपने कपड़ों के नीचे अपने पेट के ऊपर छिपा लिया।

[29] Bronze mortar and pestle. See its picture above.

जब वह राक्षस वापस आया तो उसने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमने वह पैर खा लिया?"

लड़की ने होठों पर अपनी जीभ फिराते हुए कहा — "ओह मैं बता नहीं सकती कि वह कितना स्वदिष्ट था।"

"अभी पता चल जाता है। ओ पैर, तुम कहाँ हो?"

"मैं मरीउज़ा के पेट पर हूँ।"

"वाह। बहुत अच्छे।" राक्षस चिल्लाया। "तुम मेरी पत्नी बनोगी।" और उसने मरीउज़ा से शादी कर ली।

शादी के बाद उसने अपनी सारी चाभियाँ मरीउज़ा को दे दीं, सिवाय एक चाभी के। यह चाभी उस कमरे की थी जिसमें उसके मारे हुए लोग पड़े थे।

शादी की खुशी में जब मरीउज़ा ने राक्षस को शराब पेश की तो वह बोतल पर बोतल खाली करता गया। वह अपने घर की आधी शराब पी गया पर फिर भी और पिये जा रहा था।

जब मरीउज़ा ने देखा कि वह पी कर बिल्कुल धुत हो गया है तो उसने उससे उस कमरे की चाभी माँगी जिसकी चाभी उसने उसको नहीं दी थी।

"नहीं नहीं वह चाभी नहीं।"

"तुम उस चाभी को मुझे क्यों नहीं देते?"

"क्योंकि उसके अन्दर मरे हुओं की आत्माऐं हैं।"

मरीउज़ा बोली — “अगर वे मर गयी हैं तो वे ज़िन्दा तो नहीं हो सकतीं न।”

राक्षस बोला — “मैं उनको ज़िन्दा कर सकता हूँ।”

मरीउज़ा बोली — “अगर कर सकते हो तो करो।”

राक्षस बोला — “मेरे पास मरहम है।”

मरीउज़ा बोली — “कहॉ रखते हो तुम उसे?”

राक्षस बोला — “आलमारी में।”

मरीउज़ा ने पूछा — “तब तुम तो मर ही नहीं सकते क्योंकि तुम वह मरहम लगा कर के ज़िन्दा हो जाओगे?”

“मैं? हॉ मैं नहीं मर सकता। पिंजरे में वह फाख्ता है न... ।”

“पिंजरे की वह फाख्ता क्या करेगी इसमें?”

“अगर तुम फाख्ता का सिर काट दो तो तुमको उसके दिमाग में एक अंडा मिलेगा। और अगर वह अंडा तुम मेरे माथे के ऊपर तोड़ दो तो बस समझो कि मैं मर गया... ।”

यह कह कर उसने अपना सिर मेज के ऊपर रख दिया। मरीउज़ा ने फाख्ता को ढूँढने के लिये सारा घर छान डाला पर वह उसको कहीं मिल ही नहीं रही थी।

आखिर वह उसको मिल ही गयी। तुरन्त ही उसने फाख्ता का सिर काट दिया और उसमें से अंडा निकाल लिया।

फिर उस अंडे को उस सोते हुए राक्षस के माथे पर फोड़ दिया। राक्षस दो चार बार कॉपा और फिर मर गया।

मरीउज़ा ने वह मरहम भी ढूँढ लिया जिससे उसको मरे हुए लोगों को ज़िन्दा करना था। फिर उसने वह कमरा खोला जिसमें मरे हुए लोग पड़े थे और उन मरे हुए लोगों को मरहम लगाने लगी।

पहला आदमी एक राजा था जो जब ज़िन्दा हुआ तो उसको ऐसा लगा जैसे कि वह सोते से उठा हो। वह बोला — "अरे मैं इतना कैसे सो गया? मैं कहाँ हूँ? मुझे किसने जगाया?"

पर मरीउज़ा ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और वह दूसरे लोगों को मरहम लगाती रही। पहले उसने अपनी बहिनों को मरहम लगाया, फिर राजाओं को, राजकुमारों को, काउन्टों को और नाइट्स को[30] जिनका तो कोई अन्त ही नहीं था।

अब बहुत सारे राजा और दूसरे कुलीन लोग इन तीनों बहिनों से शादी करना चाहते थे।

मरीउज़ा बोली — "तुम सबको सबसे पहले यह करना चाहिये कि तुम सब मोरा[31] खेलो और जो भी जीत जाये उसको लड़की चुनने का अधिकार होगा।

सो सबने मोरा खेला और उसमें पहले एक राजा जीत गया। उसने सबसे बड़ी वाली लड़की को चुन लिया। उसके बाद एक राजकुमार जीत गया तो उसने दूसरी लड़की को चुन लिया। अन्त में एक राजा जीता तो उसने मरीउज़ा को ले लिया।

[30] Counts and Knights – special status people in European kingdoms
[31] Morrah – a game

तभी एक आदमी चिल्लाया — "जल्दी करो, जल्दी करो। समय मत बर्बाद करो। यहाँ से भाग निकलो। वह राक्षस यहाँ कभी भी वापस आ सकता है और फिर वह हम सबको मार डालेगा।"

मरीउज़ा बोली — "डरो नहीं। मैंने उस राक्षस को खुद मार डाला है। अब तुम सबको उससे डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

सब खुशी से उछल पड़े "सो अब हमको डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह तो बहुत अच्छा है।"

फिर सबने एक एक घोड़ा लिया, उस राक्षस का खजाना आपस में बाँटा और अपनी अपनी दुलहिनों को ले कर शहर आ गये।

उन्होंने अपनी शादी बहुत धूमधाम से मनायी और अब हर एक बहुत खुश था खास कर के उन तीनों लड़कियों की माँ जिसको अब चिकोरी इकट्ठा करने के लिये कहीं नहीं जाना पड़ता था।

6 सात पोशाकों वाली सुन्दरी[32]

एक बार एक आदमी था जिसके दो बेटे थे। जब उसको लगा कि वह मरने वाला है तो उसने अपने बड़े बेटे को बुलाया और कहा — "बेटा, मैं तो अब मरने वाला हूं मेरे और जीने की अब कोई उम्मीद भी नहीं है। तुम मुझे बताओ कि तुमको क्या चाहिये मेरा आशीर्वाद या मेरे पैसे?"

इधर उधर की बातें किये बिना ही वह लड़का बोला — "मुझे तो आप अपना पैसा दे दीजिये पिता जी, क्योंकि केवल आपके आशीर्वाद से तो मैं भूखा ही मर जाऊँगा।"

उसके बाद उसने अपने छोटे बेटे को बुलाया और उससे भी वही सवाल पूछा तो पहले तो उसका बेटा यह सुन कर रो पड़ा कि उसका पिता मरने वाला है क्योंकि वह अपने पिता को बहुत प्यार करता था।

फिर सँभल कर बोला — "पिता जी, पैसे की मेरे लिये कोई कीमत नहीं है मुझे तो केवल आपका आशीर्वाद चाहिये।" और उसको आशीर्वाद दे कर उनका पिता मर गया।

उसके दोनों बेटे उसको दफ़नाने के लिये कब्रिस्तान ले गये। छोटा बेटा जिसके पास अपने पिता का केवल आशीर्वाद था बहुत

[32] Beauty With the Seven Dresses. Tale No 143. A folktale from Italy from its Calabria area.

रोया जबकि बड़ा बेटा जिसको उसकी सारी जायदाद और पैसा मिला था वह वहाँ खड़े खड़े भी यह सोच रहा था कि वह अपने पिता के उस पैसे और जायदाद को किस तरीके से इस्तेमाल करेगा।

आखीर में उसने निश्चय किया कि वह एक कैफ़े खोलेगा और उसने एक कैफ़े खोल लिया और उसके काउन्टर के पीछे खड़ा हो गया। उसका छोटा भाई जिसका नाम फ्रान्सैस्को[33] था अपनी किस्मत आजमाने के लिये घर छोड़ कर बाहर की दुनियाँ में चल दिया।

काफी चलने के बाद एक शाम को उसको एक छोटी सी रोशनी दिखायी दी। वह रोशनी उससे बहुत दूर थी। उसको देख कर उसने सोचा — "अगर भगवान ने चाहा तो मुझे वहाँ पहुँचना ही चाहिये।"

सो भगवान ने भी वैसा ही चाहा जैसा उसने चाहा और वह वहाँ पहुँच गया। वहाँ एक महल था। वहाँ पहुँच कर उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया तो सात पोशाकों वाली एक सुन्दरी अपनी सात नौजवान स्त्रियों के साथ दरवाजा खोल कर बाहर आयी और उसको अन्दर ले गयी। उसने उसको खाना खिलाया और सोने की जगह दी।

सुबह को उस सुन्दरी ने उस नौजवान से बातें की तो उसको लगा कि उसको उस नौजवान से शादी कर लेनी चाहिये क्योंकि वह उसके रूप रंग और उठने बैठने के ढंग से बहुत प्रभावित थी।

---

[33] Francesco – the name of the younger son.

उसने उससे यह बात कह ही दी कि वह उससे शादी करना चाहती है। वह खुद भी बहुत सुन्दर थी और देखने में भी शानदार थी सो कुछ ही दिन में उनकी शादी हो गयी।

एक दिन जब वे खिड़की के बाहर बागीचे की तरफ देख रहे थे तो उस सुन्दरी ने अपने पति से कहा — "चिचिलो[34], क्या तुमको पेड़ पर टॅगी वह सात हिस्सों वाली पोशाक दिखायी दे रही है?"

उसने ऐसा इसलिये कहा कि उस एक पोशाक में ही एक के अन्दर एक सात पोशाकें शामिल थीं।

वह बोला — "हॉ हॉ दिखायी दे रही है। पर तुम यह मुझसे क्यों पूछ रही हो?"

सुन्दरी बोली — "मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूॅ कि अगर कोई चिड़िया उस पोशाक पर आ कर बैठ जाये और तुम उसको पकड़ लो तो तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे। और अगर तुमने कहीं उस चिड़िया को मार दिया तो फिर तो वह फ्राक ही उड़ जायेगी और मैं बहुत मुश्किल में पड़ जाऊॅगी।

और अगर इससे कुछ और भी ज़्यादा हुआ तो इस कमरे में एक लाल पोशाक रखी है तुम उसको पहन लेना और मेरी खोज में यह घर छोड़ देना। फिर मैं देखूॅगी कि तुम मुझको फिर से पा सकोगे।"

[34] Ciccillo – maybe the younger son's nickname

और फिर एक दिन ऐसा ही हुआ कि जब वह नौजवान शिकार पर गया हुआ था एक चिड़िया उस सात हिस्से वाली फ्राक पर आ कर बैठ गयी। चिचिलो अपने शिकार के मूड में था सो उसने ध्यान ही नहीं दिया कि वह किसको मार रहा है और उसने उस चिड़िया को मार दिया।

चिड़िया के मरते ही वह सात हिस्से वाली फ्राक तुरन्त ही हवा में उड़ने लगी और ऑखों से ओझल हो गयी। तब चिचिलो को अपनी पत्नी की बात याद आयी। पागल सा वह अपने घर की तरफ दौड़ा। उसको डर था कि घर में जरूर ही कुछ बहुत बुरा हो गया है।

उसको वहाँ देख कर सुन्दरी ने उससे पूछा कि क्या मामला है। वह इतना घबराया हुआ क्यों है पर उसको कुछ भी बताने की उसकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी।

सुन्दरी को कुछ शक सा हुआ तो उसने पेड़ के ऊपर की तरफ देखा तो पाया कि वह सात हिस्से वाली फ्राक तो वहाँ से जा चुकी थी।

इस पर तो वह बहुत परेशान हो गयी और बोली — "मुझे धोखा दिया गया है। मेरे साथ छल किया गया है। अब वे लोग आयेंगे और मुझे यहाँ से ले जायेंगे। याद रखना अगर ऐसा कुछ हुआ तो वह लाल पोशाक पहन लेना और मुझे छोड़ना नहीं।"

अब हम इन दोनों को तो यहीं छोड़ते हैं और सात हिस्से वाली फ्राक के पीछे पीछे चलते हैं। वह फ्राक उड़ती चली जा रही थी उड़ती चली जा रही थी। उड़ते उड़ते वह एक महल के पास जा पहुँची।

वहाँ से वह खिड़की से हो कर महल के अन्दर घुस गयी और उस महल के राजा की मेज के पास आ कर रुक गयी। राजा वहाँ उस मेज पर बैठा बैठा कुछ लिख रहा था।

राजा ने उस सात हिस्से वाली पोशाक को इधर उधर से देखा तो उसको आश्चर्य हुआ कि वह पोशाक किसकी है। उसने वहाँ के लोगों से भी पूछा पर किसी को उस पोशाक के बारे में कुछ पता नहीं था।

तभी एक बुढ़िया को पता चला कि राजा एक सात हिस्सों वाली फ्राक के बारे में पता करने की कोशिश कर रहा है तो वह राजा के पास गयी और बोली — "मैं इस पोशाक की मालकिन को ढूँढ कर ला सकती हूँ।"

राजा ने पूछा — "तुम्हें उसको ढूँढने के लिये क्या चाहिये?"

बुढ़िया बोली — "मुझे रोज़ोलियो[35] की दवा मिलायी हुई बोतल चाहिये। एक पौंड मिठाई चाहिये। वह भी दवा मिलायी हुई होनी चाहिये। फिर बाकी मुझ पर छोड़ दीजिये।

[35] Rosolio - Rosolio is a type of Italian liquor derived from rose petals, and which is often used as the basis for the preparation of other liquors of various flavors.

हॉ मुझे एक अच्छे गाड़ीवान के साथ साथ एक अच्छी गाड़ी की भी जरूरत है। मैं अपने कपड़ों में एक खंजर[36] छिपा कर उस गाड़ी में जाऊँगी।"

राजा ने उसको वे सब चीज़ें दे दीं जो उसने मॉगी थीं और वह बुढ़िया उस गाड़ी में बैठ कर चल दी।

जब वे कुछ दूर चले गये तो उसने गाड़ीवान को एक महल के सामने रोक कर कहा – "तुम यहॉ मेरा इन्तजार करो और जब मैं तुमको पुकारूँ तो तुम अन्दर चले आना।"

उस समय बारिश हो रही थी। वह सीधी महल में चली गयी। वहॉ जा कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया तो उस लड़की का पति सात नौजवान स्त्रियों के साथ उसको अन्दर ले जाने के लिये बाहर आया।

बुढ़िया ने उससे रात को ठहरने की जगह मॉगी तो पति ने उसका खुशी से स्वागत किया और उसको महल के अन्दर ले गया। अन्दर ले जा कर वह उसको खाना खाने के लिये मेज पर ले गया।

मेज पर बैठ कर उस बुढ़िया ने अपनी वह दवा मिली रोज़ोलियो और मिठाई निकाली और बोली – "यह आप जैसे बड़े लोगों के लिये ठीक तो नहीं है पर आप लोग इसको मेरी खुशी के लिये खा लें।

---

[36] Translated for the word "Dagger". A middle-sized knife. See its picture above

मेरी बेटी की अभी अभी शादी हुई है और मैं यह थोड़ी ही चीज़ अपने साथ ला सकी हूँ ताकि आप लोग भी इस मौके की खुशी मना सकें।"

जब सबने वह मिठाई खा ली तो वे पति पत्नी दोनों बेहोश हो कर गिर पड़े। उस बुढ़िया ने अपना खंजर निकाला और उसने उससे उस राजकुमारी के पति को मार डाला।

फिर उसने गाड़ीवान को आवाज लगायी जो बाहर उसके पुकारने का इन्तजार कर रहा था। बुढ़िया की पुकार सुन कर वह तुरन्त ही अन्दर आ गया।

दोनों ने सुन्दरी को उठाया – एक ने सिर की तरफ से दूसरे ने पैर की तरफ से और उसको गाड़ी में रख दिया जैसे कि वह सो रही हो। उसको गाड़ी में बिठाने के बाद वे राजा के पास दौड़ चले।

राजा उनका बड़ी बेचैनी से इन्तजार कर रहा था। जब वह बुढ़िया वहाँ पहुँची तो उसने सुन्दरी को एक कमरे में अकेले लिटा दिया जब तक वह होश में आती।

सुबह को राजा उसके कमरे में गया तो उसको जगा हुआ पाया पर वह अपनी बदकिस्मती पर रो रही थी। राजा ने उसको तसल्ली देने की कोशिश की पर फिर अचानक पूछा — "हम शादी कब करेंगे?"

इस सवाल पर सुन्दरी ने उसके ऊपर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।अब क्योंकि उस लड़की को चुप करने का

और कोई तरीका नहीं था इसलिये उस समय राजा वहॉ से उठ कर चला गया।

एक महीने बाद राजा वहॉ फिर वापस आया और अपना वही सवाल उससे फिर से पूछा तो सुन्दरी ने जवाब दिया — "जब तुमको कोई आदमी पूरा का पूरा लाल पोशाक पहने मिल जायेगा तब मैं तुमसे शादी करूॅगी।"

राजा ने आराम की सॉस ली और सारी दुनियॉ में टैलीग्राफ के जरिये खबर भेज दी कि जैसे ही उनको कोई आदमी पूरा का पूरा लाल पोशाक पहने मिल जाये तो वह उसको राजा के पास ले आयें।

पर चिचिलो तो मर चुका था। उस बुढ़िया ने उसको खंजर मार मार कर मार दिया था सो पूरी की पूरी लाल पोशाक वाला आदमी अब किसी को कहॉ से मिलता।

एक दिन चिचिलो का बड़ा भाई जिसने कैफ़े खोला था बहुत गरीब हो गया तो उसने सोचा कि वह किसी और देश में जाये और वहॉ जा कर अपनी किस्मत आजमाये।

सो इत्तफाक से वह भी उसी सड़क पर चल दिया जिस पर उसका छोटा भाई गया था और उसी महल में आ गया जहॉ वह सुन्दरी रहती थी। उसने भी आ कर उस महल का दरवाजा खटखटाया तो सात नौजवान स्त्रियों ने दरवाजा खोला।

उस भाई को देख कर उनको लगा कि वह तो मरा हुआ चिचिलो था क्योंकि दोनों भाइयों की सूरत बहुत मिलती थी। उसको देख कर उन्होंने पूछा — “अरे तुम ज़िन्दा हो गये?”

यह सुन कर बड़ा भाई आश्चर्य से बोला — “क्या मतलब?”

स्त्रियों ने पूछा — “तुम्हारा कोई भाई था क्या जो तुम जैसा दिखायी देता था?”

बड़ा भाई बोला — “हॉ मेरा एक छोटा भाई है पर तुम यह सब क्यों पूछ रही हो?”

तब वे बोलीं — “आओ हमारे साथ आओ तब तुमको पता चलेगा।” कह कर वे उसको एक कमरे में ले गयीं जहॉ एक आदमी मरा पड़ा था। वह मरा हुआ आदमी उसका भाई था।

जैसे ही बड़े भाई ने उस आदमी को देखा तो वह रोने लगा — “ओह मेरे भाई, ओह मेरे भाई।”

उन सातों स्त्रियों ने उसको तसल्ली दी और बताया कि किस तरह चिचिलो को किस बेरहमी से मारा गया था। उन्होंने उस आये हुए आदमी को वहीं अपने पास ही ठहरा लिया।

एक दिन यह बड़ा भाई सुबह को दरवाजे पर खड़ा हुआ था कि उसने दो गिरगिट देखे – एक बड़ा और एक छोटा। देखते देखते बड़े वाले गिरगिट ने छोटे वाले गिरगिट को मार दिया और वहॉ से चला गया।

कुछ देर बाद वह एक तरह का पत्ता लिये लौटा और उस पत्ते को उस मरे हुए गिरगिट के शरीर पर मल दिया। वह उस पत्ते को उसके शरीर पर तब तक मलता रहा जब तक कि वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

बड़े भाई को यह देख कर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी। उसने सोचा कि इस पत्ते से तो वह अपने भाई को भी ज़िन्दा कर सकता था और फिर वैसे भी कोशिश करने में क्या हर्ज था।

सो उसने भी वह पत्ता तोड़ा और अपने मरे हुए भाई के सारे शरीर पर मल दिया। कुछ ही देर में वह भी ज़िन्दा हो गया। ज़िन्दा होते ही उसने अपनी पत्नी के बारे में पूछा तो उसको अपनी पत्नी की दी गयी चेतावनी याद आ गयी।

उसने तुरन्त ही उस कमरे में रखी लाल पोशाक पहनी और उसको दुनियाँ भर में ढूँढने चल दिया।

उसी दिन उस सुन्दरी की शादी राजा से होने वाली थी। राजा के आदमी लाल पोशाक वाले आदमी को ढूँढने में नाकामयाब रहे थे सो सुन्दरी ने उसके मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी और सोच लिया था कि शायद वह मर गया होगा इसलिये वह राजा से शादी करने पर तैयार हो गयी थी।

चिचिलो घूमता घूमता उसी शहर में आ गया था जिसमें सुन्दरी की शादी होने वाली थी। इतने दिनों की बेकार की खोज के बाद

जब लोगों ने एक पूरे के पूरे लाल पोशाक वाले आदमी देखा तो उन्होंने उसको रोक लिया और उसको राजा के पास ले गये।

राजा उसको देख कर जल्दी से यह बात सुन्दरी को बताने गया कि उसको लाल पोशाक वाला आदमी मिल गया है और इस तरह अब उसकी शर्त पूरी हो गयी है और अब उनकी शादी में कोई अड़चन नहीं है।

यह सुन कर सुन्दरी बोली कि पहले वह उस लाल पोशाक वाले आदमी से खुद बात करेगी। उस लाल पोशाक वाले आदमी को एक बन्द कमरे में अकेला लाया गया। वहाँ उन दोनों ने अपनी अपनी बदकिस्मती की कहानी कहते हुए और आगे का प्लान बनाते हुए सारी रात गुजार दी।

सुन्दरी के पास महल की सारी चाभियाँ थीं। रात को जब राजा गहरी नींद सो गया तो वे दोनों उठे, दो गधों पर पैसों के थैले लादे और महल से भाग लिये।

सारा दिन चलते चलते जब अँधेरा हो आया तो उनको एक घुड़साल मिली। उन्होंने वहीं भूसे का एक जितना मुलायम और आरामदेह बिस्तर बन सकता था बनाया और लेट गये।

उस घुड़साल की छत पर एक शराबी खर्राटे मार कर सो रहा था और बार बार करवटें बदल रहा था। करवटें बदलते समय एक दफा वह ऊपर से नीचे गिर पड़ा और उन दोनों पति पत्नी के बीच

में आ गिरा। गिर कर वह उस भूसे में नीचे को धँस गया। पर फिर भी वह न तो जागा और ना ही उसने खर्राटे मारना छोड़ा।

सुबह को सुन्दरी सबसे पहले जागी। फिर उसने अपने पति को जगाया — "चिचिलो जागो, हमको देर हो रही है। हमको अपने पैसों वाले गधे पर चढ़ कर यहाँ से जल्दी ही निकल जाना चाहिये।

पर उसका पति अभी भी बहुत गहरी नींद सो रहा था सो उसने तो सुना ही नहीं। पर उस शराबी के कानों में पैसों का नाम पड़ा तो उसने तुरन्त ही जवाब दिया — "हाँ हाँ चलो चलो, हमको चल देना चाहिये।"

सुन्दरी ने उसकी आवाज नहीं पहचानी। अभी दिन नहीं निकला था और अँधेरा ही था इसलिये वह उस आदमी को भी नहीं पहचान सकी और दोनों गधों की तरफ चल दिये और फिर गधों पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिये।

जब दिन निकल आया तब सुन्दरी ने देखा कि उसके साथ जाने वाला आदमी तो उसका पति नहीं था वह तो कोई और था। उसने उससे लड़ना शुरू कर दिया।

अब उस शराबी के पास एक ही रास्ता था। वह बढ़ा और उसने सुन्दरी को धक्का दे कर गधे से नीचे गिरा दिया। उसने सुन्दरी को तो वहीं रोते धोते छोड़ा और पैसे और दोनों गधों को ले कर वहाँ से चलता बना।

अब सुन्दरी को फिर पता नहीं था कि वह अपने पति को कैसे ढूँढे क्योंकि वह तो उस शराबी के साथ बहुत दूर तक निकल आयी थी और वह शराबी उनके दोनों गधे ले कर चला गया था।

सो उसको पैदल ही वापस जाना पड़ा। चलते चलते वह एक भूसे के ढेर के पास आयी जहाँ उसको खेत में काम करने वाला एक लड़का मिल गया। उसने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह उसको अपने कपड़े दे दे।

उस लड़के ने उसको अपने कपड़े दे दिये। सुन्दरी उन कपड़ों को पहन कर आदमी के वेश में अब आगे चलने लगी। इस तरह वेश बदलने से उसको अब खतरा कम था।

उसके पति का अभी तक कोई पता नहीं था। अपने खाने पीने के लिये उसने एक आटा पीसने वाले की दूकान पर नौकरी कर ली थी। यह आटा पीसने वाला राजा के नोटरी[37] का आटा पीसता था।

सुन्दरी का काम इस आटा पीसने वाले का हिसाब किताब रखना था। उसकी लिखाई इतनी सुन्दर और साफ थी कि उस आटा

[37] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business. A notary's main functions are to administer oaths and affirmations, take affidavits and statutory declarations, witness and authenticate the execution of certain classes of documents, take acknowledgments of deeds and other conveyances, protest notes and bills of exchange, provide notice of foreign drafts, prepare marine or ship's protests in cases of damage, provide exemplifications and notarial copies, and perform certain other official acts depending on the jurisdiction.

पीसने वाले ने इतनी सुन्दर और साफ लिखाई इससे पहले कभी किसी की नहीं देखी थी।

नोटरी को जब इस बात का पता चला कि उसके आटा पीसने वाले के यहाँ एक लड़का काम करता है जिसकी लिखाई बहुत सुन्दर और साफ है तो उसने उसको अपने यहाँ नौकर रख लिया सो अब वह नोटरी का हिसाब किताब रखने लगी।

जब नोटरी ने अपने हिसाब की किताब राजा को दिखायी तो राजा भी उसकी लिखाई से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उस लड़के को अपनी सेवा में रख लिया।

इस बीच वह राजा जो सुन्दरी से शादी करना चाहता था मर गया। क्योंकि अगली सुबह जब उसने देखा कि उसकी होने वाली दुलहिन उस लाल पोशाक वाले के साथ भाग गयी है तो उसने दीवार से अपना सिर मार मार कर आत्महत्या कर ली।

अब उसके राज्य का वारिस कौन बने? वह राजा जिसने उस खेत वाले लड़के को अपने पास रखा था उसके राज्य का राजा बन गया।

सो उसने उस लड़के को उस मरे हुए राजा के राज्य में गवर्नर बना कर भेजा और उससे कहा कि वह वहाँ जा कर घोषणा करवा दे कि वह नये राजा की जगह उस राज्य के राजा का काम करेगा।

खेत वाले लड़के ने कहा कि अगर उसको वहाँ राज्य करना है तो उसको वहाँ के राज्य के हर आदमी पर राज करने के पूरे अधिकार दिये जायें।

वह राजा उसकी बात मान गया और उसने उसको वहाँ के राज्य के हर आदमी पर राज करने के उसको पूरे अधिकार दे दिये।

मरे हुए राजा के राज्य में आने पर सबसे पहला काम तो उसने यह किया कि उसने यह खबर सारे राज्य में फैला दी कि वहाँ का हर आदमी जिसके साथ कोई भी असाधारण घटना हुई हो वह उसके सामने आये, अपनी वह असाधारण घटना सुनाये और इसके बदले में वह उसको पैसों का एक थैला देगा।

यह खबर फैली तो पहला आदमी जो उसके सामने अपनी असाधारण कहानी सुनाने आया वह थी वह बुढ़िया जिसने उसके पति को मारा था और उसकी पत्नी, यानी उसको खुद को बेहोश कर के उठा कर ले गयी थी।

गवर्नर बोला — "ओ नीच, तूने यहाँ आ कर यह सब कहने की मुझसे हिम्मत कैसे की?" और उसने उसको उबलते पानी के कड़ाह में डाल देने का हुक्म सुना दिया।

उसके बाद आया वह शराबी जो उसको और उसके गधों को पैसों के साथ चुरा कर भाग गया था। उसको भी वह बोला — "ओ चोर, तूने एक औरत को लूटा और फिर यह बात बताने के लिये

यहाँ भी चला आया?" सो उसने उसको एक खतरनाक चोर कहते हुए फाँसी की सजा सुना दी।

इन दोनों से निपटने के बाद आया उसका अपना पति अपनी कहानी सुनाने। उन दोनों ने एक दूसरे को आपस में देखते ही पहचान लिया और एक दूसरे के गले लग गये।

वह गवर्नर अन्दर गया और अपने कपड़े बदल कर आया। अब वह अपनी सात हिस्सों वाली फ्राक पहने थी और उसका पूरा शरीर गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था। उन लोगों ने फिर बहुत बढ़िया खाना खाया।

चिचिलो ने अपने बड़े भाई को भी वहीं रहने के लिये बुला लिया और उन सातों स्त्रियों को भी। चिचिलो वहाँ का राजा बन गया।

यह सब उसके पिता के आशीर्वाद का नतीजा था कि वह आज राजा बन गया था।

7 सॉप बादशाह[38]

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। रानी एक बच्चे के लिये रोज प्रार्थना करती, बहुत सारे उपवास रखती पर उसको कोई बच्चा नहीं हुआ।

एक दिन वह एक खेत में घूम रही थी। वहॉ उसने कई किस्म के बहुत सारे जानवर देखे – छिपकलियॉ, चिड़ियें, सॉप। सब अपने अपने बच्चों के साथ घूम रहे थे।

वह सोच रही थी — "देखो ये सारे जानवर अपने अपने बच्चों के साथ घूम रहे हैं और मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

तभी एक सॉप अपने बच्चों के साथ उसके पास से गुजरा तो रानी के मुॅह से निकला — "काश मेरे एक सॉप का बच्चा ही हो जाये तो मैं तो एक सॉप के बच्चे से ही सन्तुष्ट हो जाऊॅगी।"

अब कुछ ऐसा हुआ कि उसके ऐसा बोलते ही उसको बच्चे की आशा हो गयी। सारे राज्य के लोग बहुत खुश हुए। पर जब बच्चे के पैदा होने का दिन आया तो रानी ने एक सॉप को ही जन्म दिया।

यह देख कर सबकी बोलती बन्द हो गयी। पर रानी को अपनी कही बात याद आ गयी। यह सोचते हुए कि उसकी प्रार्थना का उसको जवाब मिल गया वह अपने सॉप बच्चे को बहुत प्यार करने

[38] Serpent King. Tale No 144. A folktale from Italy from its Calabria area.

लगी और उसको पा कर इतनी खुश हुई जैसे कि वह उसका बेटा ही हो।

उसने उसको एक लोहे के पिंजरे में रख दिया और उसको वही खिलाया जो साँप खाते थे – सूप और माँस, दोपहर को और शाम को। वह साँप खाता भी खूब था – दो के बराबर और दिन ब दिन बड़ा हो रहा था।

जब वह साँप बहुत बड़ा हो गया तो एक दिन जब उसकी नौकरानी उसके लिये उसका बिस्तर ठीक करने आयी तो उसने उससे कहा — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो।"

यह सुन कर वह नौकरानी तो बहुत डर गयी और अब वह उसके पिंजरे के पास भी नहीं जाना चाहती थी।

पर रानी ने जब उसको साँप राजकुमार के लिये खाना ले जाने के लिये कहा तो वह बेचारी डरती डरती उसके लिये खाना ले कर आयी तो साँप ने अपनी बात फिर दोहरायी — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो।"

नौकरानी ने जा कर यह सब रानी से कहा तो रानी बोली — "अब हम क्या करें?"

उसने अपने एक किसान को बुलवाया और उससे कहा — "तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दूँगी अगर तुम अपनी बेटी मुझे ला दो तो। मैं उसकी शादी अपने बेटे से करना चाहती हूँ।"

वह किसान रानी को मना तो नहीं कर सकता था सो वह बेचारा राजी हो गया और अपनी बेटी को रानी के पास ले आया। साँप और उस किसान की बेटी की शादी धूमधाम से हो गयी। साँप दावत की मेज पर भी बैठा। शाम को दोनों अपने कमरे में सोने चले गये।

रात को साँप ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे पूछा — "क्या समय है?"

उस समय सुबह के चार बजे थे। पत्नी ने जवाब दिया — "यह वही समय है जब मेरे पिता सुबह उठते हैं, अपना हल उठाते हैं और खेतों को जाते हैं।"

साँप बोला — "तो तुम किसान की बेटी हो।" कह कर उसने उसके गले पर काट लिया और उसको मार दिया।

अगली सुबह जब नौकरानी सुबह का नाश्ता ले कर आयी तो उसने देखा कि बहू तो मरी पड़ी है।

वह साँप फिर बोला — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो। हाँ ध्यान रखना कि वह सुन्दर भी हो और अमीर भी।"

अबकी बार रानी ने एक चमार को बुलाया जो वहीं सड़क के उस पार रहता था। उसकी भी एक बेटी थी। रानी ने उससे भी वही कहा जो उसने किसान से कहा था — "तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दूँगी अगर तुम अपनी बेटी मुझे ला दो तो। मैं उसकी शादी अपने बेटे से करना चाहती हूँ।"

चमार जब राजी हो गया तो साँप राजकुमार की शादी उसकी बेटी के साथ धूमधाम से की गयी। रात को साँप ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे पूछा कि उस समय क्या समय था।

उसकी पत्नी बोली — "यह वही समय है जब मेरे पिता सुबह उठते हैं और अपनी काम की जगह जा कर हथौड़ी मारते हैं।"

साँप बोला — "तो तुम चमार की बेटी हो।" कह कर उसने उसके गले पर भी काट लिया और वह भी मर गयी।

अगली बार रानी ने एक बादशाह की लड़की से उसकी शादी करने के लिये कहा। वह बादशाह अपनी बेटी की शादी एक साँप से नहीं करना चाहता था सो उसने इस बारे में अपनी पत्नी से भी सलाह की।

इत्तफाक से उसकी पत्नी उस लड़की की सौतेली माँ थी जो उससे छुटकारा पाना चाहती थी सो उसने बादशाह को कह सुन कर उस लड़की की शादी उस साँप राजकुमार से करने के लिये राजी कर लिया।

वह लड़की बेचारी और तो कुछ कर नहीं सकी सो वह अपनी मॉ की कब्र पर गयी और रो कर उससे पूछा — "मैं क्या करूँ मॉ? मेरी सौतेली मॉ मेरी शादी एक सॉप से कर रही है।"

उसकी मॉ ने कब्र में से जवाब दिया — "तुम उस सॉप राजकुमार से शादी कर लो मेरी बेटी। पर अपनी शादी के दिन तुम एक के ऊपर एक सात पोशाक पहनना।

जब तुम सोने जाओ तो कह देना कि तुमको कोई नौकरानी नहीं चाहिये अपने कपड़े तुम खुद ही उतार लोगी।

जब तुम उस सॉप के साथ अकेली रह जाओ तो उस सॉप राजकुमार से कहना कि एक पोशाक तुम अपनी उतारोगी और एक खाल वह अपनी उतारेगा।

फिर पहले तुम अपनी पहली पोशाक उतारना और फिर वह अपनी पहली खाल उतारेगा। तुम फिर वही कहना कि एक पोशाक मैं अपनी उतारती हूँ और एक खाल तुम अपनी उतारो। इस तरह से एक एक कर के तुम दोनों अपने अपने कपड़े उतारते रहना।"

मॉ के कहने पर उस लड़की ने उस सॉप राजकुमार से शादी कर ली और उसने वैसा ही किया जैसा कि उसकी मॉ ने उससे करने के लिये कहा था। वह हर बार जब अपनी एक पोशाक उतारती थी तब सॉप भी अपनी एक खाल उतारता था।

जैसे ही उस सॉप राजकुमार ने अपनी सातवीं खाल उतारी तो वहॉ तो दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार खड़ा था। उस

राजकुमारी ने भी अपनी सातवीं पोशाक उतारी और फिर वे सोने चले गये।

सुबह के दो बजे दुलहे ने पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह तो वह समय है जब मेरे पिता थियेटर से वापस घर लौटते हैं।"

कुछ देर बाद उसने फिर पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह वह समय है जब मेरे पिता रात का खाना खाते हैं।"

जब दिन निकल आया तो उसने एक बार फिर पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह वह समय है जब मेरे पिता को कौफ़ी चाहिये।"

यह सुन कर उस छोटे साँप राजा ने उसको चूम लिया और बोला — "तुम मेरी सच्ची पत्नी हो। पर तुम यह बात किसी और को मत बताना कि मैं रात को आदमी बन जाता हूँ। और अगर तुमने ऐसा किया तो तुम मुझको खो दोगी।"

और उसके बाद वह फिर साँप में बदल गया।

एक रात साँप ने अपनी पत्नी से कहा — "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं दिन में भी आदमी के रूप में रहूँ तो तुम वही करो जो मैं कहता हूँ।"

पत्नी बोली — "यकीनन मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे।"

सॉप बोला — "दरबार में रोज रात को नाच गाना होता है। तुम वहॉ जाओ। हर एक तुमको वहॉ नाच के लिये बुलायेगा पर तुम किसी के साथ नहीं नाचोगी।

जब तुम एक नाइट[39] को देखो जो लाल कपड़े पहने हो तब तुम अपनी जगह से उठना और केवल उसी के साथ नाचना। वह नाइट मैं होऊॅगा।"

समय हुआ और दरबार में सब नाचने के लिये इकट्ठा होने लगे। राजकुमारी भी उस कमरे में आयी और आ कर एक जगह बैठ गयी।

उसको देख कर तुरन्त ही कई राजकुमार और कुलीन लोगों ने उसको नाच के लिये बुलाया तो उसने जवाब दिया कि वह वहीं ठीक थी और वहीं से केवल नाच देख कर ही खुश थी सो वह वहॉ से नहीं उठी और उनमें से किसी के साथ नहीं नाची।

राजा और रानी को उसका यह बर्ताव कुछ अच्छा नहीं लगा पर उन्होंने यह सोच लिया कि शायद वह अपने पति की इ़ज़्ज़त की वजह से उनके साथ नाचना पसन्द नहीं कर रही थी।

अब क्योंकि उसका पति नाच में आ नहीं सकता था इसलिये उन्होंने उसको कुछ नहीं कहा।

अचानक एक नाइट लाल पोशाक में उस कमरे में घुसा। उसी समय वह राजकुमारी अपनी जगह से उठी और उसने उसके साथ

---

[39] Knight – a certain status in the European kingdoms

नाचना शुरू कर दिया और वह सारी शाम उसी के साथ नाचती रही।

नाच खत्म हो गया और राजा और रानी जब अपनी बहू के साथ अकले रह गये तो उन्होंने उसके बाल पकड़े और बोले — “इसका क्या मतलब होता है कि तुमने हर एक को तो नाचने के लिये मना कर दिया और उस अजनबी के साथ सारी शाम नाचती रहीं। यह तो हमारा बहुत बड़ा अपमान था। हम लोगों का इतना बड़ा अपमान करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?”

पर वह लड़की कुछ नहीं बोली। यह सब कह सुन कर वे वहाँ से चले गये।

उनके जाने के बाद राजकुमारी ने अपने साँप पति को बताया कि किस तरह से उसके माता पिता ने उसका अपमान किया था।

साँप बोला — “तुम उनकी बातों पर ध्यान मत दो। तुमको यह सब तीन रात तक लगातार सहना पड़ेगा। और तीसरी रात के आखीर में मैं हमेशा के लिये आदमी बन जाऊँगा।

कल रात मैं काले कपड़े पहन कर आऊँगा। और तुम बस मेरे ही साथ नाचना। अगर वे तुमको इस बात के लिये मारें भी तो मेहरबानी कर के उसे मेरे लिये सह लेना।”

अगली शाम राजकुमारी ने फिर से सबको नाच के लिये मना कर दिया पर जब एक नाइट काले रंग की पोशाक पहन कर आया तो वह उसके साथ सारी शाम नाचती रही।

उस दिन राजा और रानी ने उससे कहा — "क्या तुम हर रात इसी तरह से हमारा अपमान करती रहोगी? तो या तो जो हम कहते हैं वह करो वरना. . . " यह कह कर उन्होंने एक डंडी उठायी और उन्होंने उसको उस डंडी से बहुत मारा।

उस रात उसका सारा शरीर बहुत दर्द कर रहा था। उसने रोते हुए अपने पति को सब कुछ बताया तो उसका पति बोला — "प्रिये बस एक शाम और। कल मैं साधु के वेश में आऊँगा।"

अगली तीसरी और आखिरी रात भी फिर उसने सब लोगों को नाच के लिये मना कर दिया पर जब वह साधु आया तो उसके साथ वह फिर सारी शाम नाचती रही।

जैसे ही शाम का नाच खत्म हुआ तो वहीं उसी समय सबके सामने राजा और रानी ने एक डंडी उठायी और राजकुमारी और उस साधु को उससे मारना शुरू कर दिया।

साधु ने उस मार से बचने की बहुत कोशिश की पर जब वह नहीं बच पाया सो वह एक बहुत बड़ी चिड़िया बन गया और खिड़की के शीशे तोड़ कर बाहर उड़ गया।

राजकुमारी चिल्लायी — "अब देखो ज़रा कि आप लोगों ने क्या किया है। क्या आपको मालूम है वह आपका बेटा था।"

जब उन्होंने यह सुना कि यह सब उनके बेटे के ऊपर से जादू उतारने के लिये किया जा रहा था जिससे कि वह हमेशा के लिये

आदमी के रूप में आ जाता तो वे दोनों बेचारे बहुत परेशान हुए पर अब वे कर ही क्या सकते थे।

उन्होंने अपनी बहू को गले से लगा लिया और उससे बहुत माफी माँगी। पर राजकुमारी ने जवाब दिया — "अब हमारे पास समय नहीं है। मुझे उनके पीछे पीछे जाना है।"

उसने तुरन्त ही पैसों के दो थैले उठाये और उसी दिशा में चल दी जिधर वह चिड़िया उड़ कर गयी थी। बीच में वह एक दूकान वाले से मिली जो अपनी दूकान के टूटे शीशे पर रो रहा था।

उसने उससे पूछा — "जनाब, क्या बात है आप क्यों रो रहे हैं?"

वह बोला — "एक चिड़िया अभी अभी यहाँ से उड़ कर गयी है जिसने मेरी यह सारी दूकान तोड़ दी है।"

राजकुमारी ने पूछा — "और इस शीशे की क्या कीमत होगी क्योंकि वह चिड़िया मेरी थी?"

"मेरे मालिक ने मुझे बताया कि उसकी कीमत पचास क्राउन[40] के करीब होगी।"

राजकुमारी ने पैसों का एक थैला खोला उसमें से पचास क्राउन निकाल कर उस दूकान वाले को दिये और उससे पूछा कि वह चिड़िया किधर की तरफ गयी थी।

---

[40] Crown was the currency there.

दूकान वाले ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा — “उस तरफ, बिल्कुल सीधी।”

राजकुमारी उधर ही चल दी। कुछ दूर चलने के बाद वह एक सुनार की दूकान पर आयी। उस दूकान का मालिक तो वहाँ था नहीं पर उसके नौकर चाकर उस दूकान पर थे और रो रहे थे।

उसने उनमें से एक नौकर से पूछा — “ओ नौजवान, क्या बात है आप लोग क्यों रो रहे हैं?”

वह बोला — “एक चिड़िया अभी अभी यहाँ से उड़ कर गयी है जिसने हमारी यह सारी दूकान तोड़ दी है। अब हमारा मालिक यहाँ आयेगा तो हमको तो वह पीट पीट कर मार ही देगा।”

“इन सब सोने की चीज़ों की क्या कीमत होगी?”

“मुझे मर जाने दो। मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं इस समय कुछ और सोच ही नहीं सकता कि अब मेरा मालिक मेरा क्या हाल करेगा।”

“नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इसका हरजाना जरूर भरूँगी क्योंकि वह चिड़िया मेरी थी।”

उस नौजवान ने एक लम्बी लिस्ट बनायी और सबको जोड़ कर उसको बताया कि उसका वह सब सामान छह हजार क्राउन का रहा होगा।

राजकुमारी ने उसको वे पैसे दिये और उससे भी पूछा कि वह चिड़िया किधर गयी थी। उसने भी एक तरफ को इशारा कर के कहा कि वह चिड़िया उधर सीधी चली गयी थी।

राजकुमारी उसी दिशा में चल दी। उस नौजवान ने उन छह हजार क्राउन में से तीन हजार क्राउन अपने मालिक को दिये और बाकी बचे तीन हजार क्राउन अपने पास रख लिये। इस पैसे से उसने अपनी एक नयी दूकान खोल ली।

कुछ दूर चलने के बाद राजकुमारी एक पेड़ के पास आयी जिस पर बहुत सारी चिड़ियें बैठी हुई थीं और सब की सब चिड़ियें बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचा रही थी। उन्हीं चिड़ियों में उसको अपना पति दिखायी दे गया।

वह बोली — "प्रिय, मेरे साथ घर चलो।"

पर वह चिड़िया तो हिली भी नहीं। राजकुमारी बेचारी पेड़ पर चढ़ गयी और रो रो कर उससे प्रार्थना करने लगी कि वह घर वापस चले।

उसका रोना और प्रार्थना तो ऐसी थी कि पत्थर भी पिघल जाये। वहाँ और चिड़ियें भी जो बैठी हुई थीं वे भी उसका रोना सुन कर बहुत परेशान हो रहीं थीं।

वे उस चिड़िया से बोलीं — "जाओ न, तुम अपनी पत्नी के साथ घर जाओ। तुम उसके साथ घर क्यों नहीं जाना चाहते?"

पर इस सबका जवाब उस चिड़िया ने ऐसे दिया कि उसने अपनी चोंच से उस राजकुमारी की एक ऑख निकाल ली। पर उसकी पत्नी फिर भी उससे घर चलने की प्रार्थना करती रही और अपनी दूसरी ऑख से रोती रही।

अब उस चिड़िया ने उसकी दूसरी ऑख भी निकाल ली। राजकुमारी रो कर बोली — "अब तो मैं अन्धी हो गयी हूँ। मेहरबानी कर के प्रिय मुझे रास्ता दिखाओ।"

इसके बाद वह चिड़िया दो बार नीचे आयी और उसके दोनों हाथ काट कर अपने माता पिता के महल की छत पर उड़ कर चली गयी। वहाँ जा कर वह एक आदमी के रूप में बदल गयी। सारे महल में खुशियाँ छा गयीं।

उसकी माँ ने उसके कान में फुसफुसाया — "तुमने अच्छा किया जो उस बुरी लड़की को मार दिया।"

इस बीच वह राजकुमारी किसी तरह से रास्ता ढूँढती ढूँढती यह कहते हुए घर चल दी — "अब मेरा क्या होगा। मेरे अब न तो ऑखें हैं और न ही हाथ हैं।"

रास्ते में एक छोटी सी बुढ़िया जा रही थी। उसने उससे पूछ लिया — "क्या बात है बेटी तुम ऐसे क्यों रो रही हो?" राजकुमारी ने उसको अपनी कहानी सुना दी।

वह बुढ़िया मडोना[41] थी। वह बोली — "बेटी अपने हाथ इस फव्वारे के पानी में डालो।" उसने ऐसा ही किया तो उसके हाथ फिर से बढ़ कर पहले की तरह हो गये।

बुढ़िया ने कहा — "अब इस पानी से अपना चेहरा धो लो।" उसने उस फव्वारे के पानी से अपना चेहरा धोया तो उसकी ऑखें भी वापस आ गयीं।

फिर उस बुढ़िया ने उसको एक जादुई छड़ी देते हुए कहा — "लो यह छड़ी ले लो। यह तुमको वह सब कुछ देगी जो भी तुम इससे मॉगोगी।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उस छड़ी से अपने ससुर के महल के सामने एक महल चाहा तो तुरन्त ही वहॉ एक बहुत ही सुन्दर महल खड़ा हो गया। उस महल में अन्दर और बाहर सब जगह हीरे जड़े हुए थे।

उसके कमरों में एक सुनहरी मुर्गी भी अपने बच्चों के साथ घूम रही थी। और उन कमरों की ऊॅची छतों के आस पास बहुत सारी सुनहरी चिड़ियें उड़ रही थीं।

वहॉ सुनहरी पोशाक पहने कई नौकर चाकर और चौकीदार घूम रहे थे। और वह खुद एक सिंहासन पर बैठी हुई थी जिसके ऊपर एक छत्र लगा हुआ था और उसके चारों तरफ मलमल के परदे पड़े हुए थे। इस तरह वह किसी को भी दिखायी नहीं दे रही थी।

[41] Madonna is another name of Mother Mary. Both Christians and Muslims regard her.

जब सुबह हुई तो राजकुमार ने अपने महल के सामने एक और महल देखा। वह उसको बहुत सुन्दर लगा तो वह राजा से बोला — "पिता जी देखिये कितना सुन्दर महल है।"

वह किसी भी तरफ देखता तो उसको उधर ही सुनहरे जानवर घूमते और उड़ते हुए दिखायी देते। उसने सोचा कि ऐसे कौन से यहाँ बड़े आदमी आ गये जिन्होंने रातों रात यह महल बनवा लिया।

उसी समय राजकुमारी खड़ी हुई और उसने परदे में से अपना सिर बाहर निकाला तो राजकुमार तो उसको देखता का देखता ही रह गया।

उसको देखते ही वह बोला — "पिता जी देखिये वह कितनी सुन्दर लड़की है। मुझे उससे शादी करनी है।"

राजा बोला — "हाँ हाँ जाओ। कहने की जरूरत नहीं है कि वह कौन है। तुम क्या सोचते हो कि वह तुम्हारी तरफ देखेगी भी? तुम तो उसकी तरफ देख कर ही अपना समय बर्बाद कर रहे हो।"

लेकिन राजकुमार ने तो अपना मन बना रखा था सो उसने अपनी एक नौकरानी के हाथों सुनहरी कढ़ाई किया हुआ एक कपड़ा उसको भेज दिया। उस राजकुमारी ने उस कपड़े को लिया और उसको अपनी मुर्गी और उसके बच्चों की तरफ उछाल दिया।

नौकरानी घर वापस गयी और राजकुमार को सब बताया। तो राजा और रानी ने उससे कहा — "देखा न हमने तुमसे क्या कहा था। वह तो तुमको बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती।"

राजकुमार बोला — "पर मैं तो उसको पसन्द करता हूँ।" और अबकी बार उसने उसके लिये एक अँगूठी भेजी। वह अँगूठी उस राजकुमारी ने अपनी चिड़ियों की तरफ फेंक दी।

जो नौकरानी इन चीज़ों को ले कर उस महल में गयी थी इन चीज़ों की यह हालत देख कर दोबारा वहाँ जाने में हिचकिचा रही थी।

पर राजकुमार ने भी उम्मीद नहीं छोड़ी थी। बहुत सोचने के बाद उसने एक ताबूत[42] बनवाया। वह उसमें अन्दर लेट गया और अपने नौकरों से कहा कि वह उस ताबूत को उसके पड़ोसी के महल में ले जायें।

वे उस ताबूत को वहाँ ले कर गये। वहाँ जा कर राजकुमारी ने उस ताबूत को खोला तो उसमें राजकुमार को देखा। वह उसके पास आयी और उसको और पास से देखने के लिये उसके ऊपर झुकी।

राजकुमार भी उठा और राजकुमारी की तरफ देखा तो उसने राजकुमारी को पहचान लिया और खुशी से बोला — "अरे तुम तो मेरी पत्नी हो। तुमको यहाँ देख कर मुझे कितनी खुशी हो रही है। चलो घर वापस चलो।"

---

[42] Coffin in which Christians and Muslims keep their dead bodies to bury after death. See its picture above

राजकुमारी ने उसको बड़ी कड़ी निगाहों से देखा और बोली — "क्या तुम भूल गये कि तुमने मेरे साथ क्या क्या किया?"

"प्रिये उस समय मैं जादू के असर में था।"

"पर तुमको उस जादू के असर से निकालने के लिये ही तो मैं तुम्हारे साथ तीन शाम नाची और तुम्हारे माता पिता ने मुझे मारा।"

"अगर तुमने ऐसा न किया होता तो मैं तो फिर एक सॉप ही रह जाता।"

"और जब तुम चिड़िया बन गये तब भी क्या तुम सॉप ही थे? तब तुमने अपनी चोंच से मेरी दोनों ऑखें निकाल लीं और मेरे हाथ घायल कर दिये।"

"अगर मैं यह सब न करता तो फिर मैं एक चिड़िया ही रह जाता।"

अब राजकुमारी ने कुछ सोचा और बोली — "इस तरह तो तुम ठीक थे। चलो हम अब पति पत्नी की तरह से रहते हैं।"

जब राजा और रानी ने पूरी कहानी सुनी तो उन्होंने राजकुमारी से माफी मॉगी। उन्होंने उस राजकुमारी के पिता को भी बुला लिया और फिर एक महीने तक नाच गाना चलता रहा।

8 सोने के अंडे वाला केंकड़ा[43]

एक बार एक राज[44] था जिसके दो बेटे थे। एक बार वह इतना बीमार पड़ा कि काम करने के लायक ही नहीं रहा। उसके इलाज में उसकी सारी बचत खत्म हो गयी पर फिर भी वह ठीक नहीं हुआ।

बचत खत्म होने के बाद उसने अपने घर की चीज़ें बेचनी शुरू कर दीं। यहाँ तक कि उसकी छत में लगे टाइल्स भी बिक गये।

एक दिन जब उसकी आलमारी बिल्कुल खाली पड़ी थी तो वह बोला — "अब मैं शिकार के लिये जाता हूँ देखता हूँ कि शायद मुझे कुछ चिड़ियें ही मिल जायें।"

किस्मत की बात उस दिन उसको एक चिड़िया भी दिखायी नहीं दी।

पर जब वह घर वापस आ रहा था तो उसको एक केंकड़ा दिखायी दे गया जो एक बड़े से पत्थर पर चिपका हुआ था।

उसने उसको ज़िन्दा ही पकड़ लिया और उसको अपने थैले में रख लिया। वह सोचता जा रहा था कि वह इस केंकड़े को अपने बच्चों को खेलने के लिये दे देगा। सो घर जा कर उसने उस केंकड़े

[43] The Crab With the Golden Eggs. Tale No 146. A folktale from Italy from its Calabria area.
[44] Trnslated for the word "Mason" who builds buildings.

को अपने बच्चों को खेलने के लिये दे दिया। वह एक मादा केंकड़ा थी।

बच्चों ने उस मादा केंकड़े को एक छोटे से पिंजरे में बन्द कर दिया। अगली सुबह उन्होंने देखा कि उस मादा केंकड़े ने तो एक अंडा दिया है। वे उस अंडे को उठा कर अपने पिता के पास ले गये।

उस अंडे को देखते ही वह राज बोला कि "अरे यह तो सोने का अंडा है।" वह तुरन्त ही बाजार गया और उस सोने के अंडे को बेच आया। वह अंडा छह डकैट[45] का बिका।

वह मादा केंकड़ा हर रात एक सोने का अंडा देती थी और हर सुबह वह राज उस अंडे को बाजार में बेच आता। कुछ दिनों में ही वह राज बहुत अमीर हो गया क्योंकि अब तो उसकी छह डकैट रोज की आमदनी थी।

इस राज के बराबर में एक दर्जी रहता था। राज की अमीरी देख कर उसने सोचा कि "मेरी समझ में यह नहीं आता कि यह इतना गरीब राज कुछ दिनों में ही इतना अमीर कैसे बन गया।"

कुछ दिनों तक उसके ऊपर नजर रखने के बाद उसने राज के अमीर बनने का राज़ जान ही लिया। उसकी अमीरी का राज़ था एक मादा केंकड़ा।

[45] Ducat – a currency used in those days in Italy. Shakespeare's "The Merchant of Venice" also mentions this currency. That drama is set in Italy of 1595.

इस दर्जी के तीन बच्चे थे – दो लड़के और एक लड़की। उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी की शादी इस राज के लड़के से कर देता हूॅ। सो दोनों की सगाई कर दी गयी।

दर्जी उस राज से बोला — "मैं अपनी बेटी का दहेज तैयार कर रहा हूॅ पर तुम भी अपने केंकड़े को अपने बेटे के दहेज में देने के लिये तैयार रखना।"

राज ने जवाब दिया — "जब तक वह मेरे बेटे का दहेज है वह तैयार है।"

जब दर्जी को केंकड़ा मिल गया तो उसने केंकड़े को ध्यान से देखा तो उसने देखा कि उसके पेट पर तो कुछ लिखा था।

अब वह तो दर्जी था सो वह तो लिखना पढ़ना जानता था सो उसने पढ़ा – "जो कोई भी केंकड़ा और उसका खोल खायेगा वह एक दिन राजा बन जायेगा। जो कोई केंकड़ा और उसके पैर खायेगा उसको हर सुबह अपने तकिये के नीचे पैसों का एक थैला मिलेगा।"

इसको पढ़ कर दर्जी ने सोचा मैं इस केंकड़े को अपने दोनों बेटों को खिला देता हूॅ। एक को केंकड़ा और उसका खोल और दूसरे को केंकड़ा और उसके पैर। बस फिर दोनों ही अपने अपने तरीके से अमीर हो जायेंगे।

उसने उस केंकड़े को मार कर आग पर भूनने के लिये रख दिया और अपने बेटों को बुलाने चला गया।

जैसे ही वह अपने बेटों को बुलाने के लिये वहाँ से गया तो उस राज के दोनों बेटे वहाँ आ गये जिसकी वह मादा केंकड़ा थी। केंकड़े को आग पर भुनते देख कर उनके मुँह में पानी आ गया।

उन्होंने आपस में कहा कि "चलो हम लोग इसे खा लेते हैं। तुम इसका खोल खा लो और मैं इसके पैर खा लेता हूँ।" और दोनों ने उसके खोल और पैर खा लिये।

जब दर्जी वापस आया तो उसने देखा कि उसकी वह मादा केंकड़ा तो जा चुकी है। यह देख कर दर्जी बहुत दुखी हुआ और उसने अपनी बेटी की शादी तोड़ दी।

यह देख कर राज के बेटों को लगा कि उन्होंने यह सब क्या कर दिया। इससे दुखी हो कर उन्होंने सोचा कि उनको घर छोड़ कर चले जाना चाहिये और दुनियाँ में जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। ऐसा सोच कर वे दोनों घर छोड़ कर चले गये।

वे जब पहले शहर में आये तो वहाँ रात को एक सराय में रुके। सुबह को जब वे उठे तो छोटे भाई ने अपने तकिये के नीचे पैसों से भरा एक थैला पाया।

वह अपने बड़े भाई से बोला — "भैया, यहाँ तो इन लोगों ने हमको चोर ही समझ लिया है। लगता है हमको ललचाने के लिये इस सराय की मालकिन ने हमारे तकिये के नीचे यह पैसों का थैला रख दिया है। और अब वह हमारा चोरी का नाम लगा देगी।"

इतना कह कर वह उस पैसों के थैले को ले कर उस सराय की मालकिन के पास गया और बोला — "मैम हम चोर नहीं हैं। हम आपके इस थैले को वापस करने आये हैं और हमारा इस थैले को तुमको वापस करना ही इस बात को साबित करता है कि हमने इस पैसे को नहीं चुराया है।"

सराय की मालकिन को तो पैसों का थैला देख कर जैसे बिजली का सा झटका लगा।

उसने अपना आश्चर्य छिपा कर पैसों का वह थैला उस लड़के से ले लिया और बोली — "हॉ यह थैला तो मेरा ही है। मेरी यह बहुत बुरी आदत है कि मैं पैसा कहीं भी रखा छोड़ देती हूॅ और फिर भूल जाती हूॅ। तुमने अच्छा किया कि इसे मुझे वापस कर दिया।"

अगले दिन उस छोटे भाई के तकिये के नीचे से फिर एक पैसों का थैला निकला तो वह बोला — "लगता है कि वे हमारे ऊपर अभी भी शक कर रहे हैं इसलिये अच्छा हो अगर हम यहॉ से कहीं और चले जायें।"

सो उसने वह थैला भी उस सराय की मालकिन को दे दिया। मालकिन बोली — "मै तुमको विश्वास दिलाती हूॅ कि मैंने इसको वहॉ किसी मतलब से नहीं छोड़ा। बस मैं ज़रा भूल ही जाती हूॅ। थैला वापस करने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

उन भाइयों ने उससे अपना बिल पूछा, उसको पैसे दिये और वहॉ से चल दिये। अगली रात उन्होंने एक जंगल में गुजारी जहॉ वे

जमीन पर सोये। वहाँ उनको एक पत्थर का तकिया इस्तेमाल करना पड़ा।

पर अगले दिन फिर उस पत्थर के पास एक पैसों का थैला पड़ा था। उसको देख कर छोटा भाई बोला — "इससे तो यह पता चलता है कि वह सराय की मालकिन हमें अभी भी नहीं छोड़ रही। वह हमारे पीछे यहाँ तक आ पहुँची। इस बार हम उसको यह पैसे वापस नहीं देंगे। तभी वह सीखेगी।"

पर जब उसने देखा कि वह कहीं भी सोये उसको हर दिन सुबह को यह थैला मिल रहा था तब उसकी यह समझ में आया कि वह उसकी अच्छी किस्मत से मिल रहा था न कि सराय की मालकिन से।

चलते चलते वे दोनों भाई एक चौराहे पर आये तो दोनों ने वहाँ से अपने अपने रास्ते अलग अलग कर लिये।

बड़े भाई ने छोटे भाई को एक बोतल दी और छोटे भाई ने बड़े भाई को एक चाकू देते हुए कहा — "यह चाकू लो भैया और जब तक यह चमकता रहेगा तब तक मेरी ज़िन्दगी को कोई खतरा नहीं है। पर जब इसमें जंग लगने लगे तो समझो कि मैं मर गया।"

उन्होंने पैसे आपस में बाँटे, एक दूसरे को विदा कहा और अपने अपने रास्ते चल दिये।

चलते चलते बड़ा भाई एक शहर में आ गया। वहाँ का राजा मर गया था सो मन्त्रियों ने एक घोषणा की कि "हमको अब ऐसा

करना चाहिये कि हमको एक कबूतर छोड़ना चाहिये और जिसके सिर पर भी वह बैठेगा हम उसको ही अपना राजा बनायेंगे।"

अब हुआ क्या कि जब उन लोगों ने वह कबूतर छोड़ा तो वह उस बड़े भाई के सिर पर जा कर बैठ गया। तुरन्त ही उसने अपने आपको बहुत सारी गाड़ियों, सेना और बाजे से घिरा हुआ पाया।

पहले तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा था। पर जब बाद में उसको पता चला कि वह तो अब उस शहर का राजा बन गया है तो वह बहुत खुश हुआ।

वे सब मिल कर उसको महल ले गये। उसको राजा के कपड़े पहनाये, ताज पहनाया और उसको वहाँ का राजा बना दिया। अब वह वहाँ का राजा बन कर राज करने लगा।

इधर छोटा भाई एक और शहर में आ पहुँचा। वहाँ उसने एक सराय में कमरा लिया। यह सराय एक राजकुमारी के महल के सामने थी। यह राजकुमारी अभी कुँआरी थी और अपना सारा दिन अपने महल के छज्जे पर बैठ कर गुजारती थी।

एक दिन उसने इस छोटे भाई को सराय के छज्जे पर देख लिया तो वह उससे बात करने लगी। एक में से एक बात निकलती ही जाती थी और उनकी बातें खत्म होने पर ही नहीं आती थीं।

आखिर राजकुमारी बोली — "अगर तुम मेरे घर आना पसन्द करो तो हम लोग यहाँ कुछ आनन्द करें?"

"ओह यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी।" कह कर वह राजकुमारी के पास चला गया।

जब वह राजकुमारी के पास पहुँच गया तो राजकुमारी बोली — "आओ ताश खेलें?" सो उन लोगों ने ताश खेलना शुरू कर दिया।

पर राजकुमारी हर बार जीत जाती थी और इस तरह वह लड़का हजारों डकैट हार गया।

पर इससे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसको पैसे की कमी नहीं पड़ रही थी। यह उसके उस पैसों के थैले का कमाल था जो उसको हर सुबह अपने तकिये के नीचे मिलता था।

यह सब देख कर वह राजकुमारी बड़े आश्चर्य में थी कि वह इतना अमीर कैसे हो सकता था।

उसने एक टोना टोटका करने वाले से पूछा तो उसने राजकुमारी को बताया कि उस अजनबी के शरीर के अन्दर एक जादू है जिसकी वजह से उसका पैसा कभी खत्म नहीं होता।

उसने राजकुमारी से यह भी कहा कि उसके अन्दर एक आधा केंकड़ा है जिसकी वजह से हर सुबह उसको पैसों का एक थैला अपने तकिये के नीचे रखा मिल जाता है।

राजकुमारी ने पूछा — "उस जादू को मैं अपने लिये कैसे ले सकती हूँ?"

वह टोने टोटके वाला बोला — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करना। यह एक दवा लो और इस दवा को उसकी शराब के गिलास में डाल देना और वह शराब उसको पिला देना।

यह दवा उसके पेट में जा कर जो कुछ भी उसके पेट में होगा वह सब बाहर निकाल कर ले आयेगी – वह आधा केंकड़ा भी। उसको तुम बहुत सॅभाल कर साफ कर लेना और निगल जाना।

फिर वह पैसों का थैला बजाय उसके तकिये के नीचे से तुम्हारे तकिये के नीचे से निकलना शुरू हो जायेगा।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया और अब वह पैसों का थैला बजाय लड़के के तकिये के नीचे से उसके तकिये के नीचे से निकलना शुरू हो गया।

वह लड़का बेचारा फिर से गरीब हो गया। अब उसके पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी सब चीज़ें बेच दे और फिर से दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े।

वह चलता रहा चलता रहा और चलते चलते भूख से इतना कमजोर हो गया कि वह आगे नहीं जा सका और एक घास के मैदान में आ कर गिर गया।

वहॉ कम से कम उसके पास कुछ तो था खाने के लिये। उसने हाथ बढ़ा कर थोड़ी सी घास तोड़ी और खा ली।

इत्तफाक से वह घास चिकोरी[46] की एक जाति थी और जैसे ही उसने वह घास खायी वह गधा बन गया। उसने सोचा कम से कम अब मैं भूखा नहीं रहूँगा क्योंकि अब मैं घास खा सकता हूँ।

उसके बाद उसने एक पौधा और खाया जो देखने में बन्द गोभी जैसा लगता था। जैसे ही उसने उस पौधे को खाया तो लो, वह तो फिर से आदमी बन गया। उसने सोचा कि ये पौधे तो मेरा काम बना देंगे।

उसने उन दोनों घासों में से थोड़ी थोड़ी घास ले ली जिन्होंने उसको पहले गधे में बदल दिया था और फिर गधे से आदमी में बदल दिया था।

फिर उसने एक माली का रूप रखा और उसी राजकुमारी की खिड़की के नीचे इन घासों को बेचने चल दिया। उसने आवाज लगायी — "बढ़िया वाली चिकोरी ले लो बढ़िया वाली चिकोरी।"

राजकुमारी ने उसको सुना और उसके हाथ में मुलायम चिकोरी देखी तो उसको बुलाया और उस चिकोरी को तुरन्त ही चखा। उसको खाते ही वह एक गधा बन गयी।

---

[46] Chicory – is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee. See the picture of its leaves above.

उस लड़के ने उसके ऊपर तुरन्त ही एक गद्दी रखी और उसको महल की सीढ़ियों से नीचे की तरफ ले चला। कोई यह शक भी नहीं कर सका कि वह राजकुमारी थी।

वह उस गधे पर सवार हो कर एक ऐसी जगह ले गया जहाँ बहुत सारे आदमी काम कर रहे थे। उसने उन लोगों से कहा कि वह काम की तलाश में घूम रहा था सो अगर वे दे सकते हैं तो वे उसको कुछ काम दे दें।

उन्होंने उसको अपने यहाँ काम पर रख लिया और वह उस गधे पर दुगुने बोझ के पत्थर लाद कर लाने लगा। बोझ की वजह से वह गधा लड़खड़ा जाता था और उसके लड़खड़ाने पर वह उसको खूब मारता था।

लोग उससे पूछते कि वह उस गधे के साथ इतनी सख्ती का बर्ताव क्यों करता था तो वह उनको जवाब देता "यह मेरा अपना मामला है। तुमको इसमें बीच में बोलने की जरूरत नहीं है।"

यह देख कर उन्होंने राजा से शिकायत की तो राजा ने उसको अपने दरबार में बुला भेजा। उसने भी उससे पूछा कि वह उस गधे के साथ इतना बुरा बर्ताव क्यों कर रहा था। लड़के ने जवाब दिया "क्योंकि इसके साथ ऐसा ही बर्ताव करना चाहिये।"

तभी उसने देखा कि उस राजा की कमर से एक चाकू लटका हुआ है। लो और यह चाकू तो वही चाकू था जो उसने अपने बड़े भाई को दिया था।

छोटा भाई बोला — "पहले मेरा वह पैसा वापस करो जो मैंने तुमको चौराहे पर दिया था।"

राजा बोला — "एक राजा से इस तरह से तुम्हारी बात करने की हिम्मत कैसे हुई?"

"तो फिर मुझे तुमसे कैसे बात करनी चाहिये? मैं तुमको पहचान गया हूँ। तुम मेरे भाई हो। यह देखो यह बोतल जो तुमने मुझे दी थी। और वह देखो मेरा दिया हुआ चाकू तुम्हारी कमर में।"

इस तरह दोनों भाइयों ने आपस में एक दूसरे को पहचान लिया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये। फिर छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को उस गधे के बारे में बताया जो कि सचमुच में एक राजकुमारी थी।

राजा ने पूछा — "अगर यह तुम्हारा आधा केंकड़ा वापस कर दे तो क्या तुम इसको राजकुमारी में बदल दोगे?"

"हाँ।"

"तो तुम उसको राजकुमारी में बदल दो।"

सो उस छोटे भाई ने उस गधे को वही दवा दी जो पहले राजकुमारी ने उसको दी थी। उस गधे ने सब कुछ उगल दिया – आधा केंकड़ा भी।

उसके बाद उस छोटे भाई ने उसको वह घास खिलायी जो देखने में बन्द गोभी जैसी लगती थी और जिसको खा कर वह फिर से राजकुमारी बन गयी। उस राजकुमारी से उसने फिर शादी कर

ली। राजा ने अपने छोटे भाई को अपना जनरल बना लिया और फिर सब सुख से रहने लगे।

9 निक मछली[47]

एक बार मसीना[48] में एक स्त्री रहती थी जिसके निक[49] नाम का एक बेटा था। वह अपना सारा समय चाहे दिन हो या रात समुद्र में तैर कर ही गुजारता था।

उसकी मॉ उसको बस समुद्र के किनारे से ही आवाज देती रहती थी — "निक, पानी से बाहर आ, तू कोई मछली नहीं है जो हर समय पानी में ही रहता है।"

पर वह उसकी बात बिल्कुल नहीं सुनता और आगे तक तैरता चला जाता। इतना चिल्लाते चिल्लाते निक की मॉ की ऑतें खराब हो गयीं।

एक बार जब उसकी मॉ उसको समुद्र में से बाहर बुलाने के लिये बहुत देर तक चिल्लाती रही तो उसकी आवाज भी फटने लगी।

फिर भी वह जब किनारे पर नहीं आया तो उसके मुॅह से निकला — "निक, जा तो तू फिर मछली ही बन जा।"

शायद स्वर्ग उस दिन सुन रहा था सो उसका कहा सच हो गया। देखते ही देखते निक आधा मछली और आधा आदमी बन

---

[47] Nick Fish. Tale No 147. A folktale from Italy from its Palermo area.

[48] Messina – a port city in Italy on its Sicily Island. See its map above.

[49] Nick – the name of the boy

गया। उसके पैर बतख की तरह जाल वाले थे और उसका गला मेंढक जैसा था।

उसके बाद तो निक ने फिर कभी किनारे पर कदम ही नहीं रखा। यह बात निक की माँ के दिल को भी इतनी लगी कि वह कुछ ही दिनों में मर गयी।

अब यह बात राजा के कानों तक पहुँची कि मसीना के समुद्र में एक ऐसा जानवर है जो आधा मछली है और आधा आदमी है।

यह सुन कर राजा ने अपने सब नाविकों को चेतावनी दे दी कि जो कोई नाविक निक को देखे तो वह उसको पकड़ कर उसके पास ले आये वह उससे बात करना चाहता था।

एक दिन एक नाविक खुले समुद्र की तरफ बढ़ता जा रहा था कि उसने निक को समुद्र में तैरते हुए देखा। वह वहीं नाव के पास ही तैर रहा था।

उसने निक से कहा — "मसीना के राजा तुमसे मिलना चाहते हैं।" निक तुरन्त ही राजा के महल के पास तक तैर गया।

राजा मुस्कुराते हुए उसके पास आया और उससे बोला — "निक मछली, तुम तो बहुत ही अच्छे तैराक हो। मैं चाहता हूँ कि तुम सिसिली टापू[50] के चारों तरफ तैरो और मुझे बताओ कि समुद्र कहाँ सबसे ज़्यादा गहरा है और वहाँ पर कौन सी ऐसी जगह ऐसी है जो देखने के काबिल है।"

[50] Sicily Island is in the Mediterranean Sea in the South-West of Italy. See it in the map.

राजा के हुक्म से निक मछली सिसिली टापू के चारों तरफ तैरा और थोड़े ही समय में राजा के पास वापस आ गया।

उसने बताया कि सारे समुद्र के नीचे उसने पहाड़, घाटियाँ, गुफाऐं, और बहुत सारे किस्म की मछलियाँ देखीं। वह केवल उस जगह डरा जब वह लाइटहाउस[51] के पास से निकला क्योंकि वहाँ वह समुद्र की तली नहीं देख सका।"

राजा ने पूछा — "तो फिर मसीना किसके ऊपर बना हुआ है? यह तुमको वहाँ जा कर देखना है।"

निक वहाँ फिर गया और सारे दिन पानी के अन्दर रहा। वहाँ से लौट कर उसने राजा से कहा — "राजा साहब, मसीना एक चट्टान पर बना हुआ है और वह चट्टान तीन खम्भों पर रखी हुई है। एक खम्भा तो "आवाज" है दूसरा खम्भा है "लकड़ी का एक टूटा हुआ टुकड़ा" अीर तीसरा है "टूटा हुआ"।

ओ मसीना ओ मसीना एक दिन तुम बहुत पतले हो जाओगे

राजा को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने निश्चय किया कि वह निक को नैपिल्स[52] ले जायेगा जहाँ वह ज्वालामुखी वाली समुद्र की तली देखेगा।

---

[51] Lighthouse – is tall tower on the seashore showing light to the ships. They are a guide point for ships.

[52] Naples is a historical port town of Italy situated on the Mediterranean Sea shore on the Western side of South of Italy.

निक वहाँ भी गया और वहाँ से आ कर राजा को बताया कि वहाँ उसको ठंडा पानी मिला, फिर गर्म पानी मिला और कुछ जगह पर उसको ताजा पानी के स्रोत भी दिखायी दिये।

राजा को यह सब समझ में नहीं आया तो निक ने राजा से दो बोतलें माँगीं – एक गर्म पानी से भरी हुई और एक ताजा पानी से भरी हुई।

पर राजा यह सुन कर बहुत दुखी था कि उसके लाइटहाउस के नीचे की जगह के नीचे तो तली ही नहीं थी। वह निक मछली को वापस मसीना ले गया और उससे कहा कि वह यह देख कर उसे बताये कि लाइटहाउस के नीचे कितनी गहरायी थी।

निक फिर पानी के नीचे गया और दो दिन तक वहाँ रहा। जब वह सतह पर लौटा तो उसने राजा को बताया कि उसको तो वहाँ उसकी तली ही दिखायी नहीं दी।

इसकी वजह यह थी कि नीचे की एक चट्टान धुँए का एक खम्भा सा ऊपर फेंक रही थी और उससे सारा पानी धुँधला हो रहा था।

अब राजा की उत्सुकता और बढ़ गयी। वह बोला — "तुम लाइटहाउस से नीचे कूद मार कर देखो।"

असल में यह लाइटहाउस भी धरती से निकली हुई एक चट्टान की नोक पर खड़ा था। पुराने समय में यहाँ एक आदमी रहता था जो जहाजों को समुद्र में ज्वार आने की खबर बिगुल बजा कर और

एक झंडा लहरा कर दिया करता था ताकि वे गहरे समुद्र से दूर रहें।

निक मछली वहॉ से कूदा। राजा ने उसका एक दिन इन्तजार किया, दो दिन इन्तजार किया, फिर तीन दिन, पर निक का कोई पता नहीं था। अन्त में वह एक पीले पड़े भूत की सी शक्ल के साथ बाहर निकला।

राजा ने पूछा — "क्या बात है निक, क्या हुआ?"

"मैं तो डर के मारे मर ही गया था। मैंने वहॉ एक इतनी बड़ी मछली देखी जिसमें एक पूरा का पूरा जहाज आ जाये। वह मुझे न निगल ले इसलिये मैं मसीना को थामने वाले तीन खम्भों में से एक खम्भे के पीछे छिप गया।"

उसका यह हाल सुनते समय राजा का मुॅह खुला का खुला रह गया। पर उसकी यह उत्सुकता तभी भी बनी रही कि लाइटहाउस के नीचे कितनी गहराई थी।

पर निक ने मना कर दिया कि वह अब वहॉ नीचे जाने को तैयार नहीं था। वह बोला — "योर मैजेस्टी, मैं उधर जाने में बहुत डरता हूॅ। मैं वहॉ जाने को तैयार नहीं हूॅ।"

जब राजा उसको फिर से जाने को नहीं मना सका तो उसने अपना रत्न जड़ा ताज उतारा और उसको समुद्र में फेंक दिया और बोला — "निक जाओ, मेरा ताज ले कर आओ।"

"मैजेस्टी, यह तो बड़ा अच्छा विचार है। एक राज्य का ताज।"

राजा बोला — "निक, यह दुनियाँ में अपने किस्म का एक ही ताज है जाओ और उसको ले कर आओ।"

निक बोला — "अगर आपका हुक्म है तो मैं उसे जरूर ले कर आऊँगा। पर मेरा मन कहता है कि अबकी बार मैं अगर नीचे गया तो मैं फिर वापस नहीं आ पाऊँगा।

मुझे थोड़ी सी मसूर दे दीजिये। अगर मैं बच गया तब तो मैं ऊपर आ जाऊँगा पर अगर आप मसूर ऊपर आती देखें तो समझ लीजियेगा कि मैं फिर कभी नहीं लौटूँगा।"

राजा ने उसको थोड़ी सी मसूर दे दी और निक समुद्र में कूद गया। उसके जाने के बाद राजा ने उसका बहुत इन्तजार किया। काफी बाद में समुद्र की सतह पर मसूर तैरती नजर आयी पर लोग निक मछली के वापस आने का अभी तक इन्तजार कर रहे हैं।

10 बदकिस्मत[53]

यह कहानी इटली में कुछ ऐसे कही जाती है – बहुत दिनों पुरानी बात है कि एक राजा और उसकी रानी के सात बेटियाँ थीं। एक बार किसी राजा ने उस राजा पर हमला कर दिया, लड़ाई हुई और लड़ाई में वह राजा हार गया।

दुश्मन राजा उसको पकड़ कर ले गया और उसकी रानी और सातों बेटियों को वहीं छोड़ गया। अब वे सब बेचारे अकेले रह गये।

रानी ने वह महल छोड़ दिया और वह अपनी बेटियों को ले कर एक बहुत छोटे से मकान में चली गयी। उनका समय खराब था इसलिये जब कभी उनको खाना मिल जाता था तो वह उनके लिये बड़ी खुशकिस्मती का दिन होता।

एक दिन उनके घर के पास एक फल बेचने वाला आया तो रानी ने उसको कुछ अंजीर खरीदने के लिये रोक लिया। जब वह अंजीर खरीद रही थी तो वहाँ से एक बुढ़िया जा रही थी। उस बुढ़िया ने रानी से भीख माँगी।

[53] Misfortune. Tale No 14. A folktale from Italy from its Palermo area.

रानी बोली — "ओह, काश मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकती। पर मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकती। मैं तो खुद ही बहुत गरीब हूँ।"

बुढ़िया ने पूछा — "तुम कैसे गरीब हो गयीं?"

रानी बोली — "तुम्हें नहीं मालूम? मैं स्पेन की रानी हूँ। मेरे पति के ऊपर हमला हो गया था और वह हार गये। बस तभी से मैं गरीब हो गयी।"

"ओह बेचारी तुम। पर क्या तुमको मालूम है कि तुम्हारे साथ यह बुरा क्यों हो रहा है? तुम्हारे पास तुम्हारी एक बेटी है जिसकी शुरूआत ही खराब हुई है। जब तक वह तुम्हारे घर में है तुम लोग कभी फल फूल नहीं सकते।"

"कहीं तुम यह तो नही कहना चाहतीं कि मैं अपनी एक बेटी को कहीं बाहर भेज दूँ?"

"मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मेरा यही मतलब है। और तुम्हारी बदकिस्मती का यही एक हल है।"

"यह बदकिस्मत लड़की कौन सी है?"

"यह वह लड़की है जो अपने हाथ एक के ऊपर एक रख कर सोती है। आज की रात जब तुम्हारी बेटियाँ सो रहीं हो तो एक मोमबत्ती लेना और तब तुम उन सबको देखना। तुम्हारी जो भी बेटी

हाथ पर हाथ रखे सो रही हो उसको तुम बाहर भेज देना तभी तुम अपना खोया हुआ राज्य वापस पा सकोगी।”

यह सुन कर रानी ने वही करने का विचार किया जो उस बुढ़िया ने कहा था। वह आधी रात को उठी, उसने मोमबत्ती जलायी और अपनी सातों बेटियों को देखने चली। वे सब सो रही थीं।

कुछ हाथ मोड़े सो रही थीं। किसी के हाथ उसके गाल के नीचे रखे थे तो किसी के हाथ उसके तकिये के नीचे रखे थे।

देखते देखते वह अपनी आखिरी बेटी के पास आयी जो उसकी सबसे छोटी बेटी थी। वह भी सो रही थी। उसने देखा कि वह अपने हाथों को एक के ऊपर एक रख कर सो रही थी।

उसको इस हालत में सोता देख कर वह बहुत दुखी हो गयी और रो पड़ी। वह अपनी उस सबसे छोटी बेटी को बहुत प्यार करती थी। उसको घर से बाहर निकालने की तो वह सोच भी नहीं सकती थी पर क्या करती।

वह धीरे से बुदबुदायी — “क्या करूँ बेटी तुझे मुझे घर से बाहर निकालना ही पड़ेगा।”

जैसे ही उसने यह कहा कि तभी उसकी वह लड़की जाग गयी। उसने देखा कि उसकी माँ एक जलती हुई मोमबत्ती लिये खड़ी है और रो रही है।

उसने आश्चर्य से पूछा — “क्या हुआ माँ? तुम क्यों तो यहाँ खड़ी हो और क्यों रो रही हो?”

“कुछ नहीं बेटी। आज एक बुढ़िया भीख माँगने आयी थी। उसने कहा कि हम तभी खुशहाल होंगे जब हम अपनी उस बेटी को घर से बाहर भेज देंगे जो एक हाथ पर दूसरा हाथ रख कर सोती हो। और वह बदकिस्मत बेटी तुम हो।”

बेटी बड़ी सादगी से बाली — “अरे, तो क्या तुम इसी बात पर रो रही हो? मैं ज़रा कपड़े पहन लूँ माँ, मैं अभी घर से बाहर चली जाती हूँ।”

उसने तुरन्त अपने कपड़े पहने, अपना कुछ जरूरी सामान एक पोटली में बाँधा और घर छोड़ कर चल दी। रानी उसको देखती रह गयी कि उसकी वह बेटी कितनी आसानी से अपना घर छोड़ कर चली गयी।

काफी चलने के बाद वह लड़की एक ऐसे खाली मैदान में आ गयी जहाँ केवल एक मकान खड़ा हुआ था। वह उस मकान तक गयी तो उसने उस मकान के अन्दर उसने कुछ बुनने कातने की आवाज सुनी। उसने झाँक कर देखा तो देखा कि कुछ स्त्रियाँ वहाँ कपड़ा बुन रही थीं।

उसको दरवाजे पर खड़ा देख कर उन बुनने वाली स्त्रियों में से एक स्त्री ने उससे कहा — “आओ अन्दर आ जाओ वहाँ बाहर क्यों खड़ी हो।” लड़की अन्दर चली गयी।

“तुम्हारा नाम क्या है?”

“बदकिस्मत।”

“क्या तुम हमारे साथ काम करना पसन्द करोगी?”

“जरूर।”

उन्होंने उसको घर में झाड़ू लगाने और घर के दूसरे छोटे मोटे काम करने के लिये बता दिये।

फिर वे बोलीं “सुनो ओ बदकिस्मत, आज रात हम बाहर जा रहे हैं। जब हम चले जायेंगे तो हम बाहर से दरवाजा बन्द कर जायेंगे। तो जब हम चले जायें और हम बाहर से भी दरवाजा बन्द कर जायें तो तुम भी अन्दर से ताला लगा लेना।

जब हम सुबह को वापस आयेंगे तब हम बाहर से अपना दरवाजा खोल लेंगे और तुम हमारे लिये अन्दर से दरवाजा खोल देना।

तुम्हारा काम यहाँ यह है कि कोई भी हमारी सिल्क या बेलें या हमारा बुना हुआ कपड़ा चोरी न करे और उन्हें नष्ट न करे, बस।” इतना कह कर वे चली गयीं।

जब आधी रात हुई तो बदकिस्मत ने कैंची चलने की आवाज सुनी। उसने तुरन्त एक मोमबत्ती जलायी और उसको हाथ में ले कर कपड़ा बुनने की जगह चली।

वहॉ उसने देखा कि एक स्त्री कैंची से कपड़ा बुनने की मशीन से सुनहरा कपड़ा काट रही थी। उसको लगा कि उसकी बदकिस्मती यहॉ भी उसके पीछे पीछे चली आयी है।

सुबह को उसकी मालकिनें लौटीं। उन्होंने बाहर से दरवाजा खोला और इस लड़की ने अन्दर से दरवाजा खोला।

जैसे ही वे अन्दर आयीं तो उनकी निगाहें फर्श पर पड़े कपड़े के टुकड़ों पर पड़ी तो वे उस पर चिल्लायीं — “अरी ओ बेशर्म, क्या तुम इस तरह से हमारी भलाई का बदला हमको दोगी? चली जाओ यहॉ से। तुमको एक काम दिया था करने के लिये और वह भी तुमसे हुआ नहीं।”

और यह कह कर उन्होंने उसको घर के बाहर निकाल दिया।

वह लड़की बेचारी फिर चल दी। गॉव गॉव होते हुए अबकी बार वह एक शहर में आ पहुॅची। वहॉ वह एक दूकान के सामने रुकी जहॉ एक स्त्री डबल रोटी, सब्जियॉ और शराब आदि बेच रही थी।

वहॉ जा कर उसने भीख मॉगी तो उस स्त्री ने उसको थोड़ी सी रोटी और एक गिलास शराब दे दी।

तभी उस दूकान का मालिक लौटा तो उसको उस लड़की पर तरस आ गया। उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसे रात को अपनी दूकान में बोरियों के ऊपर सोने दे। दूकानदार और उसकी

पत्नी ऊपर सो गये और वह बदकिस्मत उस रात दूकान में बोरियों पर सो गयी। ।

रात में पति पत्नी ने नीचे कुछ आवाज सुनी तो वे लोग आवाज सुन कर नीचे यह देखने के लिये दौड़े कि नीचे क्या हो रहा था। उन्होंने देखा कि शराब की बोतलों की डाट[54] खुली पड़ी है और उन बोतलों की शराब सारी दूकान में बह रही थी।

फिर वे लड़की को ढूँढने लगे तो दूकानदार ने देखा कि वह तो डरी हुई बोरों के ऊपर बैठी हुई है जैसे उसने कोई बुरा सपना देखा हो।

वह उस पर चिल्लाया — "ओ बेशर्म, तूने ही यह सब किया है। तू ही इस सबकी जिम्मेदार है। निकल जा यहाँ से।"

यह कह कर उसने एक डंडी उठायी और उससे उसको मार मार कर बाहर निकाल दिया।

बिना जाने कि अब वह कहाँ जाये वह बदकिस्मत रोती हुई वहाँ से दौड़ ली। दौड़ते दौड़ते उसको सुबह हो गयी। सुबह को उसे एक स्त्री मिली जो कपड़े धो रही थी। वह वहाँ खड़े हो कर इधर उधर देखने लगी।

वह स्त्री उस लड़की को इधर उधर देखते हुए बोली — "तुम क्या देख रही हो बेटी?"

"मैं रास्ता भूल गयी हूँ माँ जी।"

---

[54] Translated for the word "Cork".

"क्या तुम कपड़े धो सकती हो और उनको इस्तरी कर सकती हो?"

"हॉ।"

"तब तुम रुक जाओ। मैं इन कपड़ों को साबुन लगाती जाती हूँ तुम इनको धोती जाओ।"

वह लड़की उन साबुन लगे कपड़ों को धोती गयी और सुखाती गयी। जब वे सूख गये तो उसने उनको मरम्मत करने, कलफ लगाने और प्रेस करने के लिये इकट्ठा कर दिये।

ये कपड़े राजकुमार के थे। जब राजकुमार ने अपने कपड़े देखे तो वह यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसके कपड़े कितने अच्छे तरीके से तैयार किये गये थे।

वह उस धोबिन से यह कहे बिना न रह सका — "फ्रैन्सिस्का[55], तुमने पहले तो कभी इतने अच्छे तरीके से मेरे कपड़े नहीं सजाये। मुझे लगता है कि मुझे तुमको कुछ इनाम देना चाहिये।" और उसने उसको दस सोने के सिक्के दे दिये।

फ्रैन्सिस्का ने वह पैसे उस बदकिस्मत के कपड़ों पर और डबल रोटी बनाने के लिये एक बोरा आटा खरीदने पर खर्च कर दिये। उसने उस आटे की दो डबल रोटियॉ बनायीं जो ॲगूठी की शक्ल की थीं और उनमें सौंफ और तिल[56] पड़े थे।

[55] Francisca - the name of the washerwoman

[56] Translated for the words "Anise seeds and Sesame seeds"

उसने वे दोनों डबल रोटियाँ उस लड़की को देते हुए कहा — "इनको तुम समुद्र के किनारे ले जाओ और वहाँ जा कर मेरी किस्मत को इस तरीके से पुकारना –

"हैलोओओओ। ओ फ्रैन्सिस्का की किस्मत" ऐसा तीन बार पुकारना। तीसरी बार पुकारने पर मेरी किस्मत वहाँ आ जायेगी। तुम उसको यह एक गोल डबल रोटी और मेरी नमस्ते दे देना।

तब उससे यह पूछना कि तुम्हारी किस्मत कहाँ है। और जब तुम्हारी किस्मत आ जाये तो उसके साथ भी ऐसा ही करना।"

वह बदकिस्मत धीरे धीरे समुद्र के किनारे की तरफ चली। वहाँ जा कर उसने जैसा उस धोबिन ने उससे कहा था उसी तरीके से उसकी किस्मत को पुकारा –

"हैलोओओओ। ओ फ्रैन्सिस्का की किस्मत। हैलोओओओ। ओ फ्रैन्सिस्का की किस्मत। हैलोओओओ। ओ फ्रैन्सिस्का की किस्मत।"

जैसे ही उसने तीसरी बार उसको पुकारा फ्रैन्सिस्का की किस्मत बाहर आ गयी।

उसने उसे धोबिन का सन्देश दिया और उसकी गोल वाली डबल रोटी दी फिर उससे पूछा — "ओ फ्रैन्सिस्का की किस्मत, क्या आप मुझे मेरी किस्मत के बारे में कुछ बताने की मेहरबानी करेंगीं।"

"सुनो, तुम यह खच्चर वाला रास्ता पकड़ कर इस पर चलती चली जाओ जब तक तुम एक भट्टी तक न पहुँच जाओ। भट्टी के पास एक गड्ढा है जिसके पास एक बुढ़िया जादूगरनी बैठती है।

बहुत ही नम्रता से उसके पास जाना और यह गोल वाली डबल रोटी उसको देना क्योंकि वही तुम्हारी किस्मत है। वह यह डबल रोटी लेने से मना कर देगी और तुम्हारा अपमान भी करेगी। पर यह डबल रोटी तुम उसके लिये उसके पास ही छोड़ देना और वापस आ जाना।"

सो वह लड़की उस खच्चर वाले रास्ते पर चल दी और चलती रही जब तक वह भट्टी नहीं आ गयी।

वहाँ उसको एक बुढ़िया भी बैठी मिल गयी। उस बुढ़िया में से इतनी ज़्यादा बदबू आ रही थी कि वहाँ पहुँच कर उस लड़की का जी मिचलाने लगा।

पर फ्रैन्सिस्का की किस्मत की बात याद कर के वह उसके पास बड़ी नम्रता से गयी और उसको वह गोल डबल रोटी देते हुए बोली — "ओ मेरी प्यारी किस्मत, क्या तुम मेरी यह..."

पर उस लड़की की बात पूरी होने से पहले ही वह बुढ़िया बोली — "चली जाओ यहाँ से। तुमसे डबल रोटी किसने माँगी?" और वह उसकी तरफ से पीठ फेर कर बैठ गयी।

उस बदकिस्मत ने वह गोल डबल रोटी वहीं उसके पास रख दी और फ्रैन्सिस्का के पास लौट आयी।

अगला दिन सोमवार था – धुलाई का दिन। फ्रान्सिस्का ने कपड़े साबुन के पानी में डुबो कर रखे और फिर उनमें झाग उठाने लगी। बदकिस्मत उनको मलने लगी और धो कर सूखने के लिये डालने लगी।

जब वे सूख गये तो उसने उनकी मरम्मत की और उनको इस्तरी किया। फ्रान्सिस्का ने उनको एक टोकरी में रखा और उनको राजा के महल ले चली।

कपड़े देख कर राजा ने कहा — "फ्रान्सिस्का, अब तुम यह नहीं कहना कि तुमने इससे पहले भी कभी कपड़े इतनी अच्छी तरह से धोये थे और इस्तरी किये थे।" इस मेहनत के लिये उसने उस दिन भी उसको दस सोने के सिक्के और दिये।

अब क्या था फ्रान्सिस्का ने और आटा खरीदा और फिर से दो ॲगूठी की शक्ल वाली डबल रोटियॉ बनायीं और बदकिस्मत को उनको समुद्र के किनारे उन दोनों की किस्मत को देने के लिये भेज दिया।

अगली बार बदकिस्मत ने राजकुमार के कपड़े धोये। राजकुमार की शादी होने वाली थी सो उसको बहुत बढ़िया धुले और इस्तरी किये गये कपड़े चाहिये थे। इस काम के लिये उसने फ्रान्सिस्का को बीस सोने के सिक्के दिये थे।

इस बार फ्रान्सिस्का ने न केवल दो डबल रोटी का आटा खरीदा बल्कि बदकिस्मत की किस्मत के लिये एक बहुत सुन्दर सी पोशाक,

एक बहुत बढ़िया स्कर्ट, कुछ नाजुक से रूमाल, एक कंघा, बालों में लगाने वाला खुशबूदार तेल और कुछ और चीज़ें भी खरीदीं।

वह बदकिस्मत यह सब सामान ले कर उस भट्टी की तरफ चल दी और वहाँ जा कर गड्ढे के पास बैठी अपनी किस्मत बुढ़िया से बोली — "ओ मेरी प्यारी किस्मत, यह तुम्हारी गोल डबल रोटी है।"

वह किस्मत अब उस बदकिस्मत से ज़्यादा हिलती मिलती जा रही थी सो वह डबल रोटी लेने के लिये उसके पास तक आ गयी।

जैसे ही बदकिस्मत की किस्मत उसके पास आयी तो बदकिस्मत ने उसको पकड़ लिया। उसने उसको साबुन लगा कर नहलाया। फिर उसने उसके बाल बनाये और उसको उसके नये कपड़े पहनाये।

पहले तो वह बुढ़िया कुछ बल खायी पर फिर बाद में यह देख कर ठीक हो गयी कि वह तो एक बदला हुआ इन्सान हो गयी थी।

उसने कहा — "ओ बदकिस्मत, अब तुम मेरी बात सुनो। मेरे लिये तुम्हारी इन सब मेहरबानियों के लिये मैं तुमको यह एक छोटा सा बक्सा भेंट में दे रही हूँ।"

ऐसा कह कर उसने उसको एक दियासलाई की सींक रखने जैसा छोटा सा बक्सा दिया।

बदकिस्मत उस बक्से को ले कर तुरन्त ही फ्रान्सिस्का के पास भाग गयी। घर जा कर उसने वह बक्सा खोला तो देखा कि उसमें कपड़ों पर लगाने वाली बेल का एक टुकड़ा[57] रखा हुआ था।

फ्रान्सिस्का और बदकिस्मत दोनों ही उस छोटे से बेल के टुकड़े को देख कर बहुत निराश हुईं। उनके मुँह से निकला "क्या बेकार की चीज़ है।" और उसको आलमारी के एक खाने में नीचे की तरफ ठूँस दिया।

अगले हफ्ते जब फ्रान्सिस्का धुले हुए कपड़े ले कर महल गयी तो उसको राजकुमार काफी उदास लगा। क्योंकि वह राजकुमार को अच्छी तरह से जानती थी सो उसने उससे पूछ लिया — "राजकुमार, क्या बात है आप इतने उदास क्यों हैं?"

"क्या बात है? अरे, यहाँ मैं शादी के लिये बिल्कुल तैयार हूँ और हमें अभी पता चला हे कि मेरी दुलहिन की पोशाक में लगने वाली बेल का एक टुकड़ा नहीं मिल रहा है। और वैसी बेल का टुकड़ा हमारे सारे राज्य में कहीं नहीं मिल रहा है।"

"राजकुमार, ज़रा रुको।" कह कर फ्रान्सिस्का घर दौड़ गयी। घर जा कर तुरन्त ही उसने वह आलमारी खोली जिसमें उसने बदकिस्मत की किस्मत की दी हुई बेल का टुकड़ा रखा था।

[57] Translated for the word "Braid". Braid is a narrow, ropelike band formed by plaiting or weaving together several strands of silk, cotton, or other material, used for trimming garments, drapery. etc.

उसने बेल का वह टुकड़ा निकाला और दौड़ी हुई राजकुमार के पास वापस आयी। उन्होंने उस बेल के टुकड़े को दुलहिन की पोशाक की बेल से मिला कर देखा तो वह तो बिल्कुल ही उससे मेल खा रही थी।

राजकुमार खुशी से बोला — "ओह आज तुमने मुझे बचा लिया, फ्रान्सिस्का। मैं तुमको इस बेल की तौल के बराबर सोना देना चाहता हूँ।"

सो उसने एक तराजू[58] मँगवायी। उसके एक पलड़े में उसने वह बेल रखी और दूसरे पलड़े में सोना। पर उसने कितना भी सोना तराजू के पलड़े पर रखा वह उस बेल के वजन के बराबर नहीं हो सका। बेल का पलड़ा हमेशा भारी ही रहा।
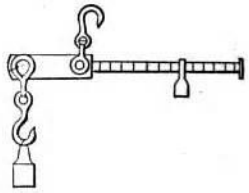
फिर उसने उस बेल का वजन एक दूसरी तरह की तराजू[59] से लेना चाहा पर उससे भी कुछ नहीं हुआ।

तो वह अपनी धोबिन से बोला — "फ्रान्सिस्का सच बोलना। इतना छोटा सा बेल का टुकड़ा इतना भारी कैसे हो सकता है? तुमको यह बेल का टुकड़ा कहाँ से मिला?"

---

[58] Scale. See its picture above.

[59] This type of scales is called Steelyard. See its picture above.

अब फ्रान्सिस्का के पास पूरी कहानी बताने के अलावा और कोई चारा नहीं था। कहानी सुनने के बाद राजकुमार ने उस बदकिस्मत से मिलने की इच्छा प्रगट की।

धोबिन ने उस बदकिस्मत के लिये कुछ अच्छे कपड़े और गहने इकट्ठे कर लिये थे सो वे उसने उसको पहनाये और उसको महल ले कर आयी।

क्योंकि वह एक राजा की बेटी थी और दरबार की रस्मों को बहुत अच्छी तरह जानती थी सो जब वह बदकिस्मत राजा के कमरे में घुसी तो उसने उसको शाही तरीके से झुक कर नमस्ते की।

राजकुमार ने उसका स्वागत किया और उसको बैठने के लिये एक सीट दी। फिर पूछा — "मगर तुम हो कौन?"

तब उस बदकिस्मत ने बताया — "मैं स्पेन के राजा की सबसे छोटी बेटी हूँ। मेरे पिता को लड़ाई में हरा कर उनकी गद्दी छीन ली गयी थी और उनको जेल में डाल दिया था।

मेरी बदकिस्मती ने मुझे घर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। दुनियाँ में मुझे बहुत अपमान मिला, बहुत मार मिली और बहुत बार मुझ पर इलजाम लगाये गये।"

और फिर उसने राजकुमार को सब बता दिया।

इसके बाद राजकुमार ने सबसे पहला काम तो यह किया कि उसने उन कपड़ा बुनने वालियों को बुलवाया जिनका कपड़ा और बेलें उस बदकिस्मत की किस्मत ने कटवाया था।

उसने उनसे पूछा — "तुम्हारा कितना नुकसान हुआ?"

उन्होंने कहा — "दो सौ सोने के क्राउन[60]।"

राजकुमार ने उनको दो सौ सोने के क्राउन दिये और कहा — "ये लो अपने दो सौ क्राउन। और एक बात यह जान लो कि वह बेचारी लड़की जिसको तुमने अपने घर से बाहर निकाल दिया था वह स्पेन के राजा की बेटी है। बस, अब तुम लोग जाओ।"

फिर उसने उन दूकान वालों को बुलवाया जिनकी दूकान में उस बदकिस्मत की किस्मत ने शराब बिखेरी थी। उसने उनसे भी पूछा — "तुम्हारा कितना नुकसान हुआ?"

उन्होंने कहा — "तीन सौ सोने के क्राउन।"

"यह लो अपने तीन सौ सोने के क्राउन। पर किसी राजा की बेटी को मारने से पहले दो बार सोच लेना। जाओ और मेरी ऑखों के सामने से दूर हो जाओ।"

फिर उसने अपनी होने वाली पत्नी को भी शादी करने से मना कर दिया और उस बदकिस्मत से शादी कर ली। उस बदकिस्मत को उसने उसकी इज़्ज़त के तौर पर फ्रान्सिस्का दे दी।

अब हम इस खुश जोड़े को यहीं छोड़ते हैं और बदकिस्मत की मॉ के पास चलते हैं।

[60] Crown was the currency of Europe in those days

जब रानी की सबसे छोटी बेटी घर छोड़ कर चली गयी तभी से उसकी किस्मत का पहिया उलटा घूमने लगा। इससे उसको ऐसा लगा कि वह बुढ़िया सच बोल रही थी।

एक दिन उसका भाई और भतीजा एक बड़ी सेना ले कर आये और उन्होंने अपनी बहिन के राज्य को फिर से जीत लिया। रानी और उसकी छहों बेटियॉ फिर से अपने महल में चली गयीं और फिर से अपने पुराने ऐशो आराम से रहने लगीं।

पर उनके दिमाग से उनकी सबसे छोटी बेटी और बहिन की याद नहीं गयी। उसके बारे में तो जबसे वह घर छोड़ कर गयी थी तबसे किसी ने अब तक कुछ सुना ही नहीं था।

इस बीच राजकुमार ने सुन लिया कि बदकिस्मत की मॉ अपने महल में वापस चली गयी है तो उसने बदकिस्मत की मॉ को यह सन्देश भेजा कि उसने उनकी बेटी से शादी कर ली है।

उसकी मॉ यह सुन कर बहुत खुश हुई और अपने कुछ नौकरों ओर दासियों को ले कर अपनी बेटी से मिलने के लिये चल दी। इसी तरह से बेटी भी अपने कुछ नौकरों और दासियों को ले कर अपनी मॉ से मिलने के लिये चल दी।

वे दोनों अपने अपने राज्यों की हदों पर मिलीं। वे सब खुशी के मारे एक दूसरे से बार बार लिपट जातीं थीं। बेटी के मिलने पर दोनों राज्यों में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

11 पिपीना सॉप[61]

एक बार इटली में एक अमीर व्यापारी रहता था जिसके पॉच बच्चे थे – चार बेटियॉ और एक बेटा। उसका बेटा सबसे बड़ा था। उसका नाम था बाल्डेलौन[62]।

व्यापारी की किस्मत ने पलटा खाया और वह अमीर से गरीब हो गया। अब वह केवल मॉग कर ही खा पी पाता था। उसकी यह हालत और भी खराब होने वाली थी क्योंकि उसकी पत्नी को छठा बच्चा होने वाला था।

बाल्डेलौन ने देखा कि उसका परिवार बड़ी कठिनाई के समय से गुजर रहा है सो उसने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। उसने सबको गुड बाई कहा और फ्रांस के लिये चल दिया।

वह एक पढ़ा लिखा नौजवान था सो जब वह पेरिस पहुॅचा तो उसको वहॉ के शाही महल में काम मिल गया और फिर वह वहॉ कैप्टेन बन गया।

घर में पत्नी ने पति से कहा — "अब बच्चा आने को है और हमारे पास बच्चे की कोई चीज़ नहीं है। हम अपनी आखिरी चीज़ अपनी खाने की मेज बेच देते हैं ताकि हम बच्चे की कुछ चीज़ें खरीद सकें।"

[61] Pippina the Serpent. Tale No 150. A folktale from Italy from its Palermo area.
[62] Baldellone – the name of the son of the merchant.

उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को बुलाया जो पुरानी चीज़ें खरीदते थे और उनमें से एक को उन्होंने अपनी खाने की मेज बेच दी। इस तरह से वह व्यापारी अपने आने वाले बच्चे के लिये वह सब सामान खरीद सका जो उस बच्चे के लिये जरूरी था।

जब समय आया तो उनके घर में एक बेटी पैदा हुई जो बहुत सुन्दर थी। उसको देख कर उसके माता और पिता खुशी से रो पड़े। उनके मुँह से निकला — "ओ हमारी प्यारी बेटी, हमको बहुत दुख है कि तुम हमारे घर में इतनी गरीबी में पैदा हुईं।"

उन्होंने अपनी उस बेटी का नाम पिपीना[63] रख दिया।

उनकी वह बेटी धीरे धीरे बड़ी होती गयी और जब वह पन्द्रह महीने की हो गयी तो वह अपने आप चलने लगी। जहाँ उसके माता पिता सोते थे वह वहीं भूसे में खेलती रहती थी।

एक बार जब वह वहाँ खेल रही थी तो वह अपना हाथ बढ़ा कर चिल्लायी — "माँ माँ, देखो तो।" उसकी माँ ने देखा तो उसके उस हाथ में सोने के सिक्के थे।

उसकी माँ को तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने उससे वे सिक्के लिये और अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने बच्ची की देख भाल करने के लिये एक आया बुलायी और बच्ची को उसके पास छोड़ कर वह बाजार दौड़ी गयी।

---

[63] Pippina – the name of the youngest child daughter

बाजार से उसने जी भर कर बहुत सारी चीज़ें खरीदीं और दोपहर तक उसने बहुत अच्छा खाना बना कर रखा। दोपहर को वे सब बहुत अच्छा खाना खाने बैठे।

उसके पिता ने पिपीना की पीठ थपथपाते हुए पूछा — "पिपीना बताओ तो तुमको ये चमकदार चीज़ें कहाँ से मिलीं?"

और उसने भूसे में एक छेद की तरफ इशारा करते हुए कहा — "यहाँ पिता जी। यहाँ तो सिक्कों से भरा एक पूरा बड़ा सा बर्तन रखा है। आपको केवल उसमें हाथ डाल कर बस उनको निकालना भर है।"

और इस तरह से वह परिवार एक बार फिर से अमीर हो गया और फिर से उसी तरीके से रहने लगा जैसे वह पहले रहता था।

जब वह बच्ची चार साल की हुई तो उसके पिता ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे लगता है कि अब हमको पिपीना के ऊपर जादू[64] करवा देना चाहिये। अब तो हमारे पास पैसा है तो हम पिपीना के ऊपर वह जादू क्यों न करवा दें?"

उन दिनों माता पिता अपने बच्चों के ऊपर जादू करवाने के लिये मौनरील[65] के आधे रास्ते तक जाते थे जहाँ चार परी बहिनें रहतीं थीं।

[64] Translated or the word "Charm". In this ceremony some fairies used to bless the child.

[65] Monreale – name of a place in Italy

सो वे लोग पिपीना को एक गाड़ी में बिठा कर वहाँ ले गये और वहाँ जा कर उन चारों बहिनों को उसको दिया। उन परियों ने उनको बताया कि क्या क्या तैयार करना है और उस व्यापारी के घर रविवार को उस रस्म को पूरा करने के लिये आने के लिये तैयार हो गयीं।

रविवार को ठीक समय पर चारों बहिनें पलेरमो[66] आयीं। वहाँ उनके लिये जैसा उन्होंने कहा था वह सब कुछ तैयार था। उन्होंने अपने हाथ धोये, मजोरकन के आटे की चार पाई[67] बनायीं और उनको बेक करने के लिये भेज दिया।

कुछ ही देर में बेक करने वाले की पत्नी को उन पाई की खुशबू आयी तो वह अपने आपको बिल्कुल भी नहीं रोक पायी और उसने उसमें से एक पाई निकाल कर खा ली।

फिर उसने उन बची हुई तीन पाइयों के जैसी एक दूसरी पाई बनायी। पर उसका आटा साधारण वाला आटा था और उसने उसको बनाने के लिये पानी वहाँ से लिया था जहाँ वह अपने ओवन साफ करने की झाड़ू धोती थी।

पर शक्ल में वह बिल्कुल दूसरी पाईयों जैसी ही थी और कोई उसको दूसरी तीन पाईयों से अलग नहीं कर सकता था।

[66] Palermo city is in Italy.

[67] Pie is a kind of filled white flour Roti with any kind of thing – fruit, vegetable, meat etc. See the picture of a pie above.

जब वे चारों पाई उस व्यापारी के घर आयीं तो पहली परी ने यह कहते हुए एक पाई काटी — “मैं तुम पर यह जादू करती हूँ ओ प्यारी बेटी कि तुम जब भी अपने बालों में कंघी करो तो उनमें से मोती और दूसरे जवाहरात गिरें।”

दूसरी परी ने दूसरी पाई काटी और कहा — “मैं तुम्हारे ऊपर यह जादू करती हूँ कि तुम जितनी सुन्दर अब हो दिनों दिन उससे भी ज़्यादा सुन्दर होती जाओ।”

अब तीसरी परी उठी और तीसरी पाई काटते हुए बोली — “मैं तुम्हारे ऊपर यह जादू करती हूँ कि वह हर बेमौसमी फल जिसकी तुम इच्छा करो वह तुमको तुरन्त ही मिल जाये।”

चौथी परी ओवन की बची हुई चीज़ें भरी हुई चौथी पाई काटते हुए अपना जादू उसके ऊपर बोलने ही वाली थी कि उस पाई का एक टुकड़ा उसमें से निकल कर उसकी ऑख में जा पड़ा।
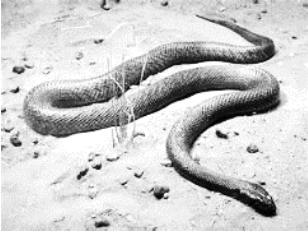
परी बोली — “ओह यह तो मेरी ऑख में लग गया। अब मैं तुम्हारे ऊपर यह बहुत बुरा जादू करती हूँ कि जब भी तुम सूरज को देखो तो उसके देखते ही तुम काला सॉप बन जाओ।”

यह सब जादू कर के वे चारों परियॉ वहीं गायब हो गयीं।

उस चौथी परी का जादू सुन कर पिपीना के माता पिता तो फूट फूट कर रो पड़े। उनकी प्यारी बेटी अब सूरज कभी नहीं देख पायेगी।

तो अभी हम पिपीना और उसके माता पिता को यहीं छोड़ते हैं और बाल्डेलौन की तरफ चलते हैं जो फ्रांस में अपने पिता की अमीरी की शान बघार रहा था। पर यह बात तो केवल वही जानता था कि उसका पिता कितना गरीब था।

वह अक्सर उनके बारे में बड़ी बड़ी बात करता रहता था और अपनी उन डींगों से उसने अपने आस पास के सब लोगों को प्रभावित कर रखा था – जैसी कि कहावत है – जो भी विदेश जाता है वह अपने आपको या तो काउन्ट कहता है या फिर ड्यूक कहता है और या फिर लौर्ड कहता है।[68]

फ्रांस का राजा यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि बाल्डेलौन के कहने में कितनी सच्चाई थी। सो उसने अपना एक स्क्वाइर[69] पलेरमो भेजा और उसको बता दिया कि उसको वहाँ जा कर क्या करना है और क्या देखना है।

फिर आ कर वह उसको बताये कि उसने क्या देखा।

वह आदमी पलेरमो गया और बाल्डेलौन के पिता के बारे में पूछा। लोगों ने उसको एक बहुत सुन्दर महल की तरफ भेज दिया। उस महल में तो उसने बहुत सारे चौकीदार देखे।

[68] Count, Duke or Lord – all are the titles for respectable people in European society, such as Prince William, the grandson of the Queen Elizabeth, has been given the title of Duke of Cambridge.
[69] Squire is a title applied to a Justice of the Peace or local judge or other local dignitory of a rural district or small town. He might be a personal assistant of a rank also.

वह उस महल के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उस महल की दीवारें तो सोने की हैं और अन्दर बहुत सारे नौकर चाकर घूम रहे हैं।

व्यापारी ने उस आदमी का शाही तरीके से स्वागत किया और उसको खाने के लिये खाने की मेज पर बुलाया। जब सूरज डूब गया तो वह पिपीना को भी वहाँ ले आया।

उस स्क्वायर ने जब पिपीना को देखा तो वह तो उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया। उसने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। वहाँ से सब बातें देख कर वह फ्रांस लौट गया और जा कर राजा को सब बताया।

राजा ने बाल्डेलौन को बुलाया और कहा — "बाल्डेलौन, तुम पलेरमो जाओ और अपने घर जाओ और अपनी बहिन पिपीना को मेरे पास ले कर आओ। मैं उससे शादी करना चाहता हूँ।

अब बाल्डेलौन को तो यह भी पता नहीं था कि उसकी इस नाम की कोई बहिन भी थी। पर वह राजा की बातों से कुछ कुछ भाँप सका कि क्या मामला हो सकता था। उसने राजा का हुक्म माना और पलेरमो चल दिया।

पेरिस[70] में बाल्डेलौन की एक लड़की दोस्त थी। वह उससे जिद करने लगी कि वह भी उसके साथ पलेरमो चलेगी।

[70] Paris is the capital of France country

जब बाल्डेलौन उस लड़की को साथ ले कर पलेरमो आया तो उसने देखा कि उसका परिवार तो बहुत अमीर हो चुका है। उसका परिवार उसको देख कर बहुत खुश हुआ। सबने मिल कर अपनी पुरानी बातें कीं।

वह अपनी नयी बहिन से मिला और अपने माता पिता को बताया कि फ्रांस का राजा उसकी उस बहिन से शादी करना चाहता था। यह सुन कर सब बहुत खुश हुए।

पर जब पेरिस से आयी लड़की ने पिपीना को देखा तो उसको उससे बहुत जलन हुई। उसको देख कर वह अब यह प्लान बनाने लगी कि उसकी जगह वह खुद रानी हो जाये।

कुछ दिनों में ही बाल्डेलौन को फ्रांस वापस लौटना था। सबने एक दूसरे को गुड बाई कहा और बाल्डेलौन फ्रांस वापस चला गया।

पेरिस पहुँचने के लिये पहले समुद्र से हो कर जाना होता है और फिर बाद में जमीन पर से। बाल्डेलौन ने पिपीना को जहाज़ में बन्द कर के रखा हुआ था और उसको सूरज की एक भी किरन नहीं देखने दी थी। उसकी वह लड़की दोस्त भी उस समय उसके साथ ही थी।

जब जहाज़ बन्दरगाह पर पहुँचता था तो बाल्डेलौन अपनी बहिन और दोस्त को एक बड़ी सी सीडान कुर्सी[71] में बिठा कर सूरज से बचा कर बाहर ले जाता था।

जैसे जैसे पैरिस पास आता जा रहा था बाल्डेलौन की दोस्त को गुस्सा आता जा रहा था क्योंकि पेरिस पहुँच कर तो पिपीना तो रानी बन जायेगी और वह केवल एक कैप्टेन की पत्नी ही रह जायेगी। वह ऐसा क्या करे कि पिपीना की बजाय वह रानी बन जाये।

इसका मतलब यह है कि उसको जो कुछ भी करना है वहाँ पहुँचने से पहले ही पहले करना है।

उसने पिपीना से कहना शुरू किया — "पिपीना, यहाँ कुछ गर्मी हो रही है हम यहाँ थोड़ा सा परदा खोल देते हैं।"

पिपीना बोली — "नहीं बहिन, इससे मुझे नुकसान पहुँचेगा। मेहरबानी कर के इसका परदा नहीं खोलना।"

कुछ देर बाद उस लड़की ने फिर कहा — "पिपीना, मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है।"

इस बार पिपीना कछ नाराजी से बोली — "नहीं, तुमको कोई गर्मी नहीं लग रही। चुप रहो।"

"पिपीना, मुझे बहुत घुटन हो रही है।"

"फिर भी तुमको मालूम है कि मैं यह परदा नहीं खोल सकती।"

---

[71] Sedan chair is like palanquin. See its picture above.

“सचमुच?” और उस लड़की ने एक छोटा सा चाकू निकाल लिया और उससे उस सीडान कुसी के ऊपर लगी चमड़े की छत फाड़ दी।

सूरज की एक किरन अन्दर आयी और पिपीना एक काले सॉप में बदल कर सड़क पर चली गयी और राजा के बगीचे की हैज[72] में जा कर छिप गयी।

बाल्डेलौन ने जब सीडान कुर्सी खाली देखी तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा — “मेरी बेचारी प्यारी बहिन। और बेचारा मैं। मैं राजा से जा कर क्या कहूॅगा जो उसकी आशा में ऑखें बिछाये बैठा है।”

उसकी दोस्त बोली — “तुम चिन्ता किस बात की कर रहे हो? राजा से कह देना कि मैं तुम्हारी बहिन हूॅ और सब ठीक हो जायेगा।” आखिर बाल्डेलौन को यही करना पड़ा।

जब राजा ने इस लड़की को देखा तो अपनी नाक सिकोड़ी और बोला — “क्या यही वह सुन्दरता है जो बेजोड़ है? पर राजा का वायदा तो राजा का वायदा होता है सो मुझे इससे शादी तो करनी ही पड़ेगी।”

राजा ने उससे शादी कर ली और वे दोनों साथ साथ रहने लगे।

---

[72] Hedge is the special wall of short dense plants which are planted to protect the house from others' sight, dust and other small animals. See its picture above.

उधर बाल्डेलौन बहुत परेशान था। एक तो उसको अपनी बहिन की कमी बहुत खल रही थी और दूसरे उसे धोखा देने वाली ने राजा से शादी करने के लिये उसको छोड़ दिया था।

नयी रानी यह अच्छी तरह जानती थी कि बाल्डेलौन उसको इन दोनों बातों के लिये छोड़ेगा नहीं। इसलिये वह अब ऐसा कुछ सोचने लगी जिससे वह इस बाल्डेलौन को अपने रास्ते से हटा सके।

एक दिन उसने राजा से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं है और उसको अंजीर खाने की इच्छा हो रही है। उस समय अंजीर का मौसम नहीं था सो राजा बोला — "तुम्हें साल के इस समय में अंजीर कहाँ मिलेंगी?"

"मुझे तो अंजीर चाहिये। बाल्डेलौन को बोलो वह ला कर देगा।"

राजा ने बाल्डेलौन को बुलाया — "बाल्डेलौन"

"जी योर मैजेस्टी।"

"रानी के लिये थोड़ी सी अंजीर ले कर आओ।"

"अंजीर और इस समय योर मैजेस्टी?"

राजा बोला — "चाहे उसका मौसम हो या न हो मुझे इससे कोई मतलब नहीं। जब मैंने तुमसे अंजीर लाने के लिये कहा है तो मुझे अंजीर चाहिये नहीं तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

दुखी और आँखें नीची किये बाल्डेलौन वहाँ से राजा के बागीचे में चला गया और वहाँ जा कर रोने लगा।

लो, वहॉ तो एक फूलों की क्यारी में से निकल कर एक काला सॉप उसके पास आ गया। उसने उससे पूछा — "क्या बात है क्यों रोते हो भैया?"

यह सुनते ही बाल्डेलौन बोला — "अरे बहिन तुम यहॉ इस रूप में?"

तब पिपीना ने उसको अपनी सारी कहानी बतायी कि किस तरह से उसके साथ वाली लड़की ने उस सीडान कुर्सी की छत का कपड़ा फाड़ दिया था और फिर वह किस तरह से सॉप बन गयी थी।

बाल्डेलौन बोला — "बहिन। अब मैं भी बहुत मुश्किल में पड़ गया हूॅ।" और उसने उसको राजा के हुक्म के बारे में बताया।

"ओह यह तो कोई सोचने की बात ही नहीं। मेरे पास एक खास ताकत है जिससे मैं बेमौसमी फल ला सकती हूॅ। तुमने कहा कि तुमको अंजीर चाहिये। ठीक है।" और देखते ही देखते वहॉ अंजीर की एक सुन्दर सी टोकरी प्रगट हो गयी।

बाल्डेलौन उस टोकरी को ले कर तुरन्त ही राजा के पास दौड़ा गया। रानी ने वे सब अंजीर खा लीं। और उसके लिये यह बड़े शर्म की बात थी कि उसने बाल्डेलौन को जहर नहीं दे दिया।

तीन दिन बाद रानी को खूबानी[73] खाने की इच्छा हुई तो उसने फिर बाल्डेलौन को बोला कि वह उसको खूबानी ला कर दे। बाल्डेलौन ने उसे फिर से बेमौसम की खूबानी ला कर दीं।

रानी की अगली इच्छा चैरी खाने की थी सो पिपीना ने अपने भाई को चैरी ला कर भी दे दीं। और फिर नाशपाती भी।

पर हम तुम लोगों को यह बताना तो भूल ही गये कि उस पिपीना के पास परियों का जादू केवल अंजीर, खूबानी और चैरी के लिये ही था नाशपाती के लिये नहीं। इसलिये वह उसको नाशपाती नहीं दे सकी।

बस अब क्या था जब बाल्डेलौन नाशपाती नहीं ला सका तो उसको मौत की सजा हो गयी। मरने से पहले जब बाल्डेलौन की आखिरी इच्छा पूछी गयी तो उसने एक ही इच्छा प्रगट की कि उसकी लाश शाही बागीचे में दफना दी जाये।

राजा बोला "ठीक है।"

बाल्डेलौन फॉसी पर लटका कर मार दिया गया और उसकी आखिरी इच्छा के अनुसार उसके शरीर को शाही बागीचे में दफना दिया गया। रानी ने चैन की सॉस ली।

[73] Fig, Apricot, Cherry and Pear. See their pictures above in this sequence.

एक रात शाही माली की पत्नी की ऑख खुली तो उसने शाही बागीचे से आती यह आवाज सुनी —

बाल्डेलौन ओ बाल्डेलौन तुम यहॉ ॲधेरे में दबे हो
जबकि तुम्हारी किस्मत लिखने वाली मेरे साथी के साथ रानी की तरह से खेल रही है

यह सुन कर पत्नी ने पति को जगाया तो वे दोनों दबे पॉव उठ कर बागीचे में गये तो उन्होंने देखा कि एक काला साया कैप्टेन की कब्र से खिसक कर दूर जा रहा था।

सुबह को जब रोज की तरह वह माली राजा के लिये फूलों का गुलदस्ता बनाने के लिये बागीचे में जा रहा था तो उसने देखा कि फूलों की क्यारियों में तो मोती और जवाहरात बिखरे पड़े हैं।

उसने वे मोती और जवाहरात उठा लिये और उनको राजा के पास ले गया तो राजा उनको देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

अगली रात माली ने अपनी बन्दूक उठायी और उसको ले कर पहरा देने लगा। आधी रात को एक साया फिर कैप्टेन की कब्र के पास मॅडराने लगा और गाने लगा —

बाल्डेलौन ओ बाल्डेलौन तुम यहॉ ॲधेरे में दबे हो
जबकि तुम्हारी किस्मत लिखने वाली मेरे साथी के साथ रानी की तरह से खेल रही है

माली ने अपनी बन्दूक सीधी की और निशाना साध कर उसको चलाने ही वाला था कि उस साये ने कहा — “अपनी बन्दूक नीचे

रख दो। मैं भी तुम्हारी तरह से बैपटाइज़्ड और कनफर्म्ड[74] हुई हूँ। मेरे पास आओ और ज़रा मुझे ध्यान से देखो।"

कहते हुए उस साये ने अपने चेहरे पर से परदा हटा दिया। माली ने देखा वह तो एक बेमिसाल सुन्दर लड़की थी।

फिर उस लड़की ने अपने बाल खोल दिये और उसके एक बाल से बहुत सारे मोती और जवाहरात गिर पड़े।

वह लड़की फिर बोली "यह सब जो अभी तुमने यहाँ देखा है जा कर राजा से कहना और साथ में यह भी कहना कि वह मुझसे मिलने के लिये यहाँ आये मैं उससे कल रात यहीं मिलूँगी।" यह कह कर वह साँप बन गयी और वहाँ से चली गयी।

अगली रात उस लड़की ने मुश्किल से बस यही कहा होगा –
बाल्डेलौन ओ मेरे प्यारे भाई....

कि राजा उसके पास आ गया। उस लड़की ने अपने चेहरे से परदा उठाया और आश्चर्य में पड़े उस राजा को अपनी आश्चर्य जनक कहानी सुनायी।

राजा ने पूछा — "तुम मुझे बताओ कि इस शाप से मैं तुमको छुटकारा कैसे दिलाऊँ?"

[74] Baptization and Confirmation are the Christian rites after birth to make the child join Christian society, as Hindu have Upanayan (Janeoo) Sanskaar

“तुम इसके लिये यह करो कि कल सुबह तुम एक हवा की तरह तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लो और उस पर सवार हो कर जोरडन नदी[75] जाओ। वहाँ उसके किनारे पर उतर जाना।

वहाँ तुमको चार परियाँ नहाती हुई मिलेंगी। उनमें से एक परी ने अपने बालों में हरा रिबन लगाया होगा, दूसरी ने लाल, तीसरी ने नीला और चौथी परी ने सफेद।

तुम उस नदी के किनारे रखे उनके कपड़े उठा लेना। वे तुमसे अपने कपड़े माँगेंगी पर तुम उनको उनके कपड़े मत देना।

इस पर पहली परी तुम्हारे ऊपर अपना हरा रिबन फेंकेगी, दूसरी परी अपना लाल रिबन फेंकेगी, तीसरी अपना नीला रिबन फेंकेगी और चौथी परी अपना सफेद रिबन फेंकेगी।

जब चौथी परी अपना सफेद रिबन और कुछ बाल तुम्हारे ऊपर फेंके तभी तुम उनके कपड़े वापस करना। वे बाल तुम यहाँ ले आना और उनसे मुझे सहला देना। तभी मेरे ऊपर पड़ा हुआ यह जादू टूट पायेगा।”

राजा को इससे ज़्यादा सुनने की जरूरत नहीं थी। बस अगली सुबह उसने अपना सबसे तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर अपना राज्य छोड़ कर जोरडन नदी की तरफ चल दिया।

[75] Jordan River

काफी चलने के बाद, तीस दिन और तीस रात, वह जोरडन नदी के किनारे पर आया। वहाँ उसको वे चार परियाँ नहाती मिल गयीं। फिर उसने वही किया जो बाल्डेलौन की बहिन ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने नहाती हुई परियों के कपड़े उठा लिये। जब परियों ने अपने कपड़े माँगे तो राजा ने उनके कपड़े नहीं दिये। इस पर उन परियों ने अपने अपने रिबन राजा पर फेंकने शुरू कर दिये।

जब उस चौथी परी ने उसके ऊपर अपना सफेद रिबन और कुछ बाल फेंक दिये तब वह बोला — "अभी तो मैं तुमको छोड़ कर जा रहा हूँ पर विश्वास रखो कि मैं तुम्हें इसकी कीमत जरूर चुकाऊँगा।"

अपने राज्य में आ कर वह अपने बागीचे की तरफ दौड़ा और उस साँप को आवाज लगायी। उसके आने पर उसने साँप को उन बालों से सहलाया।

उन बालों को छूते ही पिपीना फिर से दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की बन गयी। उसने वे बाल अपने बालों में लगा लिये और उसके बाद उसको फिर किसी का डर नहीं रहा।

राजा ने माली को बुलाया और उससे कहा — "अब तुम एक काम करो कि एक बड़ा सा पानी का जहाज़ लो और बाल्डेलौन की बहिन को रात में ही उसमें बिठा कर कहीं पास में ही चले जाओ।

फिर कुछ दिन बाद उस जहाज़ के ऊपर किसी दूसरे देश का झंडा लगा कर बन्दरगाह पर आ जाना। बाकी मैं सँभाल लूँगा।"

माली ने राजा का प्लान जैसा उसने उसको बताया था वैसे ही किया। तीन दिन बाद वह अपने जहाज़ पर अंग्रेजों का झंडा लगा कर बन्दरगाह पर ले आया।

राजा अपने महल से समुद्र देख सकता था सो जब उसने देखा कि एक विदेशी जहाज़ उसके बन्दरगाह पर आ कर लगा है तो उसने अपनी रानी से कहा — "यह कौन सा जहाज़ है? ज़रा देखो तो। लगता है कि मेरा कोई रिश्तेदार आया है। चलो उससे चल कर मिलते हैं।"

उसकी रानी जो हमेशा अपने आपको दिखाने के लिये तैयार रहती थी पलक झपकते ही जाने के लिये तैयार हो गयी। वहाँ जा कर वह उस जहाज़ पर गयी तो वहाँ तो उसने पिपीना को पाया।

उसने सोचा "जहाँ तक मुझे याद पड़ता है बाल्डेलौन की बहिन तो काला साँप बन गयी थी फिर यह यहाँ कहाँ से आ गयी। मुझे लगता है कि यह तो वही है।"

यही सोचते हुए वे दोनों उस नये आने वाले के साथ उसकी सुन्दरता की तारीफ करते हुए जहाज़ से नीचे आ गये।

राजा ने रानी से कहा — "ऐसी लड़की को जो कोई नुकसान पहुँचाये बताओ उसको क्या सजा देनी चाहिये?"

रानी बोली — "पर ऐसा कौन नीच हो सकता है जो ऐसी लड़की को नुकसान पहुँचायेगा?"

"सोचो कि अगर कोई है भी, तो उसको क्या सजा मिलनी चाहिये?"

रानी बोली — "उसको तो इस खिड़की से नीचे फेंक देना चहिये और फिर ज़िन्दा जला देना चाहिये।"

राजा तुरन्त बोला — "तुमने ठीक कहा। यही हम अब उसके साथ करने जा रहे हैं। यह लड़की बाल्डेलौन की बहिन है जिससे मैं शादी करने वाला था। और तुम इससे जलती थीं।

तुम इसके साथ आयीं और तुमने इसको साँप बनने पर मजबूर किया ताकि तुम इसकी जगह ले सको। अब तुम्हें मुझे धोखा देने का मजा चखना पड़ेगा। अच्छा हुआ कि तुमने अपनी सजा अपने आप ही सुना दी।"

फिर उसने अपने चौकीदारों को बुलाया और उनसे उसको खिड़की से बाहर फेंकने और फिर ज़िन्दा जलाने को कहा। जैसे ही राजा ने यह कहा चौकीदारों ने वह तुरन्त ही कर दिया।

उस झूठी को तुरन्त ही खिड़की को नीचे फेंक कर उसको महल के पास ही ज़िन्दा जला दिया गया। राजा ने बेकुसूर बाल्डेलौन को फाँसी की सजा देने के लिये उसकी बहिन से माफी माँगी।

पिपीना बोली — "जो हो गया सो हो गया उसे भूल जाओ। अब देखना यह है कि हम बागीचे में क्या कर सकते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में गये और बाल्डेलौन की कब्र का पत्थर उठाया। कब्र में बाल्डेलौन का शरीर अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था।

पिपीना ने एक छोटे से ब्रश से थोड़ा सा मरहम अपने भाई की गर्दन पर लगा दिया। मरहम के लगते ही वह फिर से सॉस लेने लगा। फिर वह हिलने लगा और फिर उसने अपनी ऑखें मलनी शुरू की जैसे वह किसी लम्बी नींद से जाग रहा हो। और फिर वह खड़ा हो गया।

सबने एक दूसरे को गले लगाया और राजा ने महल में खुशियॉ मनाने का हुक्म दिया। उन दोनों के माता पिता को भी बुला लिया गया। बड़े धूमधाम से पिपीना और राजा की शादी हो गयी।
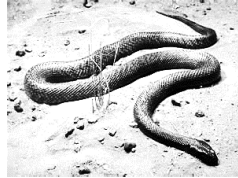
12 अक्लमन्द कैथरीन[76]

देवियों और सज्जनों, पलेरमो शहर में लोग एक कहानी कुछ इस तरह से सुनते सुनाते हैं कि एक समय की बात है कि पलेरमो शहर में एक बहुत ही अमीर दूकानदार रहता था। उसके एक बेटी थी जो जबसे वह छोटी सी थी तभी से वह बहुत चतुर थी। घर में हर विषय पर लोग उसकी बात सुनते थे और उसको मानते थे।

उसकी अक्लमन्दी को देखते हुए उसके पिता ने उसका नाम अक्लमन्द कैथरीन रख दिया था। जब उसकी सारी भाषाओं को सीखने की और सब तरह की किताबों को पढ़ने की बारी आयी तो उसने उनको भी बहुत जल्दी ही सीख लिया और पढ़ लिया और उनमें कोई उसका मुकाबला नहीं कर सका।

जब वह लड़की सोलह साल की हुई तो उसकी माँ चल बसी। इससे कैथरीन इतनी दुखी हुई कि उसने अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया और उसमें से बाहर निकलने को बिल्कुल मना कर दिया। वह वहीं अपना खाना खाती थी और वहीं सोती थी।

उसके दिमाग में बाहर घूमने की या कहीं थियेटर जाने की या फिर दिल बहलाने के किसी भी साधन की बात आती ही नहीं थी।

[76] Catherine the Wise. Tale No 151. A folktale from Italy from its Palermo area.

उसके पिता की ज़िन्दगी तो बस अपनी इसी एकलौती बच्ची के चारों तरफ ही घूमती थी सो वह उसके इस व्यवहार से बहुत दुखी हुआ।

वह सोचता रहा कि वह कैसे उसको पहले की तरह से हॅसता खेलता देखे। जब उसकी समझ में कुछ न आया तो उसने इस बारे में कुछ बड़े लोगों से सलाह लेने का विचार किया।

हालॉकि वह खुद केवल एक दूकानदार ही था फिर भी उसकी जान पहचान बहुत बड़े बड़े लोगों से थी इसलिये उसने शहर के बड़े बड़े लौर्ड लोगों को बुलाया।

उसने उनसे कहा — "भले लोगों, जैसा कि आप सबको पता है कि मेरी एक बेटी है जो मेरी ऑखों का तारा है। पर जबसे उसकी मॉ गयी है तबसे उसने अपने आपको एक बिल्ली की तरह अपने कमरे में बन्द कर रखा है और उसमें से बिल्कुल भी बाहर नहीं निकलती है। अब आप लोग ही मुझे कोई सलाह दें कि मैं क्या करूॅ।"

लोग बोले — "तुम्हारी बेटी तो अपनी अक्लमन्दी के लिये संसार भर में मशहूर है। तुम उसके लिये एक बड़ा सा स्कूल क्यों नहीं खोल देते ताकि वह उनको उनकी पढ़ाई में मदद कर सके। शायद इससे वह अपने दुख से बाहर निकल आये।"

पिता को यह विचार बहुत पसन्द आया। वह बोला — "यह तो अच्छा विचार है। मै ऐसा ही करूॅगा।"

यह सोच कर उसने अपनी बेटी के पास जा कर कहा — "सुनो बेटी, क्योंकि अब तुम कुछ और तो करती नहीं तो मैंने यह सोचा है कि मैं तुम्हारे लिये एक स्कूल खोल देता हूँ और तुम उसको चलाओ। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

इस बात से तो कैथरीन बहुत खुश हो गयी और उसने उस स्कूल के टीचरों की भी जिम्मेदारी खुद ही ले ली।

स्कूल जल्दी ही खुल गया। स्कूल के बाहर एक साइनबोर्ड लगा दिया गया – जो भी कोई यहाँ कैथरीन के पास पढ़ना चाहे मुफ्त पढ़ सकता है।

यह साइनबोर्ड देख कर बहुत सारे बच्चे – लड़के और लड़कियाँ दोनों ही कैथरीन के पास पढ़ने आने लगे। वह उनको बिना किसी भेदभाव के कुर्सी मेज पर बराबर बराबर बिठाने लगी।

जब उसने एक बच्चे को एक बच्चे के पास बिठाया तो वह बच्चा बोला — "पर यह लड़का तो एक कोयला बेचने वाले का है।"

तो कैथरीन बोली — "इससे क्या फर्क पड़ता है। कोयला बेचने वाले का लड़का एक राजा की लड़की के पास भी बैठ सकता है। जो पहले आयेगा उसको सीट पहले मिलेगी।" और कैथरीन का स्कूल शुरू हो गया।

कैथरीन के पास एक कोड़ा[77] था जिससे वह बच्चों को काबू में रखती थी। वैसे वह सबको एक सा पढ़ाती थी पर उन लोगों पर ज़्यादा ध्यान देती थी जो पढ़ाई में कमजोर होते थे।

अब इस स्कूल की खबर राजा के महल तक पहुँची तो राजकुमार ने भी इस स्कूल में पढ़ने की सोची। उसने अपने शाही कपड़े पहने और स्कूल आया। कैथरीन ने उसके लिये एक जगह ढूँढी और उसको उस खाली जगह में आ कर बैठ जाने के लिये कहा। राजकुमार वहाँ बैठ गया।

जब उस राजकुमार की बारी आयी तो कैथरीन ने उससे एक सवाल पूछा। राजकुमार को उस सवाल का जवाब आता नहीं था तो उसने राजकुमार को एक चाँटा मारा जिससे उसका गाल सूज गया।

राजकुमार गुस्से से लाल हो कर उठा और उठ कर महल चला गया। वह अपने पिता के पास पहुँचा और उनसे बोला —
"मैजेस्टी, मेरे ऊपर दया करें। मेरी शादी कर दीजिये और मुझे उस अक्लमन्द कैथरीन से ही शादी करनी है।"

[77] Translated for the word "Cat-nine-Tails" – means "The cat o' nine tails", commonly shortened to the cat, is a type of multi-tailed whip that originated as an implement for severe physical punishment, notably in the Royal Navy and Army of the United Kingdom, and also as a judicial punishment in Britain and some other countries. See its picture above.

राजा ने कैथरीन के पिता को बुला भेजा। कैथरीन का पिता तुरन्त ही राजा के पास गया और सिर झुका कर बोला — "योर मैजेस्टी, हुक्म।"

राजा बोला — "उठो। मेरे बेटे को तुम्हारी बेटी कैथरीन पसन्द आ गयी है तो अब हम क्या कर सकते हैं सिवाय इसके कि हम उन दोनों की शादी कर दें।"

"जैसी आपकी मर्जी मैजेस्टी। पर मैं तो केवल एक दूकानदार हूँ और राजकुमार तो शाही खून वाले हैं।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता जब मेरा बेटा खुद ही उससे शादी करना चाहता है तो।"

सो वह दूकानदार घर लौट आया और अपनी बेटी से कहा — "कैथरीन, राजकुमार तुमसे शादी करना चाहते हैं। तुम्हें इस बारे में क्या कहना है?"

"मुझे मंजूर है।"

किसी खास चीज़ की कोई जरूरत नहीं थी। एक हफ्ते में शादी की सब तैयारियाँ हो गयीं। राजकुमार ने कैथरीन की शादी के लिये बारह लड़कियाँ तैयार कीं। शाही चैपल[78] खोल दिया गया और दोनों की शादी हो गयी।

---

[78] A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.

शादी की रस्म के बाद रानी माँ ने उन बारह लड़कियों से कहा कि वे रात के सोने के लिये बहू के कपड़े उतार दें और उसको सोने के लिये तैयार कर दें।

पर राजकुमार ने अपनी माँ को मना करते हुए कहा — "किसी को उसके कपड़े उतारने या उसको कपड़े पहनाने की कोई जरूरत नहीं है और न ही उसके दरवाजे पर पहरा देने की कोई जरूरत है।"

जब राजकुमार कैथरीन के साथ अपने कमरे में अकेला रह गया तो उससे बोला — "कैथरीन, क्या तुम्हें याद है कि तुमने मुझे चाँटा मारा था? क्या तुम्हें उसके लिये कोई अफसोस है?"

"क्या? उसके लिये अफसोस? अगर तुम मुझसे पूछो तो मैं फिर ऐसा ही करूँगी।"

"अरे, क्या तुम्हें उसके लिये कोई अफसोस नहीं है?"

"नहीं, बिल्कुल भी नहीं।"

"और उसके लिये अफसोस करने का तुम्हारा कोई इरादा भी नहीं है?"

"उसके लिये कौन अफसोस करेगा?"

"तो यही तुम्हारा विचार है? कोई बात नहीं। अब मैं तुमको एक दो बात बताऊँगा।"

कह कर राजकुमार ने रस्सी का एक गोला खोलना शुरू किया। वह उस रस्सी के सहारे कैथरीन को एक चोर दरवाजे से नीचे उतारने वाला था।

जब उसने वह रस्सी खोल ली तो वह कैथरीन से एक बार फिर बोला — "या तो तुम अपना कुसूर मान लो कि तुम गलती पर थीं या फिर मैं तुम्हें इस गड्ढे में नीचे उतारता हूँ।"

कैथरीन बोली — "मैं इस गड्ढे में आराम से रहूँगी। तुम चिन्ता न करो।"

सो राजकुमार ने उसकी कमर में रस्सी बाँधी और उसको नीचे एक कमरे में उतार दिया जहाँ केवल एक मेज थी, एक कुर्सी थी, एक पानी का घड़ा था और थोड़ी सी डबल रोटी थी।

अगले दिन सुबह रीति रिवाज के अनुसार राजा और रानी नयी बहू के स्वागत के लिये वहाँ आये तो राजकुमार बोला — "आप लोग अभी अन्दर नहीं आ सकते क्योंकि कैथरीन की तबियत ठीक नहीं है।"

फिर वह उस चोर दरवाजे को खोलने गया और कैथरीन से पूछा — "तुम्हारी रात कैसी गुजरी?"

कैथरीन बोली — "बहुत सुन्दर और ताजगी भरी।"

राजकुमार ने फिर पूछा — "क्या तुम अभी भी अपने उस चाँटे के बारे में दोबारा सोच रही हो?"

“मैं तो उस चाँटे के बारे में सोच रही हूँ जो मुझे तुम्हें इसके बदले में देना चाहिये।”

दो दिन गुजर गये। अब भूख से कैथरीन का पेट ऐंठने लगा। उसको यह समझ ही नहीं आ रहा था कि अब उसको क्या करना चाहिये। पर फिर उसने अपने कपड़ों में से एक कील निकाली और उससे दीवार में छेद करना शुरू किया।

वह छेद करती रही, करती रही। चौबीस घंटे बाद उसको रोशनी की एक किरन दिखायी दी तब उसको थोड़ा चैन आया। उसने उस छेद को और बड़ा कर लिया और उसके बाहर झाँका तो उसे कौन दिखायी दिया? उसके पिता का मुनीम[79]।

उसने उसको आवाज दी “डौन टोमासो[80], डौन टोमासो।”

पहले तो डौन टोमासो यह समझ ही नहीं सका कि वह आवाज किसकी है और दीवार में से कहाँ से आ रही है। फिर उसने कैथरीन की आवाज पहचानी।

कैथरीन बोली — “डौन टोमासो, यह मैं हूँ अक्लमन्द कैथरीन। मेहरबानी कर के मेरे पिता से कहना कि मुझे उनसे अभी अभी बहुत जरूरी बात करनी है।”

कैथरीन की आवाज सुन कर डौन टोमासो तुरन्त ही कैथरीन के पिता के पास आया और उसको साथ ले कर उस दीवार के पास

[79] Translated for the word “Clerk”.

[80] Don Tomasso – the name of the clerk of Catherine’s father.

लौटा और उसको दीवार की वह छोटा सा छेद दिखाया जहाँ से उसने कैथरीन की आवाज सुनी थी।

कैथरीन बोली — "पिता जी, जैसी तकदीर होती है वैसा ही होता है। मैं यहाँ एक नीचे वाले कमरे में हूँ। आप हमारे महल से यहाँ तक एक सुरंग खुदवाइये जिसमें हर बीस फीट पर एक मेहराब[81] हो और एक रोशनी लगी हो। बाकी मैं देख लूँगी।"

दूकानदार ने ऐसा ही किया। इस बीच वह कैथरीन के लिये बराबर खाना लाता रहा – भुना हुआ मुर्गा और दूसरा ऐसा खाना जो उसको ताकत देता और उसे अपनी बेटी को उस छेद में से देता रहा।

उधर राजकुमार उस चोर दरवाजे से दिन में तीन बार उस गडढे में झाँकता और कैथरीन से पूछता — "कैथरीन, क्या तुमको अभी भी मुझे चाँटा मारने का अफसोस नहीं है?"

"अफसोस किस बात के लिये? तुम तो अब उस चाँटे के बारे में सोचो जो तुम्हें अब मिलने वाला है।"

कुछ दिनों में ही मजदूरों ने वह सुरंग तैयार कर दी जिसमें हर बीस फीट पर एक मेहराब थी और एक लालटेन थी। अब कैथरीन उस सुरंग से हो कर अपने पिता के घर पहुँच सकती थी।

---

[81] Translated for the word "Arch"

बहुत जल्दी ही राजकुमार कैथरीन को इस बात पर राजी करते करते थक गया कि वह अपना कुसूर मान ले सो एक दिन उसने वह चोर दरवाजा खोला और कैथरीन से कहा — "कैथरीन मैं नैपिल्स[82] जा रहा हूँ। तुमको मुझसे कुछ कहना है?"

"भगवान करे कि तुम्हारा समय अच्छा गुजरे और तुम वहाँ आनन्द से रहो। जब तुम नैपिल्स पहुँच जाओ तो मुझे लिखना।"

"तो मैं जाऊँ?"

कैथरीन ने पूछा — "अरे, तुम अभी भी यहीं हो? तुम गये नहीं?"

राजकुमार यह सुन कर चला गया।

जैसे ही उसने चोर दरवाजा बन्द किया कि कैथरीन अपने पिता के घर की तरफ दौड़ गयी और बोली — "पिता जी अब मेरी मदद कीजिये। मुझे एक दो मस्तूल वाली नाव ला कर दीजिये। उसमें एक सफाई करने वाला हो, कुछ नौकर हों कुछ बढ़िया पोशाकें हों और वह नाव नैपिल्स जाने के लिये तैयार हो।

नैपिल्स में मुझे वहाँ के महल के सामने एक घर किराये पर ले दें और फिर वहाँ मेरे आने का इन्तजार करें।"

दूकानदार ने अपनी बेटी के लिये तुरन्त ही एक नाव का इन्तजाम कर दिया। इस बीच राजकुमार भी अपने एक लड़ाई के जहाज़ पर नैपिल्स के लिये चल पड़ा।

[82] Naples is an important historical port city located on Italy's Western coast toards its Southern side.

कैथरीन ने अपने पिता के महल के छज्जे पर खड़े हो कर राजकुमार को उसके जहाज़ में जाते देखा। उसके जाने के बाद वह भी एक दूसरी दो मस्तूलों वाली नाव पर नैपिल्स की तरफ चल दी। वह राजकुमार से पहले नैपिल्स पहुँच गयी क्योंकि छोटे जहाज़ बड़े जहाज़ों से तेज़ जाते हैं।

अब नैपिल्स में कैथरीन रोज एक नयी पोशाक पहन कर अपने महल के छज्जे पर जा कर खड़ी हो जाती। उसकी हर दिन की पोशाक उसकी पहले दिन की पोशाक से ज़्यादा सुन्दर होती।

राजकुमार उसको रोज देखता और सोचता इस लड़की की शक्ल कैथरीन से कितनी मिलती है। उसको रोज देखते देखते वह उससे प्यार करने लगा सो उसने उसके पास अपना एक नौकर इस सन्देश के साथ भेजा कि अगर उसको कोई ऐतराज न हो तो वह उससे मिलने आना चाहता है।

कैथरीन ने जवाब में कहा कि "हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे बिल्कुल भी ऐतराज नहीं है। वह मुझसे मिलने जरूर आये।"

राजकुमार अपनी शाही शान से वहॉ आया और उससे बात करने बैठ गया। राजकुमार ने पूछा — "क्या तुम शादीशुदा हो?"

कैथरीन बोली — "नहीं। और तुम?"

"मैं भी नहीं। क्या तुमको ऐसा लग नहीं रहा कि मैं शादीशुदा नहीं हूँ? पर तुम्हारी शक्ल एक लड़की से मिलती है जो मुझे पलेरमो में अच्छी लगी थी। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी पत्नी बन जाओ।"

"खुशी से, राजकुमार।"

और एक हफ्ते बाद उन दोनों की शादी हो गयी। नौ महीने बाद कैथरीन ने एक बेटे को जन्म दिया जो देखने में बहुत सुन्दर था।

राजकुमार ने पूछा — "राजकुमारी, हम इसका नाम क्या रखें?"

कैथरीन बोली "नैपिल्स।" और उसका नाम नैपिल्स रख दिया गया।

दो साल बाद राजकुमार ने नैपिल्स से जाने का विचार किया। राजकुमारी का मन वहाँ से जाने का तो नहीं था पर राजकुमार ने तो अपना मन बना रखा था सो वह उसके इरादे को बदल नहीं सकी।

उसने कैथरीन के लिये अपने बेटे के लिये एक कागज लिखा कि यह उसका पहला बेटा था इसलिये उसके बाद वही राजा बनेगा और जिनोआ[83] के लिये रवाना हो गया।

जैसे ही राजकुमार वहाँ से गया कैथरीन ने अपने पिता को लिखा कि वह एक दो मस्तूल वाली नाव जिनोआ भेज दे जिसमें कुछ फर्नीचर हो, घर साफ करने वाले हों, नौकर हों और बाकी का सामान हो। वहाँ भी वह जिनोआ के महल के सामने एक घर किराये पर ले और उसके आने का इन्तजार करे।

कैथरीन के कहे अनुसार दूकानदार ने इस सब सामान से एक जहाज़ लादा और उसे जिनोआ भेज दिया। कैथरीन ने भी एक दो

[83] Genoa is another important known city of Italy.

मस्तूल वाली नाव ली और राजकुमार के जिनोआ पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच गयी। वहाँ जा कर वह अपने नये घर में ठहर गयी।

जब राजकुमार ने इस सुन्दरी को उसके शाही रहन सहन और उसके हीरे जवाहरात में देखा और उसकी सम्पत्ति देखी तो फिर सोचा — "इस लड़की की शक्ल कैथरीन से और मेरी नैपिल्स वाली पत्नी से कितनी मिलती जुलती है।"

सो उसने फिर से उसके पास अपना एक नौकर भेजा कि वह उससे मिलना चाहता था जिसके जवाब में कैथरीन ने भी कह दिया कि हाँ हाँ क्यों नहीं। वह उसको अपने घर में देख कर बहुत खुश होगी।

सो राजकुमार एक बार फिर कैथरीन के घर पहुँचा और उससे बातें करनी शुरू की।

राजकुमार ने पूछा — "क्या आप यहाँ अकेली रहती हैं?"

कैथरीन बोली — "हाँ मैं एक विधवा हूँ। और आप?"

"मैं भी एक विधुर[84] हूँ और मेरे एक बेटा है। वैसे आप एक लड़की की तरह दिखायी देती हैं जिसको मैं पलेरमो में जानता था और वैसी ही एक लड़की को मैं नैपिल्स में भी जानता हूँ।"

"क्या सचमुच? वैसे लोगों का कहना है कि हम सब इस संसार में सात जोड़े पैदा होते हैं।"

[84] Translated for the word "Widower" – means whose wife has died.

उसके बाद राजकुमार ने उससे भी शादी कर ली। नौ महीने बाद कैथरीन ने एक और बेटे को जन्म दिया। उसका यह बेटा उसके पहले बेटे से भी ज़्यादा सुन्दर था। राजकुमार उसको देख कर बहुत खुश था।

उसने राजकुमारी से पूछा — "राजकुमारी, हम इसका नाम क्या रखेंगे?"

"जिनोआ।" और उन्होंने उसका नाम जिनोआ रख दिया।

एक बार फिर से दो साल निकल गये तो वह राजकुमार फिर से बेचैन हो उठा। वह फिर वहाँ से जाना चाहता था।

राजकुमारी ने पूछा — "क्या तुम मुझे और मेरे बच्चे को इस तरह अकेला छोड़ कर जा रहे हो?"

राजकुमार ने उसको तसल्ली दी — "मैं तुम्हारे लिये एक कागज लिख कर जा रहा हूँ कि यह मेरा बेटा है और मेरा छोटा राजकुमार है।"

इस कागज को लिखने के बाद जब वह वेनिस[85] जाने के लिये तैयार हुआ तो कैथरीन ने फिर से अपने पिता को पलेरमो में लिखा कि वह उसके लिये फिर से वैसे ही एक दो मस्तूल वाली नाव सब सामान के साथ, नौकर चाकर, फर्नीचर, नये कपड़े आदि के साथ वेनिस भेजने का इन्तजाम कर दे।

---

[85] Venice is an important and very well-known city of Italy. It is called "The City of Canals" because it is full of canals.

वेनिस के महल के सामने एक घर किराये पर ले ले और वहाँ उसके आने का इन्तजार करे। सो उसके पिता ने एक जहाज़ भर कर सामान अपनी बेटी के लिये वेनिस भी भेज दिया।

कैथरीन ने भी फिर से एक या दो मस्तूल वाली नाव ली और वह राजकुमार से पहले ही वेनिस पहुँच कर अपने मकान में ठहर गयी।

राजकुमार ने जब कैथरीन को उसके घर के छज्जे पर देखा तो इस बार तो वह बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। उसके मुँह से निकला — "हे भगवान यह क्या? इसकी शक्ल तो मेरी जिनोआ वाली पत्नी से कितनी मिलती जुलती है जिसकी शक्ल मेरी नैपिल्स वाली पत्नी से मिलती थी और जिसकी शक्ल कैथरीन से मिलती थी। यह कैसे हो सकता है?"

कैथरीन तो पलेरमो में उस नीचे वाले कमरे में बन्द है। नपोली वाली नैपिल्स में है, जिनोआ वाली जिनोआ में है और यह यहाँ वेनिस में? यह सब क्या है?"

उसने फिर अपना एक नौकर उसके पास इस सन्देश के साथ भेजा कि क्या वह उससे मिलने आ सकता है। और फिर एक बार वह उससे मिलने जा पहुँचा।

वहाँ जा कर वह बोला — "क्या आप विश्वास करेंगी कि आप की शक्ल कई और लड़कियों से मिलती है जिनको मैं जानता हूँ –

एक पलेरमो में रहती है, दूसरी नैपिल्स में रहती है और तीसरी जिनोआ मे रहती है।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं आपका बिल्कुल विश्वास करूँगी। बात यह है कि हम ज़िन्दगी में सात जोड़े बन कर आते हैं।" और फिर वे अपनी सामान्य बातें करने लगे।

राजकुमार ने पूछा – "क्या आप शादीशुदा हैं?"

"मैं विधवा हूॅ। और आप?"

"मैं एक विधुर हूॅ और मेरे दो बेटे हैं।"

एक हफ्ते में फिर उन दोनों की शादी हो गयी। नौ महीने बाद कैथरीन ने एक बेटी को जन्म दिया जो चॉद सूरज की तरह चमकीली थी।

राजकुमार ने पूछा – "हम इसका नाम क्या रखेंगे राजकुमारी?"

कैथरीन बोली – "हम इसका नाम रखेंगे वेनिस।"

और उसका नाम वेनिस रख दिया गया।

दो साल फिर गुजर गये। राजकुमार बोला – "सुनो राजकुमारी, अब मुझे पलेरमो वापस जाना है। पर उससे पहले मैं एक कागज लिखना चाहता हॅू कि यह मेरी बेटी है और राजकुमारी है।"

यह सब कर के राजकुमार पलेरमो चला गया पर हर बार की तरह से इस बार भी कैथरीन वहॉ राजकुमार से पहले ही पहॅुच

गयी। वह पहले अपने पिता के घर गयी और फिर वहाँ से अपने उस कमरे में पहुँच गयी जहाँ राजकुमार उसको छोड़ कर गया था।

जैसे ही राजकुमार पलेरमो पहुँचा वह तुरन्त ही उस गड्ढे की तरफ गया जहाँ उसने कैथरीन को कैद कर रखा था। वहाँ जा कर उसने वह चोर दरवाजा खोला और नीचे झाँक कर बोला —
"कैथरीन, तुम कैसी हो?"

"ओह मैं? मैं बिल्कुल ठीक हूँ। तुम कैसे हो?"

"क्या तुम्हें मुझे वह चाँटा मारने पर अभी भी अफसोस नहीं है?"

"वह तो नहीं है पर तुमने क्या कभी उस चाँटे के बारे में भी सोचा है जो मैं अब तुम्हें दूँगी?"

जब भी राजकुमार उससे उस चाँटे की बात करता जो उसने उसको मारा था तो वह यही जवाब देती। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि इस जवाब से उसका क्या मतलब था।

"छोड़ो भी और यह मान लो कि तुम्हें उस चाँटा मारने पर अफसोस है नहीं तो मैं दूसरी शादी कर लूँगा।"

"हाँ हाँ कर लो, तुम्हें रोकता कौन है?"

"पर अगर तुम्हें उसके लिये अफसोस होगा तो मैं तुम्हें वापस अपनी पत्नी बना लूँगा।"

"नहीं। कभी नहीं। मुझे उसके लिये कोई अफसोस नहीं है।"

उसके बाद राजकुमार ने यह घोषित कर दिया कि उसकी पत्नी मर चुकी है और अब वह दोबारा शादी करना चाहता है। उसने सारे राजाओं को उनकी बेटियों की तस्वीरें भेजने के लिये लिखा।

तस्वीरें आयीं तो उसको इंगलैंड के राजा की बेटी की तस्वीर सबसे ज़्यादा अच्छी लगी। राजकुमार ने उस लड़की को और उसकी माँ को शादी के लिये बुलाया। अगला दिन शादी का दिन निश्चित हो गया।

इस बीच कैथरीन ने अपने तीनों बच्चों – नैपिल्स, जिनोआ और वेनिस के लिये, शाही पोशाकों का इन्तजाम किया। वह खुद भी रानी की तरह तैयार हुई और तीनों बच्चों को ले कर रस्मी गाड़ी में सवार हो कर महल की तरफ चल दी।

उधर से राजकुमार और इंगलैंड की राजकुमारी की बारात आ रही थी। कैथरीन ने अपने बच्चों से कहा — "नैपिल्स, जिनोआ और वेनिस, जाओ और जा कर अपने पिता का हाथ चूम लो।"

बच्चे यह सुन कर अपने पिता की ओर दौड़ गये और जा कर उन्होंने राजकुमार का हाथ चूम लिया। जैसे ही राजकुमार ने बच्चों को देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गया। उसको लगा कि उस लड़की ने उसको वाकई चाँटा मार दिया था।

पर यह वैसा चाँटा नहीं था जैसा कि वह सोच रहा था। यह तो एक खुशी का चाँटा था। वह हार मान बैठा और ज़ोर से चिल्लाया

— "अच्छा तो वह यह चॉटा था जो तुम मुझे मारने की बात कर रही थीं।" कह कर उसने अपने तीनों बच्चों को गले लगा लिया।

इंगलैंड की राजकुमारी की तो बोलती ही बन्द हो गयी। वह वहॉ से पलटी और वापस चली गयी।

तब कैथरीन ने अपने पति को सारी कहानी सुनायी और बताया कि उसको वे तीनों लड़कियॉ एक सी क्यों लगी थीं।

अब पछतावे की बारी राजकुमार की थी। उसने बार बार अपने उस बर्ताव का अफसोस किया जो उसने कैथरीन के साथ किया था। उसके बाद वे सब खुशी खुशी रहे।

13 इस्मेलियन सौदागर[86]

एक बार एक राजा अपने आदमियों के साथ शिकार खेलने गया तो कुछ ही देर में आसमान में बादल घिर आये और भारी बारिश होने लगी। बारिश से बचने के लिये लोग चारों तरफ भागने लगे।

उस बारिश में राजा रास्ता भूल गया। उसको एक अकेला मकान दिखायी दे गया तो वह उस मकान में शरण लेने के लिये उधर की तरफ चल पड़ा।

उस मकान में एक बूढ़ा रहता था। राजा ने उस बूढ़े से पूछा — "क्या आप मुझे रात भर के लिये यहाँ शरण देंगे?"

बूढ़ा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आइये मैजेस्टी, अन्दर आ जाइये और आग के पास बैठिये। थोड़ा गर्म होइये और अपने आपको सुखाइये।"

राजा ने अपने गीले कपड़े खूँटी पर टॉग दिये और वहॉ पड़े एक काउच पर लेट गया। कुछ ही देर में वह सो गया।

रात को किसी समय उसकी ऑख खुल गयी तो उसने उस बूढ़े को किसी से बात करते हुए सुना। उसने उस बूढ़े को घर भर में ढूँढा पर जब वह उसको घर में कहीं नहीं मिला तो वह दरवाजे की तरफ बढ़ा।

[86] Ismailian Merchant. Tale No 152. A folktale from Italy from its Palermo area.

उसने बाहर देखा तो आसमान तो साफ पड़ा था और आसमान में तारे चमक रहे थे। दरवाजे की सीढ़ियों पर वह बूढ़ा अकेला बैठा हुआ था।

राजा ने उससे पूछा — "ओ भले आदमी, तुम अभी अभी किस से बातें कर रहे थे?"

बूढ़ा बोला — "मैं ग्रहों[87] से बातें कर रहा था।"

राजा ने फिर पूछा — "ग्रहों से तुम क्या कह रहे थे?"

बूढ़ा बोला — "मैं उनको अपने लिये अच्छी किस्मत लाने के लिये धन्यवाद दे रहा था।"

"क्या अच्छी किस्मत?"

बूढ़ा बोला — "यही कि उन्होंने मेरे ऊपर कितनी मेहरबानी की है कि आज की रात उन्होंने मेरी पत्नी को एक बेटा दिया है। और आपके ऊपर भी कि उन्होंने आपकी पत्नी को एक बेटी दी है। जब मेरा बेटा बड़ा हो जायेगा तो वह आपकी बेटी से शादी कर लेगा।"

राजा को यह सुन कर गुस्सा आ गया क्योंकि यह तो वह सोच ही नहीं सकता था कि अगर आज की रात उसके कोई बेटी हुई भी है तो वह उसकी शादी इस गरीब बूढ़े के बेटे से कर देगा।

वह गुस्से में बोला — "ओ नीच जात। यह सब बेकार की बात मुझसे करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? तुमको इसकी सजा मिलेगी।"

[87] Translated for the word "Planets". Planets are the Sun, the Moon, Jupiter, Mercury etc.

सुबह होते ही उसने कपड़े पहने और अपने महल चला गया। रास्ते में उसको अपने नाइट्स[88] और नौकर मिले जो उसको ढूँढने के लिये निकले हुए थे। वे बोले — "योर मैजेस्टी, आपके लिये एक बहुत ही अच्छी खबर है। कल रात रानी जी ने एक बेटी को जन्म दिया है।"

राजा तुरन्त ही अपने महल की तरफ चल दिया। जैसे ही वह अपने घोड़े से उतरा तो उसके दरबारियों ने उसे घेर लिया और उसको बताया कि उसके बेटी हुई है। जब वह अन्दर पहुँचा तो आयाओं ने उसको उसकी बेटी दिखायी।

बच्ची को देखते ही उसने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी कि कल रात जितने भी लड़के पैदा हुए हों उनको ढूँढ ढूँढ कर मार दिया जाये। उसके सिपाही तुरन्त ही शहर में गये और एक घंटे में ही सारे शहर को छान मारा।

उनको केवल एक ही लड़का मिला जो कल रात पैदा हुआ था। उन्होंने उसको उसकी माँ से छीना और राजा के हुक्म से उसको जंगल ले गये।

वे दो सिपाही थे और जैसे ही उन्होंने उस बच्चे को मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो उनके दिल में दया आ गयी। उन्होंने

---

[88] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

सोचा कि "क्या हमको सचमुच में इस भोले भाले बच्चे को मारना चाहिये जो बेचारा अभी केवल एक दिन का ही है।

यहॉ यह कुत्ता है। हम इस कुत्ते को मार देते हैं और इसका खून उस बच्चे के कपड़ों पर लगा कर राजा के पास ले चलते हैं। और इस बच्चे को भगवान की दया पर यहीं छोड़े जाते हैं।"

उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने कुत्ते को मार कर उसका खून बच्चे के कपड़ों पर लगाया और उसके कपड़े राजा के पास ले गये और बच्चे को वही जंगल में पड़ा छोड़ दिया। बच्चा जंगल में पड़ा चिल्लाता रहा।

एक इस्मेलियन सौदागर जियूमैन्टो[89] वहॉ से अपना सामान बेचने के लिये उधर से गुजर रहा था कि उसने किसी बच्चे की रोने की आवाज सुनी। वह उधर गया तो उसको झाड़ियों में पड़ा एक बच्चा मिला। उसने उसको उठा लिया, चुप किया और घर ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया।

घर पहुॅच कर वह अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, आज मैं तुम्हारे लिये पहली बार कुछ ऐसी चीज़ ले कर आया हूॅ जो मैंने खरीदी नहीं है – एक छोटा सा बच्चा। यह मुझे जंगल में पड़ा मिला था। हमारे अपने बच्चे तो हैं नहीं पर भगवान ने हमें यह बच्चा दे दिया।"

[89] Giumento – the name of the Ismailian merchant

उन्होंने उस बच्चे को बहुत प्यार से बीस साल तक पाला पोसा। वह बच्चा भी तब तक यही सोचता रहा कि वह उस सौदागर का ही बेटा था।

उस बच्चे की बीसवीं सालगिरह पर उस सौदागर ने उससे कहा — "मेरे बेटे, अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ और अब तुम भी आदमी बन गये हो सो अब तुम मेरे हिसाब किताब और सामान को देखो भालो और तुम विदेश का हिसाब किताब सॅभालो।"

उस नौजवान ने अपने पिता की किताबें और बक्से आदि सॅभाले और अपने माता पिता के आशीर्वाद और नौकरों के साथ घर छोड़ कर चल दिया।

चलते चलते वह स्पेन आया तो वहॉ एक बहुत अमीर सौदागर के आने की खबर राजमहल तक पहॅुची। राजा ने उसको अपने महल में बुलवा भेजा और उसको अपने जवाहरात दिखाने के लिये कहा।

यह स्पेन का ही राजा था जिसने इस लड़के को मारने का हुक्म दिया था। इस नौजवान सौदागर के आने पर राजा ने अपनी बेटी को भी अन्दर से बुला भेजा। राजकुमारी भी अब बीस साल की सुन्दर लड़की हो गयी थी। राजा ने अपनी बेटी से कहा कि वह भी आ कर उस सौदागर के लाये जवाहरात देख ले अगर उसको कुछ पसन्द हो तो।

राजकुमारी ने जैसे ही उस नौजवान सौदागर को देखा तो वह तो उसके प्यार में खो गयी। राजा ने अपनी बेटी की तरफ देखा तो उसको खोया हुआ पाया तो उससे पूछा — "क्या बात है बेटी?"

"कुछ नहीं पिता जी।"

"क्या तुमको इन जवाहरातों में से कुछ चाहिये? बोलो अगर चाहिये तो।"

"नहीं पिता जी मुझे न तो कोई जवाहरात चाहिये और न ही कोई कीमती पत्थर। पर मुझे यह नौजवान चाहिये। मुझे इससे शादी करनी है।"

राजा ने सौदागर की तरफ देखा और उससे पूछा — "तुम कौन हो नौजवान?"

नौजवान सौदागर बोला — "मैं इस्मेलियन सौदागर जियूमैन्टो का बेटा हूँ। मैं व्यापार के लिये देश विदेश घूम रहा हूँ ताकि अपने पिता के बाद मैं उनका व्यापार सँभाल सकूँ।"

उस सौदागर की इतनी सारी सम्पत्ति देखते हुए राजा ने अपनी बेटी की शादी उससे करने का फैसला कर लिया। नौजवान शादी के लिये अपने माता पिता को लाने के लिये अपने घर लौटा।

घर आ कर उसने अपने माता पिता को स्पेन के राजा से मुलाकात और उसकी बेटी से शादी के बारे में बताया तो उसकी माँ तो यह सुन कर पीली पड़ गयी और उसने उसको डाँटना शुरू कर दिया।

वह बोली — "ओ मेरे उपकारों को भूल जाने वाले, तो क्या तुम मुझे छोड़ कर चले जाओगे? तुमको इस राजकुमारी के प्यार में पड़ कर घर छोड़ कर जाने की इतनी जल्दी है तो ठीक है जाओ और फिर इस घर में अपनी शक्ल मत दिखााना।"

लड़का बोला — "पर माँ मैंने तुम्हारे साथ क्या बुरा किया है?"

"मुझे माँ नहीं कहना। मैं तुम्हारी असली माँ नहीं हूँ।"

"अगर तुम मेरी असली माँ नहीं हो तो फिर मेरी असली माँ कौन है?"

"भगवान ही जानता है कि वह कौन है। हमने तो तुमको जंगल में पड़ा पाया था।" कह कर उसने उस लडके को सारी कहानी सुना दी जिसको सुन कर वह लड़का तो बस बेहोश होते होते ही बचा।

अपनी पत्नी के गुस्से को देख कर सौदागर अपने उस बेटे से कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा था। बहुत दुखी हो कर सौदागर ने उसे कुछ पैसे दिये और व्यापार करने के लिये कुछ सामान दिया और उसको जहाँ वह जाना चाहता था जाने दिया।

चलते चलते वह लड़का एक जंगल में आ निकला। वहाँ उसको रात हो गयी थी। वह जमीन पर गिर पड़ा और अपने हाथों से जमीन पीट पीट कर रोने लगा।

“मॉ मॉ, अब मेरे लिये इस दुनियॉ में क्या है। मैं बिल्कुल अकेला हूॅ। ओ मेरी मॉ की आत्मा, मेरी सहायता करो, मुझे रास्ता दिखाओ।”

तभी उसके पास फटे कपड़े पहने लम्बी दाढ़ी वाला एक बूढ़ा प्रगट हुआ। वह बोला — “क्या बात है मेरे बेटे, तुम क्यों रो रहे हो?”

लड़के ने उसे सब कुछ साफ साफ बता दिया और साथ में यह भी बताया कि वह अपनी होने वाली पत्नी के पास क्यों नहीं जा सकता था। क्योंकि अब उसको पता चल गया था कि वह इस्मेलियन सौदागर का असली बेटा नहीं था।

बूढ़े ने कहा — “तुम डरते क्यों हो बेटे? चलो स्पेन चलते हैं। मैं तुम्हारा पिता हूॅ और मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा।”

लड़के ने उस फटे कपड़े पहने बूढ़े की तरफ देखा और बोला — “तुम? क्या तुम मेरे पिता हो? तुम शायद सपना देख रहे हो।”

बूढ़ा बोला — “नहीं बेटे। मैं सपना बिल्कुल नहीं देख रहा। मैं तुमको सच बता रहा हूॅ और मैं तुमको विश्वास दिलाता हूॅ कि मैं ही तुम्हारा पिता हूॅ। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुमको तुम्हारी अमीरी वापस दिला सकता हूॅ नहीं तो तुम बर्बाद हो जाओगे।”

नौजवान ने उस बूढ़े की तरफ देखा और सोचा — "मुझे तो हर हाल में बर्बाद होना ही है तो क्यों न मैं इस बूढ़े के साथ जा कर ही बर्बाद होऊँ।"

सो उसने उस बूढ़े को अपने घोड़े पर बिठाया और उसको साथ ले कर स्पेन आया। वह स्पेन के राजा से मिलने गया तो राजा ने उससे पूछा — "तुम्हारे पिता कहाँ हैं?"

लड़के ने बूढ़े की तरफ इशारा करते हुए कहा — "ये हैं मेरे पिता।"

"यह आदमी तुम्हारा पिता? और तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मेरी बेटी का हाथ माँगने के लिये यहाँ मेरे पास आओ?"

बूढ़े ने बीच में राजा की बात काटी — "योर मैजेस्टी, मैं वही बूढ़ा हूँ जो जंगल में एक बारिश की रात जब आप मेरे घर में शरण लेने के लिये आये थे तो मैं ग्रहों से बात कर रहा था।

जिसने आपको अपने बेटे और आपकी बेटी के जन्म की खबर सुनायी थी और यह भी बताया था कि वे दोनों शादी कर लेंगे। यह लड़का और कोई नहीं मेरा ही बेटा है।"

यह सुन कर तो राजा और बहुत गुस्सा हो गया — "निकल जाओ यहाँ से, ओ बूढ़े। चौकीदार पकड़ लो इसको।"

यह सुन कर उसके चौकीदार उस बूढ़े को पकड़ने आये तो उसने अपने फटे कपड़े निकाल दिये। उसकी छाती पर बादशाह की सुनहरी पोशाक चमक उठी।

राजा और उसके चौकीदार दोनों घुटनों के बल बैठ कर चिल्लाये — "बादशाह आप? हमें माफ करें। मुझे मालूम नहीं था कि मैं किससे बात कर रहा था। यह मेरी बेटी है यह अब आपकी अमानत है।"

असल में बादशाह अपनी शाही ज़िन्दगी से थक चुका था इसलिये वह वेश बदल कर संसार भर में सितारों ओर ग्रहों से बात करता यात्रियों की तरह घूम रहा था।

सबने एक दूसरे को गले लगाया और चूमा और फिर शादी की तारीख तय की। इस्मेलियन सौदागर और उसकी पत्नी को भी स्पेन बुलवा लिया गया।

लड़के ने खुले दिल से उन दोनों का स्वागत किया — "माँ और पिता जी, आप ही मेरे असली माता और पिता हैं क्योंकि आपके घर से निकाले जाने पर ही मेरी ज़िन्दगी बन सकी। हालाँकि मैं एक राजकुमारी से शादी कर रहा हूँ पर फिर भी आप दोनों हमेशा मेरे साथ ही रहेंगे।" उन दोनों बूढ़ों की आँखों में खुशी के आँसू आ गये।

बादशाह के बेटे और राजा की बेटी दोनों की शादी हो गयी और शादी के बाद दोनों खुशी खुशी रहे।

14 चोर फाख्ता[90]

एक बार एक राजा और रानी की एक बेटी थी जिसके बहुत सुन्दर और लम्बे बाल थे जिनको वह किसी को छूने नहीं देती थी। वह खुद ही उनमें कंघी करती और खुद ही उनको सॅवारती थी।

एक दिन जब वह अपने बाल सॅवार रही थी तो उसने अपनी कंघी खिड़की पर रख दी।उसी समय एक फाख्ता[91] वहॉ आयी और उस कंघी को ले कर उड़ गयी।

"ओह मेरे भगवान। यह फाख्ता तो मेरी कंघी ही ले कर उड़ गयी।" जब तक वह कुछ करती तब तक तो वह फाख्ता वहॉ से काफी दूर जा चुकी थी।

अगली सुबह राजकुमारी फिर उसी खिड़की के पास बैठी अपने बाल संवार रही थी कि वही फाख्ता फिर से आयी और उसके बालों मे लगाने वाला क्लिप उठा कर ले गयी।

तीसरे दिन अभी उसने अपने बाल खोले भी नहीं थे और उसके कन्धे पर अभी कपड़ा पड़ा ही था कि वही फाख्ता फिर से आयी और उसका कपड़ा उठा कर ले गयी।

---

[90] The Thieving Dove. Tale No 153. A folktale from Italy from its Palermo area.

[91] Translated for the word "Dove". See its picture above.

इस बार राजकुमारी बहुत दुखी हुई। उसने अपनी रेशम की सीढ़ी नीचे गिरायी और उस सीढ़ी से उतर कर फाख्ता के पीछे भागी।

पर यह फाख्ता और दूसरी फाख्ताओं की तरह से उड़ नहीं गयी बल्कि अपने पीछे पीछे उसके आने का इन्तजार करती रही और जब वह पास आ जाती तो फिर थोड़ी दूर उड़ जाती। यह देख कर राजकुमारी उससे और ज़्यादा गुस्सा हो गयी।

पर इस तरह से थोड़ी थोड़ी दूर भगाते भगाते वह फाख्ता राजकुमारी को जंगल तक ले आयी। वहॉ जंगल में एक अकेला मकान खड़ा था। वह फाख्ता उस मकान में घुस गयी।

मकान का दरवाजा खुला हुआ था सो राजकुमारी को उस मकान में एक सुन्दर नौजवान बैठा दिखायी दे गया। राजकुमारी ने उससे पूछा — "क्या तुमने यहॉ किसी फाख्ता को मेरा कपड़ा लाते देखा है?"

नौजवान बोला — "हॉ देखा है। मैं ही वह फाख्ता हूॅ जो तुम्हारा कपड़ा ले कर उड़ गया।"

"तुम?"

"हॉ मैं।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"मेरे ऊपर परियों ने जादू डाल रखा है कि मैं आदमी के रूप में अपने इस घर के बाहर नहीं जा सकता जब तक कि तुम इस मकान

की खिड़की पर एक साल, एक महीने और एक दिन के लिये धूप में और तारों की रोशनी में उस पहाड़ की तरफ देखती हुई न बैठो जहाँ मैं फाख्ता के रूप में उड़ता रहूँगा।"

बिना किसी हिचक के राजकुमारी उसके मकान की खिड़की पर बैठ गयी। वह नौजवान वहाँ से फाख्ता बन कर उड़ गया और जा कर सामने वाले पहाड़ पर बैठ गया।

एक दिन गुजरा, दो दिन गुजरे, तीसरा दिन गुजरा। राजकुमारी वहीं पहाड़ की तरफ देखती बैठी रही। हफ्ते गुजर गये वह वहीं दिन रात बैठी रही। ऐसा लगता था जैसे कि वह लकड़ी की बनी हो।

धीरे धीरे वह साँवली पड़ती गयी और फिर इतनी काली पड़ गयी जितना कि अँधेरा। इस तरह वह वहाँ एक साल, एक महीना, और एक दिन बैठी रही। समय खत्म होने पर वह फाख्ता आदमी में बदल गयी और फिर वह आदमी पहाड़ पर से नीचे आ गया।

जब उस नौजवान ने देखा कि राजकुमारी कितनी काली हो गयी है तो वह चिल्लाया — "ओह यह तुम कैसी हो गयी? क्या तुमको अपनी इस शक्ल से मेरे सामने आते में शर्म नहीं आ रही? जाओ यहाँ से।" और यह कह कर उसने उसके ऊपर थूक दिया।

यह देख कर तो वह लड़की भौंचक्की रह गयी। यह क्या हो गया। उसने तो उसको उसके शाप से आजाद करने की कोशिश की और उसने उसके साथ ऐसा बर्ताव किया।

वह परेशान हो कर दुखी हो कर रोती हुई वहाँ से चली गयी। जाते समय वह एक जंगल से गुजर रही थी कि वहाँ उसको तीन परियाँ मिलीं।

परियों ने उससे पूछा — "क्या बात है तुम इतनी दुखी क्यों हो?"

रोते हुए उसने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी।

परियाँ बोलीं —"तुम चिन्ता न करो। तुम बहुत दिनों तक ऐसी नहीं रहोगी।"

पहली परी ने उसके गालों को सहलाया तो वह फिर से बहुत सुन्दर हो गयी। बल्कि पहले से भी ज़्यादा सुन्दर हो गयी। वह अब सूरज चाँद की तरह से चमकने लगी।

दूसरी परी ने उसको छुआ तो वह एक शाही पोशाक में सज गयी। तीसरी सबसे छोटी परी ने उसको एक टोकरी भर कर जवाहरात दिये।

यह कर के परियाँ बोलीं —"अब हम तीनों तुम्हारे साथ हमेशा तुम्हारी नौकरानी के वेश में रहेंगी।"

फिर वे सब उस देश में पहुँचीं जिस देश का वह नौजवान राजा था। पलक झपकते ही उन परियों ने उस राजा के महल के सामने एक महल खड़ा कर दिया जो उसके महल से कहीं ज़्यादा खूबसूरत था – सौ गुना ज़्यादा खूबसूरत।

राजा ने बाहर की तरफ देखा तो उसको वह आश्चर्यजनक महल दिखायी दिया तो उसको लगा कि वह तो सपना देख रहा था। इतना सुन्दर महल तो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसकी एक खिड़की पर उसको एक राजकुमारी बैठी नजर आयी। तो उसको देख कर तो वह उससे प्यार ही कर बैठा।

परियों ने कहा — "अगर वह तुमसे मिलना चाहे तो उसको मिलने के लिये उत्साहित करना।"

पहले दिन तो राजा उसको देखता रहा। दूसरे दिन उसने उसकी तरफ देख कर ऑखें झपकायीं और तीसरे दिन उसने उससे पूछा कि क्या वह उससे मिलने आ सकता था।

राजकुमारी ने जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, अगर आप मुझसे मिलने आना चाहते हैं तो पहले अपने छज्जे से मेरे छज्जे तक गुलाब के पंखुड़ियों का दो इंच मोटा कालीन बिछायें।"

राजा ने उसको अपनी शर्त पूरी तरह से कहने भी नहीं दी कि उसने अपने नौकरों को ऐसा एक कालीन बिछाने का हुक्म दे दिया जो गुलाब की पंखुड़ियों का बना हो और दो इंच मोटा हो।

बहुत सारी स्त्रियॉ गुलाब की पंखुड़ियॉ तोड़ने में लग गयीं। ऐसा तो पहले कभी किसी ने देखा नहीं था सुना नहीं था।

जब गुलाब की पंखुड़ियों का कालीन बिछ गया तो परियों ने राजकुमारी से कहा "अब तुम एक बहुत ही शानदार राजकुमारी की तरह से तैयार हो जाओ और इस कालीन पर चलो। जब तुम आधे

रास्ते पहुँच जाओ तो बस तुम राजा को यह दिखाना कि तुम्हारे पैर में एक काँटा चुभ गया है। बाकी हम देख लेंगे।"

सो राजकुमारी उस गुलाब की पंखुड़ियों से बने कालीन पर चली। वह गुलाबी रंग की पोशाक पहने थी। दूसरी तरफ राजा उसका बेसब्री से इन्तजार कर रहा था। राजकुमारी ने उसको कालीन पर पैर रखने से मना कर रखा था।

जब वह आधे रास्ते पहुँची तो चिल्लायी "अरे मैं मरी। मेरे पैर में तो काँटा चुभ गया।" और उसने बेहोश होने का बहाना किया।

यह देख कर परियों ने उसको पकड़ा और उसको वापस उसके महल ले चलीं। राजा उसकी सहायता के लिये जाना चाहता था पर राजकुमारी ने उसको उस कालीन पर चलने से मना कर रखा था इसलिये वह उसके कहने के अनुसार वहीं रुक गया।

अपने महल से उसको राजकुमारी के महल में डाक्टर आते जाते दिखायी दे रहे थे। आखीर में उसको एक पादरी[92] भी दिखायी दिया। बस केवल राजा को ही उसके पास जाने की इजाज़त नहीं थी बाकी तो बहुत सारे लोग उसके पास तक आ जा रहे थे।

उसने फिर उड़ती उड़ती खबर सुनी कि उस काँटे से राजकुमारी की टाँग इतनी सूज गयी कि उसकी तबियत बहुत खराब होती जा रही थी। चालीस दिन बाद उसने सुना कि राजकुमारी की बीमारी कुछ ठीक हो रही थी।

---

[92] Translated for the word "Priest"

जब यह बात बाहर फैली तो राजकुमार ने फिर से उससे मिलने की बात की। परियाँ फिर बोलीं — "उससे कहो कि तुम उससे मिलोगी पर इस बार उसको तीन इंच मोटा चमेली के फूलों की पंखुड़ियों का कालीन बिछवाना होगा। और जब तुम उस कालीन पर आधी दूर पहुँचो तो फिर से काँटा चुभने का बहाना करना।"

तुरन्त ही राजा ने अपने लोगों को चमेली के फूलों को तोड़ने पर लगा दिया। बहुत जल्दी ही उन फूलों की पंखुड़ियों का तीन इंच मोटा कालीन राजकुमारी के महल से राजा के महल तक बिछा दिया गया।

जब राजकुमारी उस कालीन पर जाने लगी तो आधी दूर जाने पर वह चिल्लायी "अरे मैं तो मर गयी। एक काँटा मेरे पैर में चुभ गया।" और वह चक्कर खा कर गिर पड़ी कि बीच में ही उसकी परियों ने उसको सँभाल लिया और वे उसको उसके महल वापस ले गयीं।

राजा बेचारा फिर बहुत परेशान हुआ। उसने अपने कई नौकर उसके पास भेजे पर उनमें से किसी को भी उससे मिलने नहीं दिया गया। और वह बेचारा राजकुमार दीवार से ही अपना सिर फोड़ता रह गया।

इस धक्के से वह खुद बीमार पड़ गया पर फिर भी वह अपने नौकर को राजकुमारी की तबियत का हाल जानने के लिये उसके महल में भेजता रहा।

जब उससे नहीं रहा गया तो खुद बीमार होते हुए भी उसने उससे मिलने की इजाज़त मॉगी क्योंकि वह उससे शादी करना चाहता था। राजकुमारी ने कहा — "अब मैं उसके पास तभी आऊॅगी जब मैं उसको ताबूत[93] में लेटा देखूॅगी।"

यह जवाब सुन कर तो राजा का दिमाग ही घूम गया पर फिर भी उसने एक ताबूत तैयार करवाया जिसके चारों तरफ मोमबत्तियॉ लगी हुई थीं। अपने आपको मरा हुआ दिखाते हुए वह उस ताबूत में लेट कर राजकुमारी की खिडकी के नीचे से निकला।

वहॉ पहुॅच कर उसके नौकरों ने कहा — "देखिये राजकुमारी जी, हमारे मरे हुए राजा को।"

राजकुमारी बाहर अपने छज्जे पर गयी और बोली — "उफ़, तुम इतना नीचे गिर गये हो? तुमने यह सब एक लड़की के लिये किया?" और यह कह कर उसके ऊपर थूक दिया।

यह सुन कर और यह देख कर उस राजा को याद आया कि उसने उस भली लड़की के साथ क्या किया था जो ॲधेरे की तरह काली थी।

पर उसको अब लग रहा था कि वह लड़की इस लड़की से कोई ज़्यादा अलग नहीं थी जिसको वह प्यार करता था। अचानक

[93] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

उसको लगा कि वह काली लड़की और यह राजकुमारी तो दोनों एक ही थीं।

तुम सोच सकते हो कि अब उसको कैसा लग रहा होगा। वह तो यह सोच कर ही झूठी लाश की बजाय सच्ची लाश जैसा हो गया।

पर उसी समय वे तीनों परियॉ वहॉ आ गयीं और उससे बोलीं कि उसकी राजकुमारी उसका इन्तजार कर रही थी। राजा उठ कर अन्दर गया और राजकुमारी से माफी मॉगी।

शाही चैपल खोला गया और उन दोनों की शादी हो गयी। राजा उन तीनों परियों को अपने पास रखने के लिये बहुत इच्छुक था पर उन्होंने उन दोनों को विदा कहा और वहॉ से चली गयीं। वह राजकुमार और राजकुमारी फिर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

15 मटर और बीन्स का व्यापारी[94]

यह बहुत दिन पुरानी बात है कि इटली के पलेरमो शहर[95] में डौन जिओवानी मिसिरान्ती[96] नाम का एक आदमी रहता था।

वह दोपहर को शाम के खाने के सपने देखता था और शाम को रात के खाने के सपने देखता था और रात को दोनों समय के खाने के सपने देखता था। यानी वह हर समय खाने के ही सपने देखता रहता था।

एक दिन जब भूख उसका पेट ऐंठ रही थी तो वह बाहर गया और बोला — "ओह मेरी भी क्या किस्मत है। तूने तो बस मुझे छोड़ ही रखा है।"

तभी चलते चलते उसको अपने सामने एक बीन का दाना पड़ा दिखायी दे गया। उसने उसको उठा लिया और सोचा कितनी सुन्दर बीन है। मैं इसको एक बर्तन में बो दूँगा। फिर इसमें से बीन का एक पौधा निकल आयेगा और फिर उसमें बहुत सारी सुन्दर फलियाँ लगेंगी।

उन फलियों को मैं सुखा लूँगा। उसमें से निकली बीन्स को मैं फिर एक बड़े से बर्तन में बो दूँगा। उसमें फिर और बहुत सारी फलियाँ आ जायेंगी।

---

[94] Dealer in Peas and Beans. Tale No 154. A folktale from Italy from its Palermo area.

[95] Palermo city is in Italy on its Sicily Island.

[96] Don Giovanni Misiranti – name of the trader

तीन साल के अन्दर अन्दर मेरा एक बहुत बड़ा बीन्स का बागीचा[97] हो जायेगा। और चौथे साल में तो मैं एक भंडारघर भी किराये पर ले लूँगा और मैं बीन्स का एक बहुत बड़ा व्यापारी बन जाऊँगा।

इस बीच वह चलता चलता सेन्ट ऐन्थोनी गेट[98] से आगे निकल गया। अब वहाँ तो बहुत सारे भंडारघर थे। उनमें से एक भंडारघर के सामने एक स्त्री बैठी हुई थी।

उसने उस स्त्री से पूछा — "मैम, क्या ये भंडारघर किराये पर देने के लिये हैं?"

"जी हाँ जनाब। किसको चाहिये?"

"मेरे मालिक को चाहिये। इस बारे में वह किससे बात करें?"

"ऊपर एक स्त्री रहती है उससे।"

डौन पहले तो कुछ देर सोचता रहा फिर वह अपने एक दोस्त से मिलने चल दिया। उसने अपने दोस्त से कहा — "सेन्ट जौन की खातिर[99] मेरे दोस्त तुम मुझको ना मत करना। तुम मुझे अपने एक जोड़ी कपड़े चौबीस घंटे के लिये उधार दे दो।"

"ओह नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। तुम यकीनन मेरे कपड़े उधार ले सकते हो।" कह कर उसने डौन को अपने एक जोड़ी कपड़े एक दिन के लिये उधार दे दिये।

---

[97] Bean farm. See the picture of a bean farm above

[98] St Anthony Gate

[99] For the sake of St John

डौन ने अपने दोस्त के कपड़े पहने – यहाँ तक कि उसके दस्ताने और घड़ी भी। फिर वह एक नाई के पास अपनी हजामत बनवाने गया।

वहाँ से फिर वह सेन्ट ऐन्थोनी गेट के पास आ गया। वह बीन अभी भी उसकी जेब में थी और वह उसको बार बार हाथ डाल कर देख लेता था कि वह वहाँ है कि नहीं।

वह स्त्री अभी भी वहीं बैठी हुई थी। उसने उससे कहा — "क्या वह स्त्री तुम ही हो जिससे मेरे नौकर ने भंडारघर के बारे में बात की थी?"

"जी हाँ जनाब। आप क्या उस स्त्री को देखने के लिये आये हैं जो ये भंडारघर किराये पर देती है? आप मेरे साथ साथ आइये मैं आपको अपने मालिक की पत्नी के पास ले चलती हूँ।"

डौन का दिल बहुत धड़क रहा था पर वह उस स्त्री के पीछे पीछे चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने खुद को भंडारघरों के मालिक की पत्नी को अपना परिचय दिया।

एक भले से आदमी को देख कर वह स्त्री उससे बहुत प्रभावित हुई। वह आदमी जो बहुत अच्छी तरीके से कपड़े पहने था – टोप, दस्ताने, सोने की घड़ी और सोने की जंजीर भी। वह उसको बहुत ही भला आदमी लगा।

उस स्त्री ने उसका बहुत अच्छे से स्वागत किया और फिर वे भंडारघर के बारे में बात करने बैठे।

उनकी बातचीत के बीच में एक नौजवान लड़की उस कमरे में घुसी तो डौन तो उसको देखता ही रह गया। उसने मालिक की पत्नी से पूछा कि क्या वह लड़की उसकी कोई रिश्तेदार थी?

मालिक की पत्नी ने जवाब दिया — "यह मेरी बेटी है।"

"अकेली है?"

"हॉ अभी तक तो अकेली ही है।"

"यह सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं भी अभी तक अकेला ही हूँ।

कुछ देर बाद डौन ने कहा — "भंडारघर के बारे में तो हम लोग तय कर ही चुके हैं अब हम इस बेटी के बारे में भी कुछ तय कर लें। वह लड़की क्या सोचती है?"

"देखेंगे।"

इतने में ही उस स्त्री का पति आ गया। डौन उठा और उसने उसको झुक कर नमस्ते की और बोला — "मैं एक जमींदार हूँ और मैं आपके तेरह भंडारघर अपनी मटर और बीन्स और बाकी की उपज को रखने के लिये किराये पर लेना चाहूँगा। इसके अलावा मैं आपकी बेटी का हाथ भी मॉगना चाहता हूँ।"

"आपका नाम क्या है?"

"मेरा नाम है डौन जिओवानी मिसिरान्ती है और मैं मटर और बीन्स का व्यापारी हूँ।"

“ठीक है डौन जिओवानी। मुझे सोचने के लिये चौबीस घंटे का समय दो फिर मैं तुम्हारी बात का जवाब दे पाऊँगा।”

“खुशी से।” कह कर डौन वहाँ से चला गया।

उस रात माँ अपनी बेटी को एक अलग जगह ले गयी और उसको डौन जिओवानी के बारे में बताया जो मटर और बीन्स दोनों का व्यापारी था। उसने अपनी बेटी से कहा कि वह उससे शादी करना चाहता है। वह लड़की तुरन्त तैयार हो गयी।

अगले दिन डौन जिओवानी फिर अपने दोस्त के घर गया और उससे उसकी एक दूसरी पोशाक उधार ली। पर पहला काम उसने यह किया कि वह बीन उसने उस पुरानी पोशाक में से निकाल कर अपनी नयी पोशाक में रखी।

सो दूसरी पोशाक पहन कर वह फिर से उन भंडारघरों के मालिक के घर गया। लड़की का जवाब हाँ में पा कर तो बस वह सातवें आसमान पर पहुँच गया था।

वह बोला — “तब मैं उससे जितनी जल्दी हो सकता है उतनी जल्दी शादी करना चाहूँगा। क्योंकि मेरे पास इतने काम हैं कि मेरे पास बहुत ज़्यादा समय नहीं है।”

लड़की के माता पिता ने जवाब दिया — “हाँ हाँ क्यों नहीं मिस्टर डौन जिओवानी। क्या आप इस समझौते के कागज पर एक हफ्ते में दस्तखत कर देंगे?”

उस सारे समय में डौन जिओवानी अपने दोस्त से रोज नये नये कपड़े उधार लेता रहा और रोज अलग अलग कपड़े पहन कर उनके घर जाता रहा ताकि उसके ससुराल वाले उसको एक अमीर आदमी समझते रहें।

फिर उन दोनों ने एक कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत किये जिसके अनुसार दो हजार सोने के क्राउन नकद, चादरें, और बिस्तर के दूसरे कपड़ों का दहेज तय हुआ।

इतना सारा पैसा हाथ में देख कर जिओवानी को लगा कि वह तो एक नया ही आदमी हो गया है। अब वह शादी की खरीदारी करने के लिये निकला।

उसने अपनी पत्नी के लिये कुछ भेंटें खरीदीं, अपने लिये कुछ कपड़े खरीदे और और भी कुछ खरीदारी की जो उसको अमीर दिखाने के लिये जरूरी थी।

कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत करने के एक हफ्ते के बाद उसने बहुत बढ़िया कपड़ों में शादी कर ली। पर बीन का वह दाना हमेशा उसकी जेब में ही रखा रहा।

नये शादीशुदा जोड़े ने दावतें कीं और डौन ने उनमें पैसा खूब दिल खोल कर खर्च किया जैसे कि वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। पर उसकी सास उसके इस तरीके से पैसा खर्च करने के ढंग से कुछ बेचैन हो उठी।

एक दिन उसने डौन से कहा — “तुम मेरी बेटी को अपने खेत दिखाने कब ले जा रहे हो डौन। अब तो फसल की कटाई का समय भी आ गया है।”

डौन को पहले तो कुछ अटपटा लगा और वह कोई सफाई नहीं दे सका। फिर उसने अपनी अच्छी किस्मत से कहा कि “ओ मेरी अच्छी किस्मत तुमको एक बार फिर मेरी सहायता करनी है।”

उसके पास अपनी पत्नी और सास के लिये एक सीडान कुर्सी[100] तैयार थी और फिर उसने उनसे कहा — “चलिये, अब चलने का समय आ गया। हम लोग मसीना[101] की तरफ चलेंगे। मैं आगे आगे घोड़े पर चलूँगा और आप लोग मेरे पीछे पीछे आना।”

सो डौन जिओवानी अपने घोड़े पर सवार हो कर आगे आगे चला और उसकी सास और पत्नी सीडान कुर्सी में बैठ कर उसके पीछे पीछे चलीं।

चलते चलते जब वह एक ऐसी जगह आया जहाँ उसको लगा कि वहाँ वह उनको अपने खेत दिखा सकता है वह वहाँ रुक गया।

उसने एक किसान को बुलाया उसको बारह क्राउन दिये और कहा कि यह तुम्हारे लिये हैं। जब तुम एक सीडान देखो जिसमें दो

[100] Sedan chair is like palanquin which is carried by two or sometimes four people
[101] Messina – a locality on Scicily Island of Italy. See its map above.

स्त्रियाँ बैठी हों और वे पूछें कि ये खेत किसके हैं तो उनसे कहना कि ये खेत डौन जिओवानी मिसिरान्ती के हैं जो मटर ओर बीन्स दोनों का व्यापारी है।

इतने में ही वह सीडान भी वहाँ आ गयी। उसमें बैठी स्त्रियों ने पूछा ये सुन्दर खेत किसके हैं। उस किसान ने जवाब दिया कि ये खेत डौन जिओवानी मिसिरान्ती के हैं जो मटर और बीन्स दोनों के व्यापारी हैं।

माँ और बेटी दोनों ही यह सुन कर बहुत खुश हुईं और आगे बढ़ीं। एक दूसरी जगह भी ऐसा ही हुआ। डौन जिओवानी इस तरह घोड़े पर आगे आगे चलता रहा और कुछ किसानों को बारह बारह काउन देता रहा और उनके खेतों को अपने खेत बताता रहा।

यह सब उसकी उस लकी बीन की करामात थी जो उसकी जेब में रखी हुई थी। जब वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से आगे कुछ और दिखाने को नहीं था तो उसने सोचा कि अब वह किसी सराय में पहुँच कर उन दोनों का इन्तजार करता है।

उसने चारों तरफ देखा तो उसको वहाँ पर एक बहुत बड़ा सा महल दिखायी दिया। उसकी खिड़की पर एक नौजवान लड़की हरे रंग की पोशाक पहने खड़ी थी।

उस लड़की ने इशारे से उसे अन्दर बुलाया। डौन जिओवानी चमकती हुई सीढ़ियों से ऊपर जाने में हिचकिचा रहा था कि कहीं

ऐसा न हो कि उस महल की वे सीढ़ियाँ उसके पैरों से गन्दी हो जायें।

कि इतने में वह लड़की नीचे आयी और उसको महल का सब कुछ दिखाते हुए बोली "क्या तुमको यह महल पसन्द आया?"

डौन जिओवानी हँस कर बोला — "अरे यह तुम क्या कह रही हो। क्या मैं इसको नापसन्द करूँगा? अरे इस महल में तो मैं लाश बन कर भी रहना पसन्द करूँगा।"

वह लड़की फिर बोली — "तो जाओ और जा कर इस महल को इधर उधर देखो। तुम दूसरी मंजिल तक जाओ और वहाँ भी इस महल को देखो।"

फिर उसने उसको सारे कमरे दिखाये। वहाँ तो सारे में रत्न ही रत्न लगे हुए थे, बढ़िया परदे लगे हुए थे और वहाँ की सारी चीज़ें ऐसी थी जैसी कि डौन जिओवानी ने कभी सपने में भी नहीं देखीं थीं। वह तो अब तक केवल खाने के ही सपने देखता रहा था।

"तुमने यह सब देखा? यह सब तुम्हारा है इसको ठीक से रखना। यह कौन्ट्रैक्ट है और यह मेरी तरफ से एक छोटी सी भेंट है। मैं ही तो वह बीन हूँ जिसको तुमने जमीन से उठा कर अपनी जेब में रख लिया था। तुम इसमें रह कर आनन्द करो और मैं अब चलती हूँ।"

डौन जिओवानी उसके पैरों पर गिरने ही वाला था और उससे कहने ही वाला था कि इस सबके लिये वह उसका कितना आभारी

था पर वह हरी पोशाक वाली लड़की तो उसके ऑखों के सामने सामने ही गायब हो गयी।

और वह और वह सुन्दर महल वहीं का वहीं खड़ा रह गया। और अब वह महल उसका था – डौन जिओवानी मिसिरान्ती का।

जब डौन की सास ने वह महल देखा तो बोली — "ओह मेरी बेटी, तुम्हारी किस्मत तो कितनी अच्छी है। ओह डौन जिओवानी, मेरे बेटे, मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारे पास इतना अच्छा महल है। और तुमने इसके बारे में कभी बताया भी तो नहीं।"

"आप ठीक कहती हैं मॉ जी। मैं तो आपको आश्चर्यचकित कर देना चाहता था।" फिर वह उनको उस महल को दिखाने के लिये ले गया हालॉकि वह तो खुद भी उसको पहली बार ही देख रहा था।

उसने उनको चारों तरफ लगे रत्न दिखाये, एक तहखाना दिखाया जो सोने और चॉदी से भरा हुआ था। उसके बीच में एक फावड़ा रखा हुआ था। फिर उन्होंने उसकी घुड़साल देखी जिसमें बहुत सारी गाड़ियॉ भी रखी हुई थीं और सबसे बाद में देखे उन्होंने अपने बहुत सारे नौकर चाकर।

उन्होंने उसके ससुर को लिखा कि वह अपना सब कुछ बेच दे और अब वहीं उसके पास आ कर ही रहे। डौन जिओवानी मिसिरान्ती ने कुछ इनाम उस औरत को भी भेजा जिसने उसको अपने मालिक की पत्नी से मिलवाया था।

16 खुजली वाला सुलतान[102]

एक बार एक मछियारा था। उसके एक ही बेटा था। वह जब भी अपने पिता को नाव ले जाते देखता तो हमेशा कहता — "पिता जी, मुझे भी अपने साथ मछली पकड़ने ले चलिये न।"

और वह मछियारा जवाब देता — "नहीं बेटा, तुम समुद्र में जाने के लिये अभी बहुत छोटे हो। वहाँ कोई तूफान आ सकता है या और कुछ भी हो सकता है। तुम थोड़े और बड़े हो जाओ तब चलना।"

और अगर मौसम ठीक और समुद्र शान्त होता तो वह कहता कि वहाँ शार्क आ सकती है। और अगर शार्क का मौसम नहीं होता तो वह कहता कि वहाँ नाव डूब सकती है, आदि आदि।

यह सब वह उससे नौ साल तक कहता रहा पर फिर वह यह बहाने और नहीं बना सका। एक दिन उसको अपने बेटे को खुले समुद्र में मछली पकडने के लिये ले कर जाना ही पड़ा।

जब वह समुद्र में पहुँचा तो उसने मछली पकड़ने के लिये अपना जाल डाल दिया और लड़के ने अपना मछली पकड़ने वाला काँटा डाल दिया।

[102] The Sultan With the Itch. Tale No 155. A folktale from Italy from its Palermo area.

जब मछियारे ने अपना जाल खींचा तो उसमें केवल एक बहुत छोटी सी मछली निकली पर जब उस लड़के ने अपना कॉटा खींचा तो उसमें एक बहुत बड़ी मछली निकली।

वह लड़का उस मछली को देख कर बहुत खुश हुआ और बोला कि वह उस मछली को राजा को दे कर आयेगा और उसको ले कर वह खुद वहॉ जायेगा।

अपना अपना शिकार ले कर वे दोनों घर चले गये। लड़के ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, पकड़ी हुई मछली समुद्री घास से ढकी हुई एक टोकरी में रखी और उसे ले कर वह राजा के पास चल दिया।

मछली का साइज देख कर तो राजा ने तो अपनी जीभ ही काट ली। उसने उस लड़के को अपने पास बुलाया — "यहॉ आओ बेटे।"

और फिर एक नौकर से कहा — "इस बच्चे को पचास काउन[103] दे दो।"

फिर उस बच्चे से पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है बेटे?"

"पिद्दूजू[104], सरकार।"

"क्या तुम यहॉ हमारे पास महल में रहना पसन्द करोगे?"

"जी सरकार।"

---

[103] Crown was the currency in those times in Europe.

[104] Pidduzzu

सो अपने पिता की मरजी से पिद्दूजू महल में ही रह गया और वहीं बड़ा होने लगा। वह अब बहुत बढ़िया सिल्क पहनता था और उसके बहुत सारे गुरू थे। वह पढ़ता लिखता था तो अब वह केवल पिद्दूजू नहीं रह गया था बल्कि अब उसका नाम हो गया था "नाइट डौन पिद्दूजू"[105]।

इसी समय राजा की बेटी भी महल में बड़ी हो रही थी। उसका नाम था पिपीना जो पिद्दूजू को अपनी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा चाहती थी। उसको पिद्दूजू बहुत अच्छा लगता था।

जब वह सत्रह साल की हुई तो एक राजा का लड़का शादी के लिये उसका हाथ माँगने आया। राजा को वह लड़का अच्छा लगा तो उसने अपनी बेटी से बहुत कहा कि वह उससे शादी कर ले।

पर पिपीना तो पिद्दूजू को प्यार करती थी सो उसने अपने पिता से कह दिया कि वह या तो पिद्दूजू से शादी करेगी और या फिर कभी शादी नहीं करेगी।

राजा ने तुरन्त ही पिद्दूजू को बुलाया और उससे कहा — "मेरी बेटी का दिमाग खराब हो गया है। वह केवल तुमसे शादी करना चाहती है। और यह हो नहीं सकता इसलिये अब तुमको यह महल छोड़ कर जाना पड़ेगा।"

"योर मैजेस्टी, क्या आप मुझे ऐसे ही भगा देंगे?"

---

[105] Knight Don Pidduzzu

राजा बोला — "यह करना मुझे अच्छा तो नहीं लग रहा है क्योंकि तुम मेरे बेटे के बराबर हो पर तुम चिन्ता न करो तुमको मेरी दया और मेहरबानी हमेशा मिलती रहेगी।"

सो डौन पिद्दूजू महल छोड़ कर दुनियाँ में चला गया और राजकुमारी को सेन्ट कैथरीन के कौनवैन्ट[106] भेज दिया गया।

डौन पिद्दूजू महल से निकल कर एक सराय में जा कर रुक गया। उसको उस सराय के कमरे की खिड़की से एक गली दिखायी देती थी जिसमें पिपीना के कौनवैन्ट की एक खिड़की खुलती थी।

एक बार वह उस खिड़की पर आयी और जैसे ही उसने उस खिड़की से बाहर झाँक कर देखा तो सामने ही उसको पिद्दूजू दिखायी दे गया तो दोनों एक दूसरे को इशारों और शब्दों से तसल्ली देने लगे।

पिपीना को अपने कमरे में एक जादू की किताब मिल गयी थी। यह किताब एक नन[107] की थी जो अब एक जादूगरनी बन गयी थी।

उसने उस किताब को अपनी खिड़की से पिपीना को दे दिया था और पिपीना ने वह किताब अब डौन पिद्दूजू को दे दी थी।

---

[106] St Catherine's Convent

[107] In Christianity, in its Catholic branch nuns are those girls and women who serve in convents and monasteries etc. Normally they do not marry lifelong and serve Jesus. They are bound by vows of poverty, chastity and obedience.

अगले दिन राजा अपनी बेटी से मिलने गया और मदर सुपीरियर[108] से उससे बात करने की इजाज़त चाही। क्योंकि वह राजा था इसलिये उसको तुरन्त ही यह इजाज़त मिल गयी।

पिपीना बोली — "पिता जी हमको यह मामला हमेशा के लिये तय कर के खत्म कर देना चाहिये। उस राजकुमार के पास जिससे आप मेरी शादी करना चाहते हैं तो पहले से ही एक जहाज़ है पर पिद्दूज़ू के पास कुछ भी नहीं है।

आप ऐसा करें कि आप उसको भी एक ऐसा ही जहाज़ दे दीजिये। और फिर दोनों समुद्री यात्रा पर निकलें – एक एक तरफ और दूसरा दूसरी तरफ। फिर जो कोई भी मेरे लिये ज़्यादा अच्छी भेंट ले कर आयेगा वही मेरा पति होगा।"

राजा को यह विचार पसन्द आया तो बोला — "यह विचार तो अच्छा है। ऐसा ही होगा।" और यह कह कर वह कौनवैन्ट से चला गया।

घर जा कर उसने दोनों उम्मीदवारों को बुलाया – राजकुमार को भी और पिद्दूज़ू को भी और उन दोनों को अपनी बेटी का प्लान समझाया।

दोनों नौजवान यह सुन कर बहुत खुश हुए। राजकुमार तो इसलिये खुश हुआ क्योंकि वह जानता था कि डौन पिद्दूज़ू के पास एक पेनी भी नहीं थी और डौन पिद्दूज़ू इसलिये खुश हुआ कि उस

---

108 Mother Superior is the Head of the community of nuns.

जादू की किताब से वह निश्चित रूप से राजकुमार से जीत जाने वाला था।

पिद्दूजू को एक जहाज़ दे दिया गया। उन दोनों ने अपना अपना जहाज़ सँभाला और अपनी अपनी यात्रा पर चल दिये। जब वे समुद्र में बाहर आ गये तो डौन पिद्दूजू ने अपनी जादू की किताब खोली। उसमें लिखा था –

"कल तुमको जो भी पहली जमीन मिले वहाँ जा कर अपने जहाज़ का लंगर डाल दो। फिर वहाँ अपने सब आदमियों के साथ एक क्रोबार[109] ले कर उतर जाओ।"

डौन पिद्दूजू ने ऐसा ही किया। अगले ही दिन उनको एक टापू दिखायी दे गया सो उन्होंने वहाँ जा कर अपने जहाज़ का लंगर डाल दिया और जहाज़ के सभी लोग एक एक क्रोबार ले कर वहाँ उतर गये।

जमीन पर उतर कर डौन पिद्दूजू ने फिर किताब खोली और आगे पढ़ा – "इस जगह के बिल्कुल बीच में तुमको एक चोर दरवाजा मिलेगा। फिर दूसरा और फिर तीसरा। तुम उस क्रोबार से सब दरवाजे खोल कर नीचे उतर जाओ।"

---

[109] Crowbar is a steel bar, usually flattened and slightly bent at one or both ends, used as a lever. See the picture

डौन पिद्दूज़ू ने वैसा ही किया। उसको टापू के बीच में एक चोर दरवाजा दिखायी दे गया। उसने अपनी क्रोबार की सहायता से उसके दरवाजे को ऊपर उठाया।

उसके नीचे उसका एक और दरवाजा था और उसके भी नीचे एक और दरवाजा था। आखिरी दरवाजा खोलने पर उसको एक सीढ़ी दिखायी दी। वह उस सीढ़ी से नीचे उतर गया।

नीचे जा कर वह एक गैलरी में पहुँच गया। वह गैलरी सारी की सारी सोने की बनी थी। उसके दरवाजे दीवारें छत सभी कुछ सोने का बना हुआ था।

वहीं चौबीस लोगों के लिये एक मेज लगी हुई थी। उस पर सोने की चम्मचें थी, सोने के नमक मिर्च रखने के बर्तन थे और सोने के ही मोमबत्ती रखने के स्टैन्ड थे।

डौन पिद्दूज़ू ने फिर किताब में पढ़ा – "उनको उठा लो।" सो उसने अपने आदमियों को उन सबको उठाने के लिये और उनको जहाज़ पर ले जाने के लिये कहा।

सब सामान जहाज़ पर लादने में उन सबको बारह दिन लग गये। वहाँ चौबीस सोने की मूर्तियाँ भी थीं। वे इतनी भारी थीं कि केवल उन्हीं को जहाज़ पर लादने में उनको दो तीन दिन लग गये।

डौन पिद्दूज़ू ने आगे पढ़ा – "चोर दरवाजों को उसी तरह छोड़ देना जैसा तुमने उनको पाया था और वापस चले जाओ।"

डौन पिट्टूज़ू ने वैसा ही किया। यह सब कर के उसके जहाज़ ने लंगर उठाया और वह टापू छोड़ दिया।

किताब में आगे लिखा था कि अपनी यात्रा जारी रखो। सो डौन पिट्टूज़ू ने अपनी यात्रा जारी रखी। वे लोग एक महीने तक चलते रहे।

अब नाविक चलते चलते थक गये थे सो उन्होंने डौन पिट्टूज़ू से पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं। डौन पिट्टूज़ू ने कहा कि वे थोड़ी दूर और चलें और फिर वे पलेरमो वापस जल्दी ही पहुँच जायेंगे।

डौन पिट्टूज़ू रोज वह किताब खोलता कि उसमें उसके लिये और आगे क्या लिखा था पर उसमें उसके आगे कुछ और लिखा ही नहीं था। आखिर एक दिन उसने देखा कि उस किताब में लिखा था – "कल तुमको एक टापू मिलेगा। तुम वहाँ उतर जाना।"

अगले दिन ऐसा ही हुआ। उनको एक टापू दिखायी दिया और वे सब उस टापू पर उतर गये।

जमीन पर पहुँच कर उसने फिर वह किताब खोली और उसमें उसने पढ़ा। उसमें लिखा था – "यहाँ तुमको बीच टापू में एक चोर दरवाजा मिलेगा। उसको उठा कर खोल लेना।

उसके बाद दो चोर दरवाजे और मिलेंगे। उनको भी खोल लेना। उसके बाद तुमको सीढ़ियाँ मिलेंगीं उनसे नीचे उतर जाना। फिर वहाँ जो कुछ भी है वह सब तुम्हारा है।"

इस बार वह दरवाजा खोलने पर डौन पिद्दूजू को एक गुफा मिली जिसमें सूअर का माँस और चीज़[110] लटकी हुई थी और बहुत सारे बर्तन दीवारों के सहारे सहारे लटके हुए थे।

डौन पिद्दूजू ने किताब में आगे पढ़ा – "यहाँ कुछ खाना नहीं। पर बाँये हाथ की तरफ लटका तीसरे नम्बर का बर्तन उठा लो। उस बर्तन में एक ऐसा मरहम है जो सारी बीमारियाँ ठीक कर देता है।"

सो डौन पिद्दूजू ने वह बर्तन उठा लिया और उसको जहाज़ पर ले आया। जहाज पर आने के बाद उसने फिर किताब खोली तो उसमें लिखा था "बस अब घर जाओ।" सब लोग खुशी से नाच उठे "ओह आखिर हम घर जा रहे हैं।"

पर जब वे घर जा रहे थे तो उनको केवल समुद्र और आसमान ही दिखायी दे रहा था और कुछ नहीं। अचानक उनको समुद्र में तुर्की के डाकुओं के जहाज़[111] दिखायी दिये।

दोनों में लड़ाई हुई और डौन पिद्दूजू के साथ साथ उसके जहाज़ के सारे लोग पकड़े गये और तुर्की ले जाये गये। वहाँ डौन पिद्दूजू और उसके जहाज़ के लोग तुर्की के सुलतान[112] के सामने पेश किये गये।

सुलतान ने दुभाषिये से पूछा — "ये लोग कहाँ से आये हैं?"

[110] Cheese is a processed milk product most eaten in Western countries.
[111] Pirate ships of Turkey
[112] King of Turkey

वह बोला — "सिसिली से।"

सुलतान के मुँह से निकला — "अल्लाह हमारे ऊपर मेहरबान रहे। इनको जंजीरों से जकड़ दो। खाने के लिये इनको केवल रोटी और पानी दो। और मेहनत करने के लिये इनको भारी भारी पत्थर उठाने दो।"

इस तरह डौन पिद्दूजू और उसके लोग यह मुश्किल ज़िन्दगी गुजारने लगे। डौन पिद्दूजू तो बस अपनी राजकुमारी के बारे में ही सोचता रहा कि वह बेचारी उसका उसके लिये भेंट लाने का इन्तजार कर रही होगी।

अब हुआ यह कि इस सुलतान के सारे शरीर में खुजली की बीमारी थी। अब तक कोई भी डाक्टर उसका इलाज नहीं कर पाया था।

जैसे ही डौन पिद्दूजू ने दूसरे कैदियों से यह सुना तो वह जेल के चौकीदारों से बोला कि अगर सुलतान उसको और उसके आदमियों को छोड़ देगा तो वह उसकी बीमारी ठीक करने को तैयार है।

जेल के चौकीदारों ने जब यह सुलतान को बताया तो उसने डौन पिद्दूजू को तुरन्त ही बुला लिया और उससे कहा — "अगर तुम मेरी खुजली ठीक कर दोगे तो तुम जो माँगोगे तुमको वही मिलेगा।"

पर यह जबानी वायदा डौन पिद्दूज़ू के लिये काफी नहीं था। उसने ज़ोर दिया कि यह बात उसको लिख कर दी जाये और उसके बाद उसको अपने जहाज पर वापस जाने दिया जाये।

सुलतान तैयार हो गया। उसने उसको लिख कर भी दे दिया और जहाज़ पर वापस जाने की इजाज़त भी दे दी। जहाज़ किनारे पर लग चुका था और उसमें न तो कुछ छुआ गया था और न ही उसमें से कुछ चुराया गया था। सब कुछ वैसा का वैसा ही रखा था।

डौन पिद्दूज़ू ने मरहम के उस बर्तन में से एक शीशी भरी और सुलतान के पास गया। डौन पिद्दूज़ू ने उसको लिटाया और फिर एक ब्रश से उसके सिर, चेहरे और गरदन पर वह मरहम लगा दिया।

रात होने से पहले ही सुलतान की खाल ऐसे निकलने लगी जैसे कोई सॉप अपनी केंचुली छोड़ता है। उस पुरानी खाल के नीचे उसकी गुलाबी नयी चिकनी खाल निकल आयी।

अगले दिन डौन पिद्दूज़ू ने उस मरहम को सुलतान की छाती, पेट और पीठ पर भी लगा दिया और सुलतान पूरी तरह से ठीक हो गया।

सुलतान ठीक हो कर बहुत खुश हुआ और उसने अपने वायदे के अनुसार डौन पिद्दूज़ू को उसके जहाज़ के लोगों के साथ उसके देश वापस भेज दिया।

डौन पिद्दूजू पलेरमो उतरा और एक गाड़ी ले कर पिपीना के पास भागा। पिपीना तो उसको देख कर बहुत खुश हो गयी।

राजा ने उससे उसके हाल चाल पूछे। डौन पिद्दूजू ने कहा — "भगवान जानता है मैजेस्टी। पर अब मुझे एक बहुत बड़ी गैलरी की जरूरत है जहाँ मैं अपनी लायी चीज़ें आपको दिखा सकूँ।

हालाँकि वे चीज़ें बहुत छोटी हैं पर फिर भी जब वे मेरे पास हैं तो मैं आपको उनको दिखाना पसन्द करूँगा।"

फिर उसने अपने लोगों को कहा कि वे जहाज़ में से सब सामान निकाल कर ले आयें। उनको जहाज़ खाली करने में एक महीना लग गया जबकि उन्होंने केवल जहाज़ ही खाली किया था और कुछ नहीं किया।

जब सब कुछ अपनी जगह पर लग गया तो डौन पिद्दूजू ने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी। मैं कल अपनी लायी चीज़ें दिखाने के लिये तैयार हूँ। इस बीच अगर आप चाहें तो राजकुमार की चीज़ें पहले देख सकते हैं उसके बाद मेरी लायी हुई चीज़ें देख लीजियेगा।"

सो अगले दिन राजा राजकुमार की लायी चीज़ें देखने गया। वह कुछ छोटी छोटी चीज़ें लाया था पर उनमें ऐसा कुछ भी नहीं था जो तारीफ करने लायक हो फिर भी राजा ने उसकी लायी उन चीज़ों की बहुत तारीफ की।

उसके बाद दोनों डौन पिद्दूजू का सामान देखने के लिये आये। उसके सब सामान को देख कर तो राजकुमार की साँस ही रुक गयी और उसको चक्कर आ गया। वह सीढ़ियाँ चढ़ कर अपने जहाज़ पर चढ़ कर अपने देश चला गया और फिर कभी दिखायी नही दिया।

भीड़ चिल्लायी — "डौन पिद्दूजू ज़िन्दाबाद। डौन पिद्दूजू ज़िन्दाबाद।" राजा ने उसे गले लगाया और दोनों एक साथ पिपीना को लाने के लिये सेन्ट कैथरीन कौनवैन्ट चले।

तीन दिन बाद दोनों की शादी हो गयी।

डौन पिद्दूजू ने अपने माता पिता को भी बुलाया। जबसे वह महल में रहने आया था तबसे उसको उनकी कोई खबर ही नहीं थी।

वे बेचारे अभी भी नंगे पैर ही रह रहे थे। उनको उसने इस तरीके से तैयार किया जैसे किसी राजकुमार के माता पिता को होना चाहिये। उसके बाद से उसके माता पिता भी उसके साथ ही महल में ही रहने लगे।

List of Stories of “Folktales of Italy-1”

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of “Folktales of Italy-2”

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

18. The King of Animals
19. Dear As Salt
20. The Queen of the Three Mountains of Gold

List of Stories of “Folktales of Italy-3”

1. The Dragon With Seven Heads
2. The Sleeping Queen
3. The Son of the Merchant from Milan
4. Salmanna Grapes
5. Enchanted Castle
6. The Old Woman's Hide
7. Olive
8. Catherine Sly Country Lass
9. The Daughter of the Sun
10. The Golden Ball
11. The Milkmaid Queen

List of Stories of “Folktales of Italy-4”

1. The North Wind's Gifts
2. The Sorceror's Head
3. Apple Girl
4. The Palace of the Doomed Queen
5. Fourteen
6. Crystal Rooster
7. A Boat For Land and Water
8. Louse Hide
9. The Love of the Three Pomegranates
10. The Mangy One
11. Three Blind Queens
12. One Eye
13. False Grandmother
14. Shining Fish
15. Miss North Wind and Mr Zephir
16. The Palace Mouse and the Field Mouse
17. Crack, Crook and Hook
18. First Sword and the Last Broom
19. Mrs Fox and Mr Wolf
20. The Five Scapegraces
21. The Tale of the Cats
22. Chick

List of Stories of “Folktales of Italy-5”

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of “Folktales of Italy-6”

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of “Folktales of Italy-7”

1. The Peacock Feather
2. The Garden Witch
3. The Mouse With the Long Tail
4. The Two Cousins
5. The Two Muleteers
6. Giovannuza Fox
7. The Child Who Fed the Crucifix
8. Steward Truth
9. The Foppish King
10. The Princess With Horns
11. Giufa
12. Fra Ignazio
13. Solomon's Advice
14. The Man Who Robbed the Robbers
15. The Lion's Grass
16. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
17. St Anthony's Gift
18. March and the Shepherd
19. John Balento
20. Jump into My Sack

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षो तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022